

1962

1962

1962

1962

1962

1962



सो --- धाते ले
 भोजो पदमा
 हा पां र न ग तो भजत गता को
 इ ध्या से धा को भजती को भजत ना
 इ लगी न्नि न्नि ड ह छे न

मयन को
 भजे पाल सा डरि को दुइ
 सो भा डर को वो
 मा मसा १२
 भजे पाल ३
 धु ३ ३
 मेरु मेरु ३
 नीलो लो १॥
 वो लो ३

ना ल
 १३५३

वा लो लो लो लो
 उफ लो ॥ मा डी न
 र र व
 क म मदी ग र डी न

22 7 11

[illegible]

श्री नानकामे ॥ ७ ॥ श्रीज दे ॥ नानकामे गिते ॥ ॥ सुषपतिके सवषद
मुपनिर्त ॥ ८ ॥

रागरे ॥ १ ॥ श्रीतक मलाकु च मंडलहे धृतकुंडलहे ॥ कलीतलती
तवन माले जे जे देव हेरे ॥ १ ॥ दीनमणी मंडल मंडलहे भव ॥ ॥ यंड
न मुनीजन मानस हे सार जये ॥ १ ॥ कालीये विषधर गे जन हे जन ॥ ॥
रे जन जे कुल नलिन दिने स जये ॥ २ ॥ मधुमर नर कवी नासन हे
गरु ॥ दासन मुकुल केली नीदाने जये ॥ ३ ॥ अमल कमल दल हो
चन हे भव ॥ ॥ मोचन श्री भवन भवन नीदाने ॥ ४ ॥ जनकुमु नाक
त भुवन हे जीत ॥ दुषन स मर समृतद सकंठ ॥ ५ ॥ अभिनव जल
धर सुंदर हे धृत ॥ मंडल श्री मुख चंद चकोर ॥ ६ ॥ तव चर गोपति
तावन हे मीति ॥ भावन कुरु कुरु स ल प्रन ते सु ॥ ७ ॥ श्रीजय देव क
वनी देहे कुरु ॥ ते मुद भंगल मुजेल गिते जये जये ॥ ८ ॥

दुखि

मेरा नव वंदन

दुखि

भजन गीत

सम्वत् १८८३ साल ज्येष्ठ ८ गते मा

हेरु दला प्रता (पुति) भजन गीत गव
पति राज रजोपाशा ॥ ५७ ॥

हेरु दला दो ५७ ५७

श्रीगुरु शरण

गाई
दनग
नाहे
दरस
प्रथम
कुरक
॥ तर
डचि
॥ ४॥
रीमै
तलिजे
केतर
रक
यकम
कर ॥
देऊस
वनसरी
॥ गृह
लालक
नी ॥ १७ ॥

श्रीमंगलाचरणा

गाईयेगगापतिजजवदन॥१॥ संवरकुवरभवानीकेनैदन॥सिद्धिस
दनगजवदनविनायक कृपासिंधुसुंदरवरदायक॥१॥ सर्वसुनेकरव
नाहेसिंघासनतापरलालकृष्णजीकेआसन॥२॥ सुरदासप्रभुनुमा
दरसको॥ हरिकेचरणापरअधिकसुहावन॥३॥

प्रथमयेनामलेतो गनपतिजिके संवरगौरीमनाई॥४॥ कदवाकेथा
कुरकल्ल गोसाई॥ सोभाभरनीनजाई॥१॥ इतगोकुलउतमथुरानगरी
॥ तरजुमुनावाहिआई॥२॥ नाउनीनाउनीगोपीनीसवआई॥ कृष्णगरु
डचाईआई॥३॥ तुतरिपरिजमुनाजीकेततमें॥ नवदसतिलकचहा
ई॥४॥ चंदनकेचोकीघनिआई॥ भातीभातीविछवाई॥५॥ सुनकेस
रीमेंगंगाजलपानी॥ पाउपठालीनववारी॥६॥ पाउपठालीचरणामृ
तलिजे॥ यतिवतिभागहमारी॥७॥ सुनकेथालीमेंकेसनरिबल॥ परवर
केतरकारी॥८॥ जवतेवनाईराधारुकमनिलेआई॥ जेमाईबैठलक
कहाई॥९॥ कौनेकौनेगालोदेहोलोलजीके॥ जीनकेदसवाक्य
यकमहतारी॥१०॥ काहेकियेसवहमाराकेगाली॥ हमतिनलोककेठो
कुर॥११॥ जोमरुलेहमतिनलोककेथाकुर॥ काकुरोअैल्हससुरार॥१२॥
देऊसाधिसवहमाराकेगाली॥ हमुलेपडुकपसारी॥१३॥ जेवनजुठनअव
वनवरीका॥ कृष्णचलेकुवरकहाई॥१४॥ जवयेगोपालचलेमधुवनको
॥ गृहआगनसुहाये॥१५॥ हासिहासिपुछेवाकेमाताजसोदा॥ कहतन
लालकसलाते॥१६॥ सासुलेसरहजीअधिकपियारी॥ सागंगाजलपा
नी॥१७॥ दसमासकृष्णनहमेंरहले॥ कवहुनकल्लेवछाई॥१८॥ येकहिग

श्रीकृष्णगैलेससुगरी॥सासुकेयेतनावछाई॥१९॥रामदोहैयाम
तिवरावको॥याअवतनवीसराई॥२०॥हमकेतुमकेवनदेवको॥
सांतसचिमिलीगाय॥२१॥गातिकेअंजलचमतिकेमोहन॥गा
लीप्रेमपिहारी॥२२॥गोकुलसेहरीमधुरआई॥गोपिगवालवालन
चाई॥२३॥सुरदासवलीआसाचरनाके॥यहगालीप्रेमसुगाये॥२४॥

दोहा

धानवासुदेवभगवतहरि॥द्वोसुधयानी॥जासुनामुष
तेकहत॥मितततापत्रयतास॥१॥नंदसुयनसुंदरसुषदव
धसोसुभराम॥गोपवृंदमंडनसुभगअरुनकमलदलनैन॥२॥
पिताम्बरवेनुधरकहुसोममउरअैन॥कृष्णगृहवलदेवपदवै
दोजगतअधार॥३॥नीरावरैवातिरवराअभिमतफलदाता
रै॥वंडोपदमहीमाथधरिश्रीगुरुकृपानीधान॥४॥नरचरीभ
वसागरताहिजासुवननजलपान॥पदमसरोजरजराथीसि
रुवैओसेतकीपाल॥५॥जीतनीजगुनहरिवसकरेजगहीतरत
सुभमाल॥परमरंमपापनपरमपुनीवैओवृजदेस॥६॥
राधानाथवीहारथलमहिमाजासुसुदेस॥

परी पशुपती पारि (क) ध्वस्वरी धी
यमागगादुर पशुपती यमागगादुर

योद सकरो

ॐ नमो नार

नाथ र गुरु प्रह्ला सोरुप नील नाथ ॥ ॐ ॥ आडि नाथ डी
नानाथः ॥ सर नाग तमै तेहिः हिदये मैवी राजा त श्वामीः व
स्व रूप नीले नाथ र गुरु प्रह्ला श्वरुपा ॥ १ ॥

श्रीजन्मलीला

दोहा ॥ ॥ तत्त्वनाम यदपरमगुरुः पुरुषोत्तमजगदीश ॥ कृष्णक
मललोचनसुषदः सकलदेवमनीसिम् ॥ १ ॥

सोः ॥ वंदो नंदकीसोर वृद्धावनवासिसदा ॥ श्रीराधाचीतचोर आन
दघनभवभयहरणा ॥ १ ॥

चोः ॥ ॥ कल्याकठासुंदरसुषदेनी अगहरनीवैकुण्ठी
मेसि ॥ ॥ कृष्णचरणापैकजरतिदेनीजनपावन
कतिजीमिवेनी ॥ श्रीकलंदतनपाततयावनवसः
तमधुरीपरिपरमसुहावन ॥ १ ॥ जाकेमहिमासुर
मुनीगावेतीनलोकपदवेदवनाये ॥ दर्शनतरा
रपावनहांइ कृष्णरूपादीनसुलभनसोही ॥ २ ॥

चोः ॥ उग्रसेनतहवसेनरेसा नीतीनीपुनसहधर्मसु
वेसा ॥ ॥ ताकोसुवनकंसअतिपापीअसुरवडी
भोवीसैसापी ॥ कीयोतातगहीवंदीसालाआफ
भयाकंसभुपाला ॥ १ ॥ तातअनुजतहदेवकनामा
सुताजासुदेवकिलामा ॥ दईकेसवसुदेवहिताहो
लोकवेदकीरीतिवीवाही ॥ २ ॥ दाईजदीयोअनेग
वीधानाहयगजरथपंदमुखननाना ॥ दामिदा
सबहुतसंगदिहोदानमानपरिपुरनकीहो ॥ ३ ॥

दोहा ॥ ॥ तवचछाईरथदेवकिआफ्रभयोरथवान ॥ यहचावनअति
हेनसोचल्याअभिमान ॥ १ ॥

सो ॥ तहिछरागिरावीसाल होत भई आकासने ॥ होय केसको काल देव कि
मुन आठवो ॥१॥

चोः । केसासुर सुनीव चन अकासा भयो चकित भन
मित्याहुलासा ॥ सत्रु समान देव की मानी रथते
उतरि पओ अभिमानी ॥ बड्नी का सिद्ध तमे ली हो
यहवी चार अफने मन ली हो ॥१॥ अवहि भारी दुख
मित्यो पुनी कलेस का हे को मे घो ॥ केस पगारे देव
कि गहे ली हो ॥ नहि कछु कान वाहिनी ही की ही ॥२॥
तव वसुदेव दिहो हे क हानी ॥ तीये वध नहि भुपये
सल हरी ॥ पुनी वसुदेव कछो कर जोरी राज मुनी
ये वीन कछु मेरी ॥३॥ वृथा देव की को जीन मारी या
को सुत हे सत्रु मारी ॥ सव सुत या के हम सोली जे जी
वदान या को प्रभु दिजे ॥४॥ यह वा चाह मनु म सोमा
ये चंद्रसूर्य साथे देराये ॥ भलिवाठ यह सव दिन जा
नी भावी दी वस के सह मानी ॥५॥ हरि कि हो चाहे सो
होई ताही मे तावन नाम हार न कोई ॥ तीहे सही तनु
पघर फिरे आई करी आगो तरव वाय ॥६॥

चोः । प्रथम पुत्र वदेव की जायो ले वसुदेव केस यह आ
यो ॥ बाल बंदे की केस ह सिदि हो इन तो कछु अप
राधन की हो ॥ अथ वग भसु हे मेरा सो दि जेतु म मो
हि संवेरा ॥१॥ यहि अफनो पाप छे माया तव वसुदेव
हय का पायो ॥ ओसे बाल करी सो दि हो वसुदेव गवन भ
वन को कीन्हा ॥२॥

दो ॥ तवरीषी नारद के स पहली ये हस्मन वीन गुन गावन गोवि
द आये परम प्रवीन ॥ १ ॥

सो ॥ ॥ उद्यादो यिकै ससिसनाई पद वेदी के ॥ प्रभु आसन रोषी
नारद ही बैठाय परसै ॥ १ ॥

चो ॥ ॥ जाके भये तुम अति भयमानो अठव कोन
सुन सकहु जानो ॥ ॥ जो वर प्रथमहि आयो हो
ई ले चरित्र जानु कहु कोई ॥ आठ लडकि रषे ची
दिखराई गीनति मै सव आठो आई ॥ १ ॥ यह स
महाय गयेरी बिग्यानी कै सासुर अति भये मा
नी ॥ तेहा छन बाल य के स गाया लेव सुदेव
नुरै नहि आया ॥ २ ॥ लीयो मुँठ मै नाही पटक भ
यो सिला परवाही ॥

१ राग ॥ वसुदेव देव कि ओसिह बाल ॥ ॥ सो बतनी दनहि आई हो
॥ ॥ धरली ये मोरे कै सभाई ने ॥ देव की वीर रुव
ठाई ॥ १ ॥ मालर गाई मोरे कै सभाई ने ॥ रे वत
ने ना बछाई ॥ २ ॥ वसुदेव देव की ॥ ॥ ॥

६
चेरीया हुहुहुहुहु चोरिया वायारे पंजर वामोरा कर्कनि ॥१॥ चेरीया दहिने
अधिक ठेसा लछि नछिन ॥२॥ चेरीया पहिले वेदन ज आन हुहु ॥३॥
चेरीया दोसर वेदन जव आयें नहुहु ॥४॥ नन डुपुछेली नीज हेत को
नहुय हुहु ॥५॥ चेरीया तेसर वेदन जव आयेल हुहु ॥६॥
वदुर हो सवि आरने हरि जमुना मे जाये वी हो ललना जमुना के नीर म
ल नीर कलस भरि त्याप्य वी हो ॥७॥ कोही सवि कर दात वनिया को
ही अस नान करो ॥ ललना ज सोदा जिची वेली पार नी वैया ये करो वे
ली हो ॥८॥ नहि देयो नाउन वेडा नहि कर बार दो वो हो ॥ ललना को न
वीधी उतरांगी पार ती वईया समुझ्य वी हो ॥९॥ सीर वा के वा धेली मु
रि हठारे हृदये कल सलेली हो ॥ ललना ज सोदा उतरि गेली पार जाहा
वसे देवा कि हो ॥१०॥ कीये तोरे सासु ससुर दुयने हर दुरी वसे ॥ ललना कि
ये तोरे स्वामी परदेस कवन डुख रोवेली हो ॥११॥ नहि मोरा सासु ससुर
दुयने हर दुरी वसे ॥ ललना नहि मोरा स्वामि परदेस को विष डुख रोवेली
हो ॥१२॥ चुपर हो चुपर हो सुतिरीया जनि रोई मर सि हो ॥ ललना अपन वा
ल कह म मारव तो हरे जिया ये वी हो ॥१३॥ नून बाउ धार तेल पाई चलोक वे
वहार चल हो ॥ ललना को वीया के के सेन उधार वध के भरो मान हि हो
॥१४॥ होई गय कवल कराल वाज सोदा गई गृह वी धि हो ॥ ललना उहे जो ध
डि उहे सा हेत दोन नीहरा वी हो ॥१५॥ पहिल मास जव तिले दोसर नगि
चासेल हो ॥ ललना तेसर मास जव वितले चार नगी चायेल हो ॥१६॥
चार मास जव वीतले पंचवान गि चायेल हो ॥ ललना छेठ मास जव
वीतले सतवा नगी चायेल हो ॥१७॥ सात मास जव वीतले आठवान गी
चायेल हो ॥ ललना नवमे भये अवतार नंद लाल गोवेली हो ॥१८॥

अठतवजनमोरा नैहर वाजे अठतस सुर वाजे अठतस सुर वाजे हो
ललना सोर हो वजन मोरा वाजे लागी हुं नहि आगे ला हो ॥१॥ सोर
मोरे सुनली अतरीया ननडु गज वर हो ॥ ललना स्वामी मोरा सुन
मंदील वामे कैसे के जाई वी हो ॥२॥ सासु जी के भेजे वन उनीया नन्द
वरुनीया न भेजे ॥ ललना गोतिया के रौ वा प्रभू जाये गोतिनी मोर
पायल हो ॥३॥ सासु मोरा आवेली गावई तन नडु वजा वडत हो ॥ लल
गोतिनी आवेली वीस मादल मोद हि जन मलेली हो ॥४॥ अंगन लग
ई दसन रि वल दुवरा न वर गिया ले हो ॥ ललना जीर वाके वर सिम मे
वैलेयंग कर पास ग हो ॥५॥ दुवरा वाजे वाजे ले वधे जां मंदील उठे सो
र हो ॥ ललना आनी हो मेरे नंद लाल सुनो सुनो मेरी सो हरि हो ॥६॥

सुनीली जे रामा हं मेवेटा दिहै वेदी जनम लिहले हो ॥ ललना सुनी सुनी
गाली हं मेदे ले तो मोरे मोहि धावेली हो ॥७॥ जानीली जे सोठी पो पारि दिहै
दुद मारि च पाय वो ले लहरा दिपिये वो हो ॥ ललना दुठहि तेरे यो ना ही दे
ओ वरी फुली बैठले हो ॥८॥ कहल जे दोसर व्याहा कर वो ना ही हर पड
चाई देहु ॥ ललना घर के योगनियां वातो ही नंद लाल गावली हो ॥९॥

उतरो भ्रावन चढे भादौ चहुवर कां दुं विहो ॥ ललना देव कि जे वेद ने वा
कुल धगरि निचाहे सि हो ॥१०॥ आहा धगरि निकाश पाई विधि ही म
नाये विहो ॥ ललना पुर्व जो लिखल फल पाये दोस काहे लाये विहो ॥११॥
जव जन्म जह नन्दन सुति गये वंधन हो ॥ ललना सुति गये वज कि दु
र पहर सब नि सो वे सि हो ॥१२॥ संव चक्र गदा पद्म प्रोर पंख सिर से
भे सि हो ॥ ललना ईर वये जयं त्रिके मा ल भवण सो हे कुंडल हो ॥१३॥

कुंठीवेठे जड नन्दन देव किसे वो लहि हो ॥ ललना अवाहि गो कलपुं च
ये क्षिर नहि पिये विहो ॥ ५ ॥ गोदवा लगाई सुत वसुदेव चलि भैले गो कल
हो ॥ ललना रात्रि भयेति अधियारि पंधनहि सुहेत हो ॥ ६ ॥ जमुना गहेरि
जंभिर थाहा नहि पाये विहो ॥ ललना मन मन रुं के वसुदेव पार के से जाये विहो
॥ ७ ॥ प्रभु बोले मुमुकाये आस जनि मान विहो ॥ ललना हटि जै हे जमुना के
वाटि नर राहु वेह दि जाये विहो ॥ ८ ॥ जिन ये हम गल गा वल गाई सुनाये
विहो ॥ ललना सुरदास वलि हारि प्रेम पद पावत हो ॥ ९ ॥

आजु जन्मे श्री कृष्ण कन्हई ॥ आवरा भाडो नीसु अधियारी गगन घटाघ
न घरो ॥ लोकालोके बीजुली चमके यहू सुते नीसु राति भा ॥ १ ॥ सब चक्र
गडा पछली ये वैजंति के माला ॥ पीताम्बर की कछ नीका छे युली गये वृ
ज के डुवार ॥ २ ॥ देव की के कोयि जन्म लीयो जसो माति गोद खिलाये ॥ जमु
ना जी के पारुंतरि गये वसुदेव का धच हूये ॥ ३ ॥ गोकुल मै हरि जन्म
लीयो है मथुरा के स पछडी ॥ सुरसा मप्रभु नमारी दरस को छोड़ि गये
कृष्ण उहारी ॥ ४ ॥

भाडो के नीसी अधियारी तव जन्म लीये वन वारी ॥ ५ ॥ वसुदेव लीन
काइ उठाई ॥ तव ज मुनानी कठ ले जाइ ॥ ६ ॥ तव ज मुना उठे हर बाइ ॥
प्रभु चरण की नुलत काई ॥ ७ ॥ तिन नंद भवन पहुचाइ ॥ जसो दारा
नी ओंके मिलाई ॥ ८ ॥ वांके सुरदास गुण गाई ॥ तव पुर भई आस मुगारि
॥ ९ ॥

गौर रोडा लागे येसा सुधीनतिवडुत करे है ॥ मेजि धगरिनी देहना बोलाइये
सा सुवेदन वडुत आई वीहो ॥ १॥ धीरे धीरे बोलाये वडुत वीरि सवलीग
सुनी है ॥ रविय के वेदन वार है वडुत सुने लाबीरान सा गई है ॥ २॥ आ
धीरानि वीतल वयर भावीता लेहर गती ॥ आधि रानि जनमै गोपाल
यगमा मोहर लुता यवोहो ॥ ३॥ वमना के देहना बोलाइ येसा सुलग
नम चाये वीहो ॥ सुभ घरी सुभ दिन लागी गेलो रोहिनी सुभ अकमि
सा के दिन बाये राम नंद लाल सुरग बल हो ॥ ४॥

कृष्ण जनम जव भय होरा धाले चलो ॥ गावत हे लाला गावत मै
गल सुधिनर मै जी को पाहु चलो ॥ १॥ धनी वही भावी लोक धनी वही
रोहिनी ॥ धंदे भाडो लाला धंदे भाडो के रात कृष्ण जी का जन्म भई ॥ १॥
नंद दुवार छोडे हालु रावे सो प्रदा ॥ जाचक हे भला जाचक भये हनी
हार हरषि सव देवता ॥ २॥ धंदे जसोदा तेरा भागीत गोद न बली वही
॥ हरषि हरषि भला हरषि हरषि जी या हो पद सीर मिला वही ॥ ३॥ जाई ह
मै गल गाई तगा वसुना वही ॥ सुरदास भला सुरदास वलि हरी प्रेम पद
पावही ॥ ४॥

वेठा भयेरा जावली काम नरं जनुला ॥ घर अंगना भये भीर मनरं जनुलाल
॥ १॥ नंद जी रंगरी भोजी यान से मनरं जनुला ॥ देहो भोजी मोरे ले गे हो मन
रं जनुला ॥ २॥ तो हरे दील हमारे सब कछे हे मनरं जनुला ॥ हमरुं चुदरी या प
हीरा बल हे मनरं जनुला ॥ ३॥ जोनुम भोजी ने गे देही हो मनरं जनुला ॥ ले
जाई हो वसुना उठाई हो मनरं जनुला ॥ ४॥

मोराहोरी जवाके साथ सेयां नीदन आई ॥ नीदन आई भुवन लागे कल
ना परे लादीन गति सेयां ॥ १ ॥ आर पार के पी पण ये छ ॥ छनो वी छो ना ॥ वाके
दर सेयां नीदन आयें ॥ २ ॥ हात नरी पल पान को वी रा चल ले गौरा ॥ पुजे सि
व सेयां नीदन आयें ॥ ३ ॥ स्वामी मोरा दयाल भयो है ॥ लेइ ना ल वाल बघ
र जाउ सेयां नीदन आयें ॥ ४ ॥

दो ॥ ॥ वृज वासी टेरत फिरै कोई वन जनी जाये ॥ नंद राये
घर सुत भयो देव बछाई आयें ॥ भरे परम आनंद सुरूप
जावत अनुराग ॥ बार बार वर्ण न करै नंद य सो मती भा
ग ॥ गोकुल को आनंद अतिको भेवर नो जाये ॥ जहा
परम आनंद भये लीया जन्म हरि आयें ॥ वृज को सुख
कहि सके उपजा वडि अपार ॥ मुख नीधान भगवान जहा
लीयो मनुज अवतार ॥ ॥

नंद घर बाजे रे बछाई ॥ ५ ॥ वृज की सधि सब वनी वनी आयें ॥ काहा वसे
दगरानी हो माई ॥ १ ॥ चलत चलत मोरे पै जाँ फिरानी ॥ जनम ले कुवर
कन्हाई ॥ २ ॥ सुरदास प्रभु नु मारी दर सको ॥ हरी के चरण उधोला मा माई
॥ ३ ॥

मोहन मुख देवन देन दरानी मोहन ॥ ४ ॥ तेरे सुत को देवन कारणा ॥ छा
डि आयें राजधानी ॥ १ ॥ जो मुख जोहत पारन पावत ॥ ब्रह्मा से सु सु भवानी
॥ २ ॥ सनक सनातन नारद मुनीवर ॥ ध्यान धरत नहि पावत गपानी ॥ ३ ॥
लाक्ष्मि पति हारे हारे परछाई ॥ दरसन को हर हर छानी ॥ ४ ॥

अस्तुति

सुरत के बलिहारी जय जय कृष्ण कहैया ॥ १ ॥ चतुरानन सनकादिक
सैवर अडभुड रूप नीहारी ॥ अस्तुति करौ गि चरण नु पर पुरन ब्रह्म वीहा
री ॥ १ ॥ मोहन लीयो मन की मन मोहन कै ज मोह ली दां ली ॥ सब की सुर
थल गि सुरल परगंजारे गवीहारी ॥ २ ॥ कैसक सपुत ना को नारे कुबीजा
नारि ॥ हम अँसि पातित अने ग नारे जाहा पल बड नरी ॥ ३ ॥ साहेब पति
त अनेक नारे क्या पुरुस क्या नारी ॥ भुरड वृज को राखी लीयो है कमल
नेन गिर धारी ॥ ४ ॥

ज

प्रथम जन्म भये कृष्ण गोपाल जिम धुवन बेलन आई ॥ ब्रह्मा आये
महेस्वर आये नारद वेनु वजाये ॥ मकुट मूल कलीये कृष्ण गोपाल
जी ॥ चंदन तिलक गाये ॥ २ ॥ श्री वृद्धावन में धेनु चर्याये ॥ कृष्ण जी भि
रुनि वजाये ॥ ३ ॥ सब गोपिनी मीली देखन आये ॥ धँडे धँडे सुरलिया ला
॥ ४ ॥ सुरहि दास प्रभू नु मारी दरसन का ॥ हरि जी ये लाल हरि जी के मंगल गा
॥ ५ ॥

दरद कि दाव लगे योरे काहु दरदन जाने ॥ बाहु दरद वा के अम्बा जे ॥ बाहु
दरद वा के लील वारे ॥ १ ॥ पुन जाई हो स भिम जाई हो ॥ सोधी पीपले डोलै यो
हो ॥ २ ॥ कचिक पापित का चनी को छे ॥ मोरे मुकुट सिर ले हो ॥ ३ ॥ सुर
दास प्रभू कृष्ण जन्म भई ॥ सब सधि मंगल गाई हारे ॥ ४ ॥

देखो रेयकवाला जोगिदारे हमारे आया हो ॥ अंगवभूत गले रुद्रमाला
से सनाग लपटाया हो ॥ तीन के माथे तिलक चंद्रमा जोगिजटा बछाया
हो ॥ १ ॥ भीक्षपाल नीक लेने दरानी के चन थाल भराया हो ॥ भीक्षपाल
जोगिजातु आसन मरे गोपाल दराया हो ॥ २ ॥ नचाहीये तेरी दुनी आड़ी
लथ नाचाहीये तेरी मां भा हो ॥ अफने बालब को दरसन घातीर आ
घातीरि दार में हो ॥ ३ ॥ तब बालब नीक से नंदरानी सँ भुदरसन पाया हो
॥ पाचवेद से परीक्रम करी के सिंगिना दवजाया हो ॥ ४ ॥ तुलसिदास प्रभु
धंदे धंदे चरण कि जसो माति पाया हो ॥ तीन लोक की अंतर ज्यामी बालब
रूप भराया हो ॥ ५ ॥

हान चक्री मन्त्री एजे अजकुज जाये नगी मे

जाउनी ॥ ॥ श्रीकृष्णकादर कादरसन घातीर आये सदासि वगोकुल में
॥ जतामकुतसि रंगी गवीर ज्यरूपाक्षी को अधिकारी ॥ से सनाग गले लप
ताये आल भजता दर वारी ॥ १ ॥ माता जसोदा अंतर बैठे अवाजनी क
लेकानु में ॥ कौन दिसा सो आये बाबाजी देवो गोकुल नगरी में ॥ २ ॥ थाल
भरि भरि के चन माला ले हो बाबाजी गेली में ॥ तुमारा भिक्षा हम नहि
लेवें जी लीजा अफने दर वार ॥ ३ ॥ हिरामोति के चन माला जो चाहे सो
घर में है ॥ जलियो लाये माई आफने बालब को दरसन कर के जानो है
॥ ४ ॥ कालापिला स्वरूप तुमारे नहि जाने को ही डीकिनी का ॥ केलकी
जन्मा हमारी बालब बाहर नाही लपाउंगि ॥ ५ ॥ हम तो जोगिजगल वा
सिरहने वाला परवत की ॥ श्रीकृष्णकादरसन घातीर आये सदासीव
गोकुल में ॥ ६ ॥ अंतर ज्यान भये हम दुनु बैठे मालुम न हो करमील
ता है ॥ येही रमक्री से जोगमी लाये नीर काल को भजता है ॥ ७ ॥

चो ॥३॥ अतिकपतध्वनीगोहै जो देखेताहाको मन मोहै
॥ इतउतहेनदधामोहआये देखीरूपयेसो दामनभा
ई ॥ देखीरहि मुखसुंदर जानी कहियेह नरकेसुरहि
जाये ॥ १॥ काकीबधु कौनकीवेठि अवलौवृजमें बहुत
मेयो ॥ वीनयहि चाने आदरकिनु वेठनकोसुभआ
सनदिहो ॥ २॥ अहोमहरि आलागनमेरो होआइस
मुतदेवतनेरो ॥ हरिपलनापर मनमुसुकाई येसोमति
कहुगृहकाजसिधाई ॥ ३॥

दो ॥ तवहिगछेसिद्धमतिबलनाकेछोकजायेनीरविवदनमुख
चुमके लीनउछेगउठायो ॥ १॥

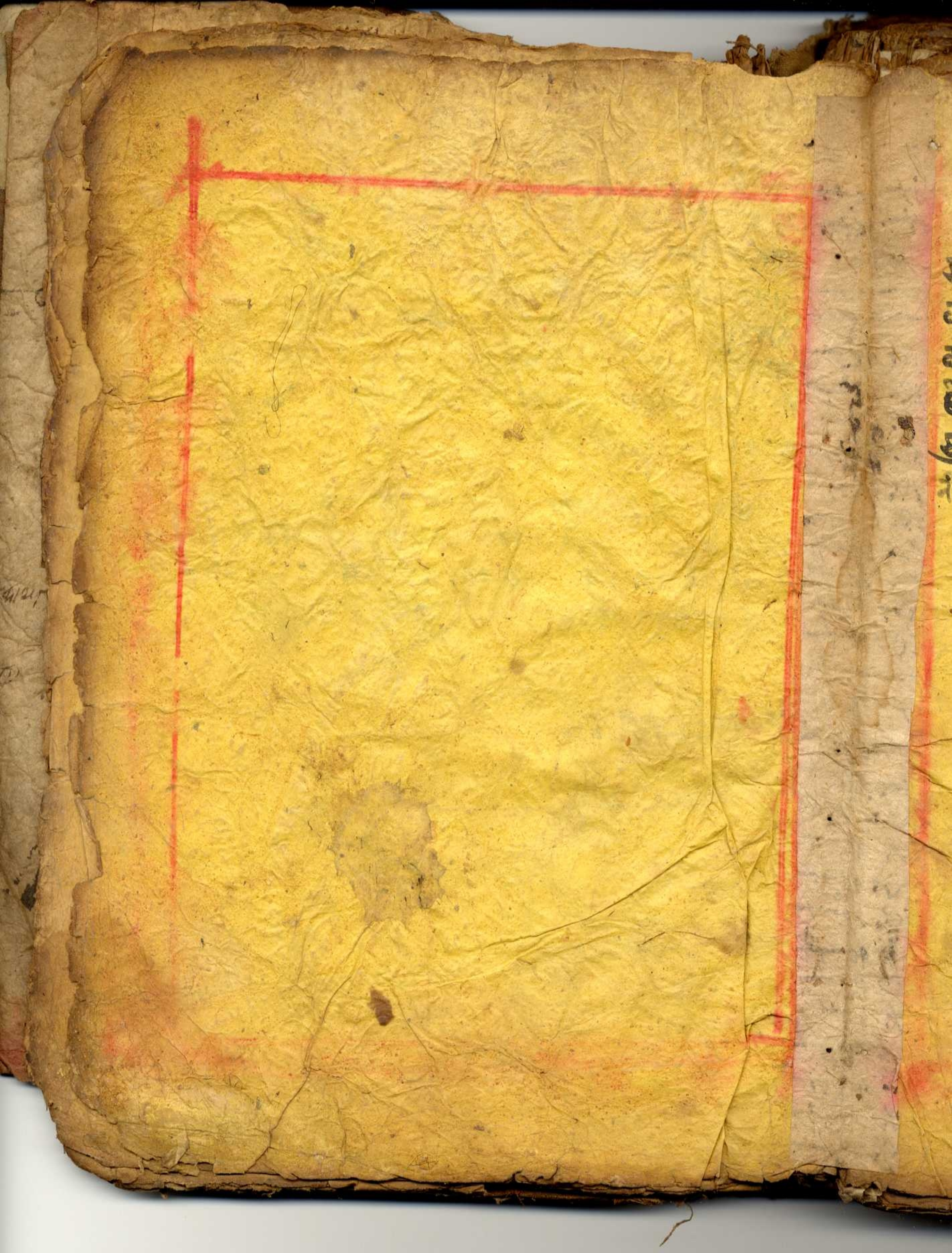
सो ॥ दीयोकमलमुखमाहीविवल पघोरनननुरत ॥ लगेकरन
पयेपानहरी पकरहुंकर माही ॥ १॥

पुतना ॥ मोहरणीरूपलियेपुतना ॥ यतनाछलसेगोकुलपुतना ॥ १॥ सो
लसिगोरकियो है पुतना ॥ कुचमेंबीसलगाये पुतना ॥ २॥ जसोदामेजातुवा
देकदेखा ॥ बालबडुधपिलायेपुतना ॥ ३॥ दुधपियेहरीचुचिपकले ॥ मनमेंके
सेकोरेपुतना ॥ ४॥ यहमानुषनहि कोहीबीधाता देहसेजीनीकलीपुतना
॥ ५॥ गुरदासप्रभुधंडेकदेखा ॥ गोदलीयेजसोडामेजा ॥ ६॥

लेकरपानचलेपुतना येतनाछलसेवृषभानकेडुलाई ॥ यावतयादर
भावकीये ॥ जसोदामेजाबालबडुदखीलाये ॥ १॥ येचलकेयकहोतली
यो ॥ छलताछलसेवृषभानकेडुलाई ॥ पियतपानसमेतलीये ॥ व
लीराजवने नरजावनुमारो ॥ ३॥

मुनहोरजाहरिकठा मुनाई रामा भजोरमा ॥ १ ॥ चलाहि देवकी जमुना नुहाई
 रामा भजोरमा ॥ १ ॥ जसो जति माई नैदकी रानी ॥ सीगलोये सवस विरया
 नी रामा भजोरमा ॥ २ ॥ बालब गोदवाली नी लोना रामा भजोरमा ॥ कहु
 कोन गुन रोषा सिमाई रामा भजोरमा ॥ ३ ॥ कोन वीपति मोही पहुचन आई रा
 मा भजोरमा ॥ हा मुदेवकी के समोरे भाई रामा ॥ बत बालब मेरी हात से
 छीनाई रामा भजोरमा ॥ ४ ॥ कहई देवकी मुनये जसो दारामा ॥ सव मुय
 छाडि मुन भये गोडारामा भजोरमा ॥ ५ ॥

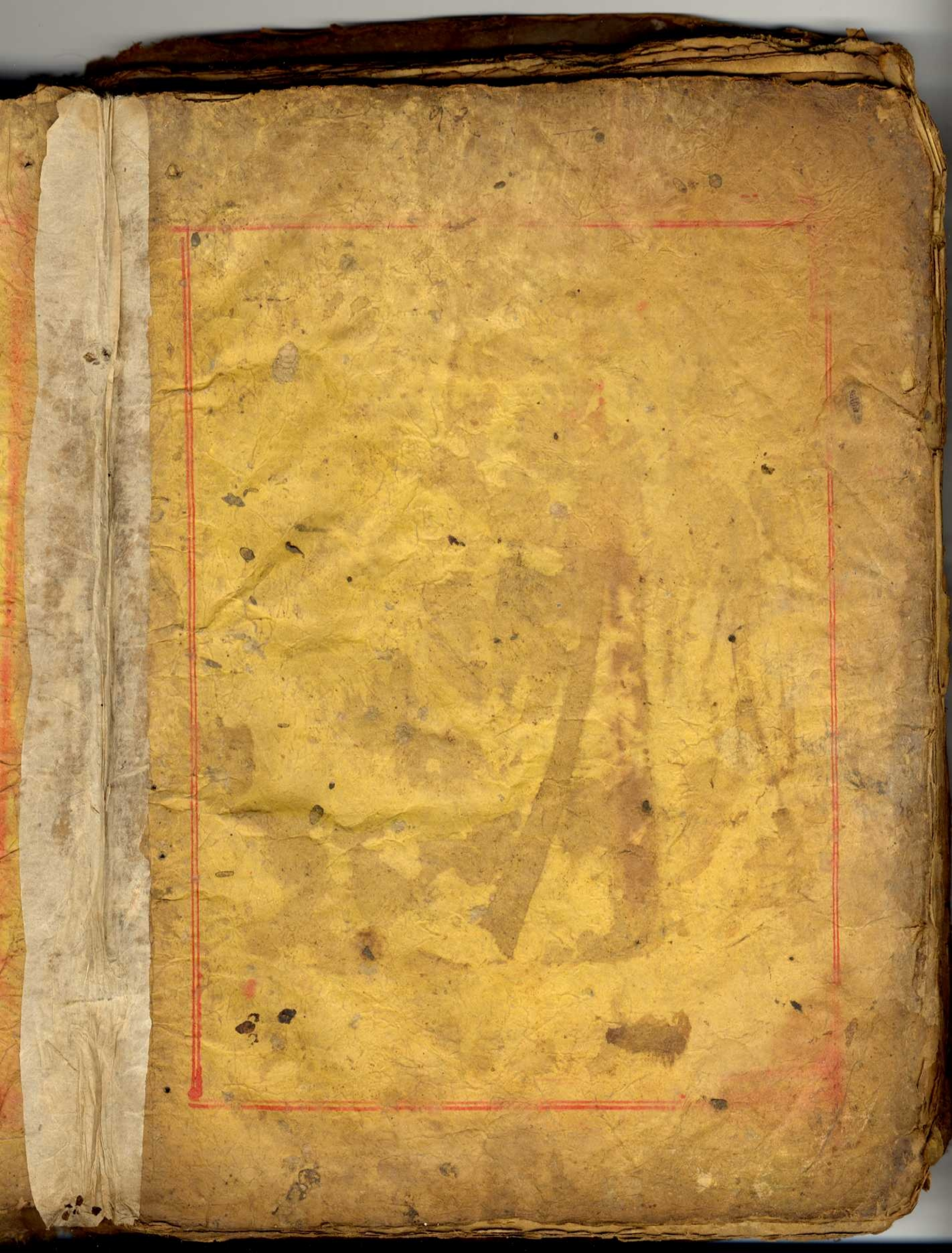
नौम विजाही हो दीन राती ॥ ६ ॥ जन्मलीय वसुदेव की गृह ॥ जसो भ
 तिनाम धराई ॥ १ ॥ गाई के गोबर अंगजली पाउ ॥ गज भाति चौक पुग
 ई ॥ २ ॥ इन के कलस लीय गजराज ॥ सवस विदेवन आई ॥ ३ ॥ सुरहा
 सप्रभु भजनम भई ॥ अवध पुनि सुख रासि हो दीन राति ॥ ४ ॥



रहिलीला

रागभजन ॥ ॥ चलनीमधुपुर साजी के दधीवेवन उवा
ल जमुना नीकट घाट बाररे रोके नन्द के लाल करव मै क
वन पर काररे घर सो चत उवात् ॥ १ ॥ मुनी अथर वजाइ के
हो सुदर देखो स्याम् ॥ कलन परत तन ने हरी हो सुदर
सुख रासी ॥ २ ॥ सुरदास कवी भाती रे सुन गोप उवाती
नी ॥ मन मेरे हर ले गोपा लरे हो वीका जी रे धारी ॥ ३ ॥





बाललीला

चौ ॥९॥ इकदिन वसुदेव बीजानी पठयो बोली
गर्ज मुनी ग्यानी ॥ मुनी वसुदेव वचन मुख पायो
हर्ष सहित मुनी मुनी गो कुल आयो ॥ चरगा
धोये चरगा द कली नु ॥ अर्घासन अती हीन
करि दीन्हो ॥ बछी कीया कीहीरी वीरा जामो
सम धन्य आनन ही आन ॥

दो ॥ बहुरिमहारी वीरा राये सो ॥ कहे जेरी कर दोये ॥ कीही का
रन प्रभू आगमन कह कीया करि सोये ॥१॥

सो ॥१॥ तब बोलेरी बिराज पठयो हेव सुदेव मोही ॥ नायक
रन के काज ॥ सुभग रोही नी मुवन को

चौ ॥ मुनत नैद अति भये मुखारि ॥ लय आयो
कहैया दो वारे ॥ अती सुभल क्षन बल को धा
मा धयो नाम तीन को बल रामा ॥ इना के ना
म अती त जग माही ॥ तज पिक हो मै कछु न
म पाही ॥ इन कवहु वसुदेव के धामा लोचो
न नम सु धर वार स्पामा ॥ ता के वासुदेव यक ना
मा सो मुमी रत नर पावही का मा ॥ तब हि स्पा
म घन मादी चाई ये सो माति सादी ले धाई ॥
उगीलहु वेगि बदन मादी ॥ ताही नौ मारी हो सा
दी देष रायो श्री भूवन मुख माही ॥ नव सारि रवी

नाराई कठाई देखि चरीत येसो मति अंकलानी
करने साथी गौरत नहि जाने ॥

भेकर के गना दिन माहा रानी मै ॥ १ ॥ लेकर हात को सिलपा रानी ॥ ध
गरानी धगरानी मन मुमुकारी ॥ १ ॥ चंद्र सखी हीन बाल कल भजो ॥ हरि
के हे लाला प्रभु के चरण चीत ध्यान ॥ २ ॥

श्रीमहाराज अच वन लीजे ॥ ३ ॥ सुनवा के थलीयामे देवन वनाय मधु
मेवा पकवाना ॥ १ ॥ भरु हरि ब्रह्मा जल त्याये ॥ इद्र त्याये जडु मान ॥ २ ॥
ब्रह्मा आयि मेहे स्वर आयि ॥ नारद त्याये वृष मान ॥ ३ ॥ एक सखि आई च
वर डाला ॥ एक सखि मुख भरि खोला प्रेपान ॥ ४ ॥ सुरदास कवी अ
चरण गाये ॥ हरि के चरण चीत ध्यान ॥ ५ ॥

राघो लाल गोपाल जी ग्रामेश ॥ ६ ॥ जेही सुमरे सुर नर सुरी रवी ससि ॥
यत ना प्रान यादी न बहनेरी ॥ १ ॥ जाके धान धरे श्री ब्रह्मा द्वोर गाचा
जे सकल बहनेरी ॥ २ ॥ भ्रात मारि के प्रान सर्व बनी ॥ येन राग तुम काम
भुवन केरी ॥ ३ ॥ सुरदास बली जाउ चरन की ॥ होउ हरि के चरन की चली ॥ ४ ॥

अरे वन माली अरे वन माली माधो मोहन बाके सो धन के सेवन माली
॥ १ ॥ राधा पति भजो कुंज वीहारी मुरली मिनो हर गौर वर धारी ॥ जगत
नाम जगादिस जगत प्रभु ध्रुव प्रल्लाद कीयो है अरे नीज धामा ॥ १ ॥ ज
लम नीर जन गभही रीजन असुर संहारी नी सत उभारी नी माथ मे क
दल कल मुगदी दसरथ सुत सीता प्रति रानी काली मर्दनी के सनी री
जन करु रागम ये देवा के नंदन बाहु वर सकी बाके वीहारी धन रसा
म मुरारि ॥ २ ॥

वाजे लालजी के पेजनी या रीसि वाजे ॥ धूर् ॥ पेजनी वाजे अधिक सु
 हाये ॥ मोहन लीये सुरनर मुनीयां ॥ १॥ पितल कुली अधिक वीरा
 जे ॥ माठे तो पीरुल कनीयां ॥ २॥ माताज सो चलन सिकाये ॥
 अंगुलीये कर धर पेजनी भां ॥ ३॥ श्रीवृद्धावन की केज कली लमे ॥
 चाल चले धुम धुम पायीयां ॥ ४॥ सुरदास प्रभु नुमारी दास के
 ॥ तीनै लोक की रहि धनी या रीसि ॥ ५॥

भजो भजो गोपाल मु गोपि गो कुलपाल मु ॥ धूर् ॥ मनी मये केजल
 रुचीय कपोल न ॥ तरु रुची वीत न माल मु ॥ १॥ करवीलीत नवन
 माल ॥ यह भवसागर मान मु भजो भजो ॥ २॥ करधुत वादन लोल
 मु ॥ श्रीधरपाल नसिल मु गोपी गो कुल मु ॥ ३॥

रुनारुना वाजे रुम रुम वदेयां जसो मति के नैद दारे ॥ धूर् ॥ हुब
 मुनी नर मुनी गाये वृजलालाना ॥ श्रीवेति भाती गुनी गाई ॥ १॥

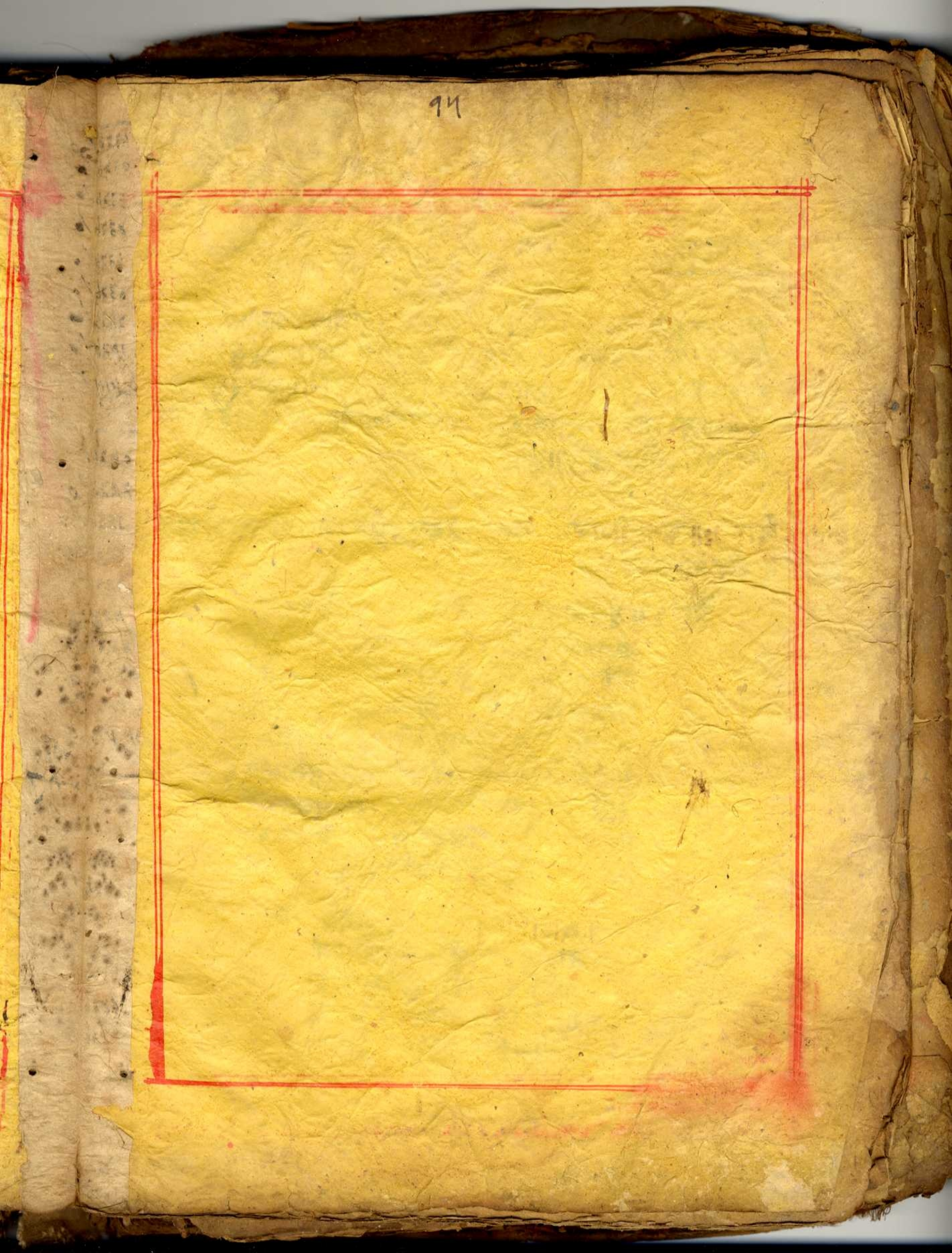
वाना सुरदान व आये रामा भजो रामा ॥ डोरी गोपाल के मारन धाये
 रामा ॥ अघो सुरवीद्धावन आये मुगल हात लोय सव धायः सुन राजा
 हरिके वेव हाए ॥ अनेक दैत्य बाहु प्रमाणा रामा ॥ केरि भारे फेरि घ
 रान पछारे रामा भजो रामा ॥ माथ फेरि मति मस्तक कछी ॥ श्रीनाथ
 त दान व आये रामा भजो रामा ॥ डोरी गोपाल के मारन धाये राम
 भजो रामा ॥ वका सुरदान व आये ॥ सुत बाल व से मारन लडाई रा
 मा भजो रामा ॥ ॥ ॥

वकासुर चलेरिसिआई रमा भजो रमा ॥ बट बाल घसे मांगेलडा
 ई रमा भजो रमा ॥ १॥ अघासुर चलेरिसिआई रमा ॥ बट बाल
 घसे मांगेलडाई रमा ॥ २॥ कागासुर चलेरिसिआई रमा ॥ बट बाल
 घसे मांगेलडाई रमा ॥ ३॥ सिवधनिवीप चलेरिसिआई रमा ॥ बट
 बाल घसे मांगेलडाई रमा ॥ ४॥ सुचलगे राजा राजा रमा ॥ श्रीकृष्ण
 बळेयां सेवु पलड बेरमा भजो रमा ॥ ५॥

^{माजी}
 कैलेदे तो लालजी के गाली प्रेम पियारी ॥ १॥ बाके माता जसो दागनी ॥
 दधि मथतो जन्म सिरानी ॥ २॥ बाके बैनी सुभद्रा रानी ॥ बीज व्याहा कर
 न सियारी ॥ ३॥ बाके फुफु पुत नादे हो रानी ॥ जीन अर्जुन सौग सिधारी ॥ ४॥
 बाके नंद पीता व्रत धारी ॥ जस घर घर मगन धीयारी ॥ ५॥ बाके सुरदास
 करी गारि ॥ बाके जन्म सुफल पावे ॥ ६॥

राधा कृष्ण वासुदेव राधा कृष्ण वासुदेव हरिहर कर मुराके सब जाडु
 जावे सि देव कि नंदन कर मुरलि धर ॥ १॥ कमल नयन बैसासुर सड
 न दामोदर गिर धारी ॥ नंद लाला वंसी बाला गोकुल के गीर धारी ॥ २॥
 ब्रह्मपानी बडा मन मोहन मधुसूदन भोगोपि आये ॥ परब्रह्म परमे
 श्वर सि भू जै जै जै जगदिसहरे ॥ ३॥





रहिलीला

चललिमधुपुर साजीकेदधिबेचनग्यातुजमुनानीकटघटवारदेरोके
नेदकीलालकरवमैकवनुघरकाररेघरसोचतग्यातु॥१॥ मुरलीअ
वरवजाईकेहोसुंदरदेखोस्यामकलनपरततननेहरीहोसुंदरसुवरा
मि॥२॥ सुरदासकवीभातीरेमुनगोपगुवालीनी॥ मनमरोहरलेगो
पालरेहोवैकागिशधारी॥३॥

दोः ॥१॥ करहवीराजयसरस्वतिहृदयवसेमहेस। समझायेअक्ष
रभलेगौरिपुत्रगरुड॥१॥

चौः ॥ वृषभानुमुतासकुमारी। दधिबेचनचल
वृजनारीहृदयेधरिअजरधाना। चतिसुमी
रतश्रीभगवाना। जहनुडीकंदमकोछाही। तह
वैठेप्रभूमगमाही। सरवीगोडेरिबेलतआई।
तवमोहनमुरलिवजाई। देदेगुजारेदधिदाना।
गहिअचलरोकनकाहो। तुमछाडगुमानग
वारी। फारोकचकेचुकीसारी। सबभुवनलेई
छिनाई। मरुकोदधिदेउनुदाई। तुमबहुतक
शिलेगराई। छाडोनहिनन्ददोहाई॥ १ ॥

छः ॥ छाडानहिनन्ददोहाईगुजारे
जानकेसेपाईहो॥ अबदोषबल
गर्वतुम्हारीकोनआईछुदाईहो।
सबनदिहोदानमोकहुतुमवह
तसरवाकरि। चतुरीचंचलछाडि

लैगरे अस न देखे गजरी ॥

चोः ॥ जव सुनि गुं जरि होरे वेना । तव पीके भय मुखा
नेना । तुम समुनि न कहव न चारी । हम हे मधुरा
की गु वारी । जहे वाकर केस भुआरा । सुधी मुनत
करत सै हारा । तुम्हा सुनी न तेहि ठ कुराई । जाके
उर मुपडराई । नहि लादा लोग सुपारी । हम हे दधी
वेचन हारी । तुम सु मुनि मनहि विचारी । जनि
शेकहु वाट हमारी । जव केस गये सुधि पेहो । तव
नेदहि पकरि मगेहो । सब गो धन लेहि छिनाई ।
जो कुल धन देखे लुटाई । तुम हो अपने मद माने
ताते । करत अराप टिवाटे । तुम याहु दहो भारी
या । इन्ह वानि सो नहि भेदा ॥

छः ॥ कहत अत पति वाट मोहन
हाथ नहि कछु लागिहो । हम हे
न आन गवारी गुं जरि डरत तुम्हा
रे भागिहो । अवेचे तु चीतहि वी
चारी मोहन छाड अन्ध लवाम
की । रुगह कलङ्क लगाई छाडो
जो सुता वृष भानको ॥

चोः ॥ सुनी गुं जरि वचन रसाता । इसि वोलन नन्दके
लाला । हम रुठ कलङ्क न लेहो । अपनो परलोक
न सेहो ॥ हम मागत है दधि दाना । तुम वुरती आ
नक आना । वीनु दान जान नहि पेहो । जो कोथि
न केस बुलैहो ॥ मै आदि वृद्ध अवतार । हे नाम

श्रीकृष्णहमाराः। हमहि सबदे त्परी हाराः। वसुधा
करभार उताराः॥ पुनी करि गो पप्रतिपालाः। हेना
महमार गोपालाः॥ सुरदिज मुनी के मुखदेवे। महि
मराडल मईज सलेवे॥ क्षत्रीय चरित्र लहि लागे।
हम ते चतुराई न पागे॥ ६

छं १) (हमने चतुराई न पाग सुंद
रि जान आतुर जो चहो। मानी
रतिरस करहु को दातु मह भेहि
ली मिली। हा सुने जग उप
होस करिहो। कवन ईत उत की
जीये माने अपनी राख सुंदरि
दान हमरो दी जीये॥

चौ १) जव कृष्ण कहिय हवाता। तव ग्यालीनी
कह आसिवाता॥ हम सासुन नद घर वारी।
हसि बोलन बोल मुरारी॥ महु किसि से उत
राई। कर जोरे कुवर कहाई॥ तव ग्यालद
हिसव भागे को उइतै चीतै उत भागे। दधि दे
तया ल अकुलानी। प्रभुने कन चित डर मा
नी। यक भाजन ले भजि जाई। इराइ रिह क
लेइ चोराई॥ तई कान्हू करे चीच कानी।
मुख अंचल दे मुसु कानी॥

१
 छः। मुमुकातमुषपरदेतअचलः
 नुरिचचलभामिनो। स्यामघः
 टाघनघरीआईमनदमकतः
 दामिनीः॥ कहतराधेचरनगहि
 केकाहुअवधरजानदे। की
 किनीउरमालमुकाकधकज
 यनिदानले॥

चोः। जबदेनलगिदधिदाना। तवअतिइतराने
 कान्हा। प्रभुमोनसाधिकेवैस। जोगिमुनीज
 जङ्गमजैसे। करिजुगतिअनकमनावे। प्र
 भुनेकननेनचीतावे। तवराधेतीहचलिआई
 मुनीलीजैवीनयेगोसाई। हमदासिसदातु
 म्हरि। तवचरनसुरपावनवारी। धनिजीव
 नधनपरिपार। प्रभुपावनदरशतुमारी। ये
 कवेंदीवयारी। डालाये। यकवीराधोलबिला
 वे। अवचाहीहसोवरुलीजे। प्रभूकपाक्षी
 रूनीअवकीजे। हरिलविगुजरिगतिमानी।
 हसियोलेसारंगपानी॥

छः। हासयोलेसारंगपानीसुंद
 रिमानीरतिवसिहोरहो। क
 रिफलीआनंदवेलीकुंजनीस
 हसरंगरसभारिहो। करिकी
 डामदनमोहनकमललोचन

राजहिः। दाम परमानंद सोभाय.
छतः कलीमल भाजहिः ॥

दोः ॥ १ ॥ दधि लीलायरस भारे स्पामा स्पाम विनोदः। जे नर गावहि सुन
हि नैरहे परमपुर मोदः ॥ १ ॥

दधिवेचन मेनाजा उगिहो अचराय कड मोसे की नुरार ॥ धरे ॥ लेम दुकि
सिर चलि हे गुजरियारे दधि दध करत फीरे यतना अरज श्री कृष्ण जी से
काहेये ॥ १ ॥

सिर लेम दुकी राधा पहिरे ले ले बीर दधिवेच चल ली राधा जमुना की तीर
॥ १ ॥ दधितो बी काई जे ली राधा रहि जे ले घोर कोने नगरी यो राधा मनव
सेतेर ॥ २ ॥ मुय तो मलिना देयो राधा अरु ल केस काहा बाग बालु राधा
अलख बयस ॥ ३ ॥ सुंदर बालव जनी राधा ली हलु मे गोद इह तो बालव ये
रमा सबर सलेत ॥ ४ ॥ नदिया के नीरे तिरे राधा यजे वसत ना जानु कोने फ
ल बालु बुधे ले केत ॥ ५ ॥ भनहि वीजा पती राधा मुनो वृज नाग धीर जारहु ये
राधा मीली हे मुरारी ॥ ६ ॥

मोरे पानी घटवा सावरे माई कठीन कन्हई ॥ १ ॥ धरे ॥ दधि मोरे बाये मठ कि
मोरे फोरे मायन दिखे छित राये ॥ १ ॥ चंद्र सखा होत बाल कृष्ण छवि रंग के
चरण चीत लाई ॥ २ ॥

गहरि मुठरीया यतना बीच मोरे ॥ धरे ॥ नाई हकानु नाई हकी नु गेल पानी
घटवा यतना बीच ॥ १ ॥ सासु नहि ली नु नन द नहि ली नु नु माहि गहाई से ओ
नु माहि ली नु ॥ २ ॥

सवालैगाउनेगीत॥बोलोमैगहुबारमाउपजलेहोधानदेउरामागे
खुशीभसुरवामारैहोसान॥१॥उमरिंकेयेरचुनारामादोकेरावाकेपा
न॥दमरिंकेनीकलीयालीलावामारैहोसान॥२॥मोरैपिछुहरवा
छिछिलीगछेजांदेउरामागेचलवामछरिया॥३॥

बलमुवाहोदेसवानीकलीयनजायेछोठामोटागछियाफल
केनफलकेबलमुवाहोगछियाउकटीयनजाछोठामोटापान
र्यवाहसकिनबोलकीबलमुवाहो॥१॥

तुमकोनकहाकेवेचनजातोदहिरेदहि॥धरे॥वृषभानवा
वाकेवेचनजातोदहिरेदहि॥१॥तुमकोनकाहाकीतुमहो
मोरैवाहारगईरेगई॥२॥दहिमीठीहेतेरीनरनारिनैआरे
नैजा॥३॥पत्तातोरैकदमकिलेमोरैछाछदहिरेदहि॥४॥मोरै
कोईछोयेराधाघाईवामैछाछदहिरेदहि॥५॥मोरैकोईछोये
कृष्णविछुरैकलवहिरैवही॥६॥मोरैकालीहेकम्बलतोहरी
नसारैनइरेनई॥७॥राधाकृष्णकोरुगरामनमुवदासगईरेगई

॥८॥

क्यानकीलक्ष्मनतेरेक्यादानतुमलेईदानीकाईववलीराजा
सरखसआफनेलेई॥१॥लेलेग्यालीनीदधिकेमातिबोलतकेसेवा
नी॥तीनीलोकहममोहलीयोहेवींझावनकीवासी॥२॥वींझाव
नकीहेयकवीधनावनवनगोवाचछाई॥

सचिरे आई है आज नई वृज मे आली नई न चाहुं से गर मचई हो
 जी ॥ १॥ हरिच वनु है अचलांगे के फति है चंदरि दे के जे हो जी ॥ २॥
 सचि जानतु है हम को छल से दधि वेचन जाहुं से जान नये हो जी ॥ ३॥
 हरि तु ने गाहा लहु वे हल जार त दो परे मन मे पछु ते हो जी ॥ ४॥
 सचिले ही छिनाई समे मरु की रस खाते परी मन मे पछु ते हो जी ॥ ५॥
 हरिय क मरु कि कर मोल नहि धर नै दज से दास मे तवी कई हो जी
 ॥ ६॥ सचि जो तु म हागे बडे यला के अला धि की रे सज न नयई हो जी
 ॥ ७॥ हरि धार मु चार प्र कारि कहु मो सो ठा कुर है थग हरि न कि जे जी ॥ ८॥
 सचि ब्रह्मा के मुरति सावली मुरति या लेले कुटी सु भ काने ज मे उ जी
 ॥ ९॥ हरि उ नहि तु म चाहे मोहन छादि दे है अफने गृह साही जी ॥ १०॥
 सचि काहुं की पेडा मे ओइ नु है सचि काहुं के पायल मे गदी जे हो जी ॥ ११॥
 हरि स प्र मे या उ व भानु व वा की कछु वन पे हो मरि कर धारि जी ॥ १२॥
 सचि जो रस के लल तु म चाहे मोहन गोर स है फिर सोर स नाही जी ॥ १३॥
 वृष भान के सुंदरि मिषी दे जाउ भले हरि भी कुक आज तु हागे जी ॥ १४॥
 प्रभु के वेज गे व भय मे न मोहन मो से जग की य छल मा हा जी ॥ १५॥

लेहु न दधि न आये मा घन चलो मथुरा न गरि ॥ मथुरा गोर समाहार गर
 धावे चन चली ॥ १॥ वेची यची जव यति लपते ली मन पछु याये रहि ॥ सुत
 ल क ३ म ३ डरि छे मो नाहा कल्लवा हागई ॥ २॥ छा डो क नै यां मार अ
 चल हम तोय हापरहि ॥ तुम गो कुला की बका जमु नानी कटव ही ॥ ३॥
 लेहु मे हात के भुनार और गज म कुट के हाड ॥ आजु के रे नी रा धावे सिले
 हु मोर उतागे गि पार ॥ ४॥ आगे लगई तोर मुंदर वज्र प्रहाउ घनी ॥ ओ से न
 वाली वोलतु मुनी यक सवुवा ॥ ५॥ भनये वी आ पति गायल मुन राधे वृज ना

१॥ पूर्वजोलीयलफलपायेजोकधुलीयाहेली॥६॥

येवीवरमोरदहिलेआई॥६॥ आजकाहामारेरोकटतोकट॥ लालनग
रकावर॥१॥ नामातामोरैगहनाराया॥ वाजुवदअवरनीमोल॥२॥ चंद्र
सविहितवालकृष्णछवी॥ राधाकरतनीहोरदहिलेआई॥३॥

चवालेहोलालमेरादहि॥६॥ तौरैमथनीयांमेदहियाजमाउ॥
चायलेपीयाचायले॥१॥ श्रीवृंदावनकीकुंजकलीलमें॥ मटुकिरे
पिया मटुकीलुटलेहोलालमारेदहि॥२॥ चंद्रसविहितवालकृ
ष्णछवी॥ रूगडारेपिया रूगडामचालेहोलालायेरूगडा॥३॥

माहारेगलुटेहोरानकान्हा॥६॥ आवमारेकाठराधीलेमारे॥ छा
दिरेमटुकीकुंटेहो॥१॥ चंद्रसविहितवालकृष्णभजो॥ लागिलगत
केसेछुटेहो॥२॥

दहियाकाहुहमारेदहिलुटेअवदीलदुनेला॥६॥ हासतयेलतमारे
रससवीरसभैलोरससाविरसभैलेना॥ सविकैजभवनसंगछुटेअवदि
ल॥१॥ कान्हामधुपुरगैलेकान्हामधुपुरगैलेकान्हामधुपुरगैलेना॥ स
वी नुटेलानैनानहिसुअवदील॥२॥

गैरेसदरियायतावीचमारे॥६॥ नाइकहानुनाईहकीज॥ गैलेपा
नीघटवायतनावीच॥१॥ सासुनहिलीनु नन्दनहिलीनु॥ नुमहि
गछाईसेजानुमहिलीनु॥२॥

बोलो मे गहु बारा मा उ प जे ला हो धान दे उ र मा गे सु दिय वयु र
वा मो रे हो सर न ॥ १ ॥ द म रि के स डे चु ना र मा डो करा के पान ॥ ह
म रि के ती क ली ली ल दू वा मो रे हो पान ॥ २ ॥

व लै वु वा हो दे स वा नी क ली यान जाई ॥ क र् ॥ छो डी मो डे ग छि
या फाल के न फुल कि ॥ व लै वु वा हो ग छि या डु क बी यन जा ॥ १ ॥
छोटे मोटे पाट ये वा हा म के न बो ला की ॥ व लै वु वा हो दे स यन
क ली यन जाये ॥ २ ॥

का रु ने लु ठ ल गि मा धन मो रे घाई म डु की मो रे फारे ॥ क र् ॥ जे सा
म ति सु त सा ठा डे ग्वा ली नी ॥ आ जु आ जु कर जो री ॥ १ ॥ सु र भ स्या म
से ही नी क नै या ॥ रु क ड रु क ड मु सु का री ॥ २ ॥ ह रि के नु म हा री क ल
री का ॥ आ जु आ जु कर जो री ॥ ३ ॥ चै द्र स वि हि त वा ल क र् ॥ छ वी ॥
ह रि के च र न ची त लाई ॥ ४ ॥

दा धि के से म थो म थ नी या द धि के से म थो ॥ क र् ॥ अ व न डो ले प व
न डो ले डो ले सा ले डु नी यां ॥ से स ना ग फ नी या डो ले ना ग के म थ नी
यां ॥ १ ॥ ठु म क ठु म क मृ दै ग वा जे वा जे तो वे जे यां ॥ सु मु क सु मु क रो व
न ला गी अ व तो ल दे या द धि ॥ २ ॥ ठु म क ठु म क चाल चल न वा जे वे नु वा
मु री ॥ ना च त गो पाल लाल दे या मु री ॥ ३ ॥

स्वामकहेया तुम दधि मोरे लुटे ॥ ध्रु ॥ कहवा कहे या तेरे जममयो
हे ॥ कहवा वाजीरहि आनंद बैठे या तुम ॥ १ ॥ मधुरा मे काहाजी का जन्म
भई हो ॥ गोकुल वाजेरहि आनंद बैठे या तुम ॥ २ ॥ जमुना की नारे का
हा गौ वा चछाये ॥ काला कवर वरणा बैठे या तुम ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभू
तुमारी दरस को ॥ चरण दुजीयो मोरे भागी बैठे या तुम ॥ ४ ॥

छाशे मायन मरुकी वीहारिलाल ॥ लागे तेरे पार काहा लागे
तेरे पार छा ॥ गले सोहे वैज्री के माला ॥ काहे मे कुंडल लटुकी वी
हारि ॥ १ ॥ बडे बडे जीरया राहा मुन ही माने ॥ हरफिर दार सार मरुकी
वीहारि ॥ २ ॥ मे दधि ये चन जात वृंदावन ॥ छानी लीये मेरे मरुकी वीहारि
॥ ३ ॥ सुरदास प्रभू तीहारि दरस को हरिके चरण चोत लटुकी वीहारिलाल

॥ ४ ॥

केसे देतो लाल जीके गाली गाली प्रेम पीहारि ॥ ध्रु ॥ वाके माता जसो दा
रानि ॥ दधि मथते जन्म सी लाइके ॥ १ ॥ वाके वै हि सुभद्रारानी ॥ वीनु बाहा
करत वीहारि ॥ २ ॥ वाके फुफु सुता देहोरानी ॥ तान अर्जुन हे लाला अर्जु
न जैन भसु धारिके ॥ ३ ॥ वाके नैद पीताम्बर धारि ॥ जडु ये सी कुल कहारि ॥ ४ ॥
वाके रोति वी डुर घर बायि ॥ वीनु घर घर मदन वीहारि ॥ ५ ॥ वाके सुरदास क
वी गावै ॥ जनम सु फल फल पाई ॥ ६ ॥

कोसे जाउ मथुरा मे वसत हरि मे ॥ कुं ॥ गलीया की गलीया फिर्त नमो
दा ॥ सीपा महु की वी काम डहि ॥ १ ॥ इत उत गो कुल उत मथुरा नगरी ॥ जहा
रे कहे या मोरे भैया पकडे ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु नु मा रे दास को ॥ धन मथुरा धने
नगरी ॥ ३ ॥

मोहन राधु दीव दावन मे ॥ कुं ॥ कहा मेरे हार कहा न कवेसर ॥ क
मोती न की लरु डी ॥ १ ॥ वरज ज सो वा अपने लाल को ॥ रुक मोरत
महु की ॥ २ ॥ सुरदास प्रभु ति हार मिलना को ॥ सर वस दे जवाली नु
हो ॥ ३ ॥

वडा मोरे आये काहा दहियान विनी रे ॥ कुं ॥ आगी लगी तेरी
मथुरा नगरी ॥ या तेरी जो कुल नगरीया ले ॥ १ ॥ दधी मेरी या
इली महु की के से राव ॥ २ ॥ उत जे डुरा डेत छ हवा डरे ॥ ३ ॥ सुर
दास आस आस बजवा ला ॥ मावन वी कानी मेरी छाछ
ना वी कानी रे ॥ ३ ॥

कीने वरीया जीलो गोपाल मोको वैराग निकरी के ॥ कुं ॥ सिरी
या के दोलीया कुल बाल रितो ॥ माली नीये भला माली नीका
भेस जाउ मो को वै ॥ १ ॥ कोरी कोरी मथनी आ दधी या जमानो ॥
जवाली नीये भला जवाली नीका भेस जाउ मो को वै ॥ २ ॥ चंड सखी
हित बाल छ भजो ॥ हरी के ये भला प्रभु के चरण चीत लाउ
मो को वै ॥ ३ ॥

राज ठ मरी ॥ ॥ काहा अँसी नीधुरे मनाये नहि मानारे ॥ धुँ ॥ जाई
गोकुल मेधु म म चाये ॥ मायन दुद चोरयो नहि मानारे ॥ १ ॥

कथिन हीयो रिमाई जसो दातेरी ॥ धुँ ॥ नदन नदन दहि के कारणा ॥ वा
ह पकर धर ल्याये जसो दा ॥ १ ॥ प्रेमन की सुरनर मुनी मोहे ॥ देस गृह त्या
ये जसो दातेरी ॥ २ ॥ चंद्रस विहित बाल कृष्ण धवी ॥ शिके चरणा चीतला
ये जसो दा ॥ ३ ॥

चौ ॥ लषता हासी सुदोये अयाने ॥ भीर दे
बते रोये दराने ॥ इत उत देव्या गोरस ना
हि ॥ उच्ये छ मोसिक हरन माही ॥ तव म
न मोहन रच्यो उपाही ॥ आनी ताहा दुव
ल ओ धाई ॥ तापर येक सचा वैगारि ॥ ता
के कंध चये बन वारी ॥ अँसे विधी करि
गोर च पायो ॥ दहि मायन सवहि मिली
यायो ॥ हृद दाडी वछरो सव छोडे ॥ दीया
नी कासि वनहि के वर ॥ महि छोर की लडी
कन दर पाई ॥ चले अग्र करि सचा के हैया ॥

दो ॥ ज्वालीनी अवत देखि के पया गये सब डोडी ॥ फसि भीतर मे
हन पंडरो की लई तीन पौडी ॥ १ ॥

सो ॥ ॥ रोव भरि मुख वाद प्रेम मझा अंतर हियो ॥ कहत महर के ता
न जात काहा दधि चार अव ॥ १ ॥

चो १०४। कछु ग्वालन की आहत पाई सो पुनी
फेरि घर ही फिरी आई देवो सवास चले
पराई पकड़े ग्वालीनी धाये कन्हाई ॥
और न जानी जान मे दाहे तुम की न जान
अच करि की रहे वाहा पकड़ी ले चली ली
वाई। कहत ये सो मति देवो आई। उर ह
न देत सदा रि समा न्यो अव अफ नो सुत
आफ पिछा नो ॥

दो २। वहे उर हुनो नीने को सज्ये करन के काज। मे गाह ल्याई स्या
म को बाध पकड़ी के आज ॥ १॥

सो ३४। हरि बैठे नीज धाम खेलत जनन के नीकत। कोतु कनी धी
घन स्याम करन चरात सेतन सुषड ॥ ५॥

चो ४। य सो मति सुनी ग्वालीनी को वानी देव
न चलि सुत ही अकलानी। गये ताहा हे
सुता पराई देवि ज सो मति अति रि स आ
ई। नेरे आवन मति हीन ना ही वदन दे
यो पही चानत ना हो। देयु रीया की गति
माई। या के ल्या को कहत कन्हाई। ते जो
मेर सुत को नामा सुधो करि पायो हे स्यामा
तुगई वाह को न को ल्याई खेलत मेरी धाम
कन्हाई। जान वध ना कछु फहि जाई रहि
ग्वालीनी ठी गि सी सकु चाई। महरि कहत व
ली जाई आहाते। मे जानत सब तु हरि वाते

हरिको चरित का हाकुं जाने ॥ ग्याली नीत न डुरि मुः
रि मु सु काने ॥ हरि ने हारि चली गृह ग्याली ॥ पुछी
हरी नीने स्याम मत माली ॥ ४॥

माई मोई लगत वृंदावन नीको ॥ धर्मे ॥ नीर्मल नीर वह जमुना ॥
भोजन दुद दाहे को ॥ १॥ जमुना के नीर तिर पिर त रांधी कज ॥ सद
सुनी मुरलिको ॥ २॥ रत्न सिंहासन आपु वीर जे ॥ मकुन धरे मुर
लीका ॥ ३॥ घर घर ठाकुर मथुरा पुजे ॥ दरसन गोविंद जी के ॥ ४॥ तुल
सिदास आस चरणा को ॥ हरिके चरण चीत लाई ॥ ५॥



गुरीवसुकाविमलेश्वर

श्रीनगलीला

चोः ४०॥ शिविनारदहरि भक्तसुधाने
 प्रभूकेमनकिरुचोपहिचाने। गाव
 तगुनहरिपरमहुतासागयतुरत
 मधुरानृपपासा। देखीकैसआद
 रआतिकीनोः करिउदवत्वरसन
 दिनोः। येडोउवृजमेनंदकुमारा
 जानीपरनमोहीकोउअवतारा।
 कहतबेहिबलरामकहाईतिन
 कीगतिमतिजानीनपाई। तुरा
 वर्तसेदैत्यपठायो॥ सोउनयलई
 कमाहीनसायो॥ अवमुनीतुमक
 हुईवीचारा जेहिबीधीपारहुनंद
 कुमार। मुनीहारिकेगुननीकेजा
 ने। मुनीनृपवचनमनिहिमुमुकाने

चोः। येकवातभरेमनआवेकरहुकैस
 नुमकोजोभावे। कालीआहिरेहेना
 जमुनाआइताहाकमलफुलेवापु
 लाई। फुलताहातेमागीपठावहु
 इतपैठेनंदहिदरपावहु। यहसुनो
 कैसबहुतसुखपायोभलोमैवमुः

दो
 भ

१४
नी मोहिबतोपाः। धनिधनी कहिपु
नीपुनी सिरनावनः। हरवि चलेमु
नी हरिगुनगावनः। ४।

चोः। तवही के सई कडुत बुलायो वृजहिः
नीदके पास पठायो। दीनो ताको पत्र
लीघाई कहियो येही नीदको जाई
कोठोकमलकालीदहके केरेपहु
चाले काल्हि सवेरे। कैसरगजअति
काजमगायेवानिहेतुमको नुरतप
ठायो॥ चल्पोडत आनुरवृजधाई
जानीलेई सबकुवरकहाई। १।

चोः। तवही चल्पोडत जब आयो नीद सह
रघरहिमे पायो। कालीदहके फूलमः
गाये ताकर अतिदात पठाये। जोन
हि मोको फूल पठावहु तोको डुवृजमे
हरनन पावहु। गोपनीद जीते काडोरे
मारनराख्यो यका। जोनहि कालीकः
मलमे पाउं। तोदो डुसुत मेरे बाधिमः
गाहुं।

दोः ४। येही सो चसवमीली पगे नहि कहुनीरवारः। वृजभितरनीद
भवन् मे घर घर येही वीचारः॥

सो ४। अंतर्यामी जानी बेलतते आय घरही देवत ही नंद
रानी दुग भरली बेलगाई उर ॥

रग ॥ अति सरूप सुंदर बाला का हासे तुम चली आये ॥ १ ॥
अगम ये धकी अंत न पाई का हासे तुम चली आय हो ॥ धकी तभ
इही सुंदर बाला वैठे मुरली बजाई हो ॥ १ ॥ नहि दलही नागीनी
की छु कोहि मागन आइ हो ॥ तुमारे दान हम नहि लेवोंगे अब
रहि काम सुधाई हो ॥ २ ॥ गोकुल हमारा जन्म भूमी को न तुम
रा भाई हो ॥ कोने तुमारे जात वीसि कोने काम सुभाई हो ॥ ३ ॥ गो
कुल हमारा जन्म भूमी जसो दाह मारा भाई हो ॥ जात हमारा य
दुवीसि कमल तोडन आइ हो ॥ ४ ॥ कमल फूल की नाम न लेउ तौर
न काहायाइ हो ॥ जवाहि जागे काली नाग तुमहिनी श्रय बाइ हो
॥ ५ ॥ क्या बोले नागीनी मोहि हमारा अंत न पाई हो ॥ दुल्लभ तु
हम सो बिले कैसे नाग लेयाइ हो ॥ ६ ॥ झरले हो कमल की फूल व
हुत दरसन पाई हो ॥ हम के देखावो उठन नागीनी बहुत दरसन
पाई हो ॥ ७ ॥ तोडे देखावन कमल की फूल कोने काम सुलाइ हो ॥
कीस की घर अस्व मे धजगे हे सिर की कमल चाहीये ॥ ८ ॥ वीन
निकरे हो सुंदर बाला तुमारे पाप समाई हो ॥ सीर की कमल दे
बने तो नाग मोहीनी जाइ हो ॥ ९ ॥ नाग जागे तुमारे जाने हम क्या
देखाइ हो ॥ जागे जागे काली नाग काला पुरुसन आइ हो ॥ १० ॥
समझे तेरा माता पिता समझे तेरा भाई हो ॥ समझे तेरा ईश्वरी व
काली नाग नेखाइ हो ॥ ११ ॥ नंद जसा दा माता पीता बल भन्द जोहे
भाई हो ॥ काली नाग के वीधन तो दुग रुड मीचन आइ हो ॥ १२ ॥ आइ

महावीरगरुडमीत्रदेवतनागवाधीहो। छलबलकरकेकछुन
हीलागेनीत्रादियेडुईयाईहो। १३॥ नागहारदेवनकेसंपुकारे
कृष्णजीआइहो। नागहारिकेमकीयारिमथुरासमुझाईहो। १४।
जाकोअजनकोहीनपाईविभुवनकोप्रतिपालाहो। कालीमथन
जीसनेउठीगावतमनसुखपाईहो (१५)

१६। सुभधारिसुभदिनमैगलनैदकोवालबभये। धनदेज
सादाभागेतेरोगोकुलकिडुबहरे। १७। बोलाइयेवृजगजपीडित
सार्थीयेसुभकेघरि। सुभघरीसुभदिनमैगलआफुप्रगतेनरहरी।
१८। यकसमेहरिगोपीकारनयेतमनहरलेचले। जाहासीततारनके
समारनकृष्णप्रगतेनरहरी। १९। यकसमेवहरिफूलकारनकृष्णवन
मालीभई। जाहानैदकेसुतगेदकारनकुंदिजमुनामपरि। २०। कुदि
जमुनामेपरिसवसवारहेदिलयाईके। जाहानागनागिनीसेनसा
वेकृष्णपहुचैजाहाभई। २१। देखीतेनागीनीसुंदरवालबकाहासेनुम
चलीआइहो। ननुमारेखवरपाईयेनागउठीरसिआइहो। २२। कर
जोनागिनीहरिसाजाबवालबभागीके। हुनीहुबैसोहोयेनागीनी
नागकेनाठेवनी। २३। पिढीठोकरनागजगोयेहातकातावरदिये।
जाकोसहश्रफनीफुकारननागकृष्णसावरहोगये। २४। यकसमे
हरिमुरलीतेरीगरुडकेआग्याभयो। आईगरुडदेखीनागनागमु
ख्यहोगये। २५। गरुडनयनवीसालवाडुलुकेठहामीनीधाईके।
जाहानागनागीनीफुयलाहीनीगोकुलाकीडुबहरी। २६।

चो ४) वोलाउठे आनुर वलगा मावें देयो
आवत घनस्पामा। सुनत वचन
लखिके उठी धाय जमुनानीरतिर
वस आयको हुजल मेको उवाहर
ठाड दरसातुर वीर हानल वाछे ॥
प्रगत भये जल तेने हि काला वृज
जन जीवन नै देके लाला। कमल भा
र काला परलीने नट वर भेष मनो
हर कीने। भय सुखी सव वृज कीवा
सि लखि हरि वदन परम सुख गायि

(१)

छ ४। हरि चडन लखिके रासि
सुख को मुडीत वृज वासी
भये। पनहु वदत नावपा
इ पर मउर आनै दछये
मातु पोतु लखि जो भयो
सुख जात सो काये कस्यो
पुलकत न मन हरि धिगड
गड ये मजल लोचन वस्यो
चकीत हरीत नल वतई
कतकः मिलन को आनुर
हियो। स्पामनीरत नज
हि फनन पर धोर नैनन

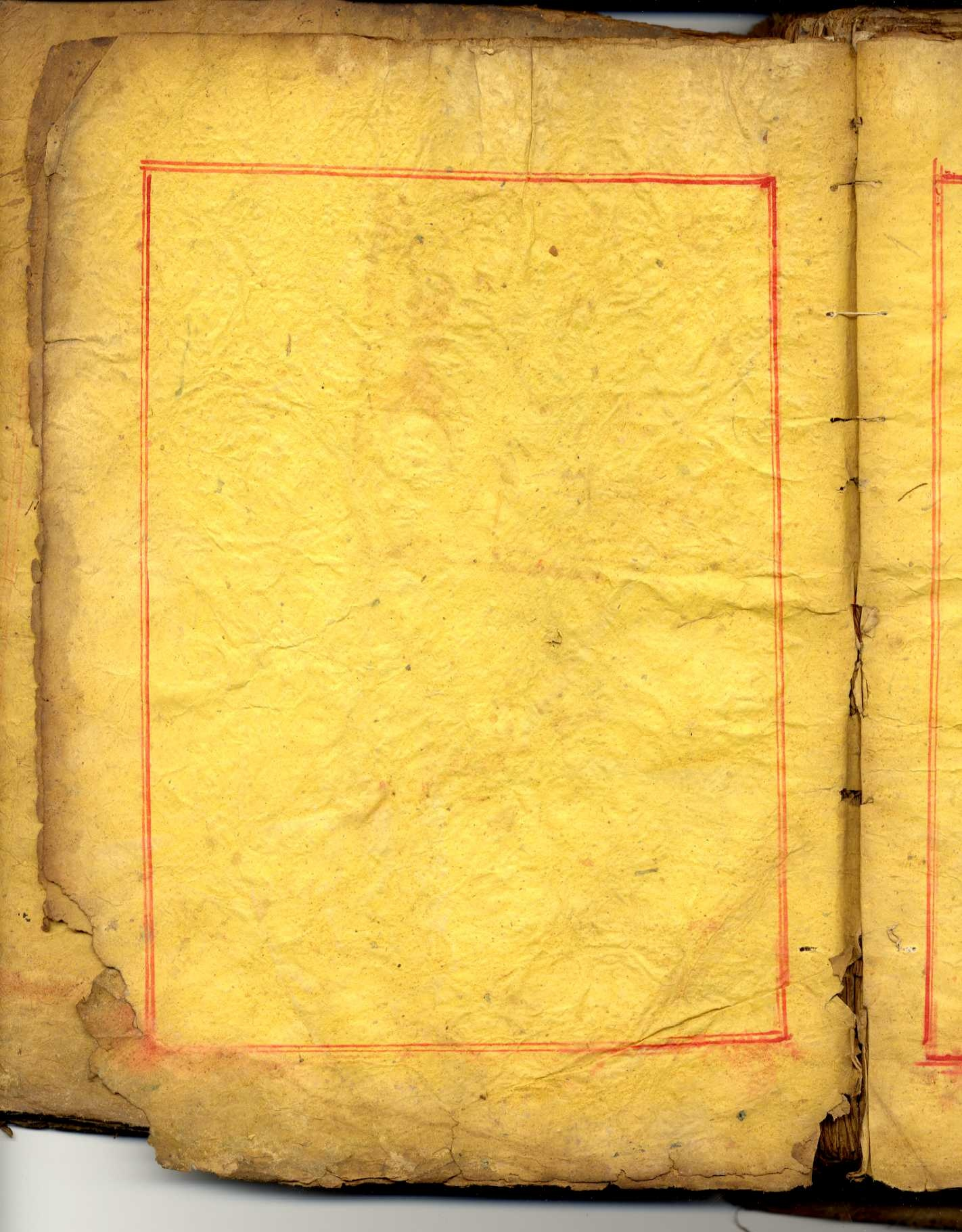
कीयोः। सवनकेदललाललोः
 चनचारेमकृतवीराजहीः।
 मनहुमकतगिरीरिः वरः
 मनिमोरतायरराजाहेः॥
 पतिपतकटीकाछनीपुरमाः
 लमानिभुवनसजेः। नृतेती
 डवकरतफनबोमदीवडुः
 डुभिवजेः। भईजयधुनीगग
 नवर्षहिमुमनसुरआनंदव
 डेः। गगनगंध्रवगुनगावत
 तानतालनअनुसरेः। डेर
 गनारीरामसनमुवकरत
 अरुनीआवाहिः। नाथअव
 अयराधेमिकरीकररुपा
 पतिपावाहिः। रावेचररानी
 जमिसयाकेअतिवडाईइ
 नलईः। ओसिवडाईओरको
 प्रभूनाईतुमकवहैदईः। से
 थईकवैह्लाडभरिसिरराधि
 मनगवीनकीयोः। कोटीको
 दीर्घह्लाडतवतनअधिकई
 नयहभारतीयोः। सुरअसुरन
 रनागयगमुगकीतजनसव
 रावेरेः। छेमीयअवअयराध
 ओदेकेसुभगसेदरसावेरेः॥॥

सा ४) ततपर कमल धराय काली को आयो सुधीयो उरग दीप अव
जाय करहु वासनीर भय सदा ॥

चौ ४) आज वसे जो जमुना तीरा अतिरम
नीक सुगंध सभिरा ॥ यहा कीजे भोग
विलासा ॥ होत प्रात सब चलाहि आवा
सा ॥ कमल पठाये कैल को दीजे ॥ सुनहु
तात अव वीलीयन कीजे ॥ नैद राये तव
सकट मगाये ॥ कोटी कमल तीन पर
लडवाये ॥ कमल सकट दधि घृत के
भारा ॥ चले गोप लेनृ पके दारा ॥ पुनी
सपारी धीर जउन कीहोगो पन बोली
भीरली हो ॥ सरू पाय नैद ही को दी हो
कहियो काज बडो नुम की हो ॥ तेरे सु
त बल राम कहाइ ॥ एक दिवस देखि
हुं बुलाई ॥ यह सुनी अति पुरुषारथ
की हो ॥ काली रह के फूल नली हो ॥

पञ्च

१९



[Faint, illegible text within a red rectangular border, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

जलभरनलीला

चौ ११ पनीघटयमुनाकेटतमाही ठाडेस्पा
मकडमकीछाही। सखावृंदचहुवोखी
राजे कोठीकाम छवीनीरखतलाजे।
सीसमहुककीलटकसुहाई सुरंगीषो
रकेसर छवीछाई। कुंडलरुलकअलक
घुघुराई कैठकनक कैठीडुतीकाशि।
चतकीलीलटकीवनमाला परसतिच
रणा सरोजवीसाला। मुक्तमालमनीमा
लसोहाई उरवीसालपैअतिछवीछाई
अरुनअधरदसननडुतिनीकी मुरमुसु
कानमोहनीजीकी। चटकीलोपटपीत
वीराजे कटीटत छुडघेटीकाराजे। भोज
वीसाल भुवनयुतसोहे करमुंझीकामुदि
तभनमोहे। तनघनस्पामरसालेनेना
हसि हसि कहत सवनसोवेना। कन
कलकुटीसोपगलपतान्यो भुवनस
हितनजातवधानो। गहीडु भदानी
शिछेठाडे अंगअ अनुपमछवीवारे ॥

चो ४। हरितभूमिचहुवर सोहाई मनहुः
काममसनैदवीछाई। वहतसमी
रधिरसुखदाई सितल अधिकसुगी
धसोहाई। वहतयमुनावाहुलतेपुरी
परतभवरजहतहछवीरुरी। उठसा
मजलसुभगततरंगा छवीतरंगजीमी
हरिकेभीगा। याछवी सोपनीघटहरि
ठांडेसीवगोपबालचहितवारे। यमु
नाजलतीयेभरनन जाही ग्वालभीर
देखतसकुचाहो॥

सो ४। रहेगगनघनछाये सुधदछाह सितल कीये। वरवा
रीनुकोपाये नीरधतभुतनैदरायेको॥

आलीको कुवरकाह वरजे मोरेहिया रा सोलरजे। धुईयेत
हिचनुरछलवलनकरत कललगाहिरहतसंगतेजतनयेक
छिनछलवलकरतनदरत काहुकेदरेकैसेकरीजलभाजे॥ १॥
नृपतछवाई यहवृजकेलोगाई अयनाहाक कलकलाई कर
तहसाई करनया पानीवरजे॥ २॥ कछननन्दनन्दकेडुहाईन
लाईनागो भुजवलगाहतचलत पराई कछुडुजाईमाईवांसु
शिवजाई कैसेकरी पानीवाजे॥ ३॥

राग — ॥ नीरदाहस्पामनेछिनलीपानीघटपरमेरिगागरी
 याः ॥ १॥ नीरभरननीकलीगृहमेकहिकागाबोलीगईमागरीयाः
 दहिनेदाहीजोरवीलाईगइवापाकरछिरकरछावरीयाः ॥ १॥ जमु
 नाकेनीरतरिछेनुचछावैवठेकालीकमलीयागृमीकारसर्वा
 सबघरलीयेसर्वगुणपरिआगरीयाः ॥ २॥ चरिचीठीऔरभीजी
 पीठीचुदरिलीयेसारीघागरीयामनउठतकोधननथरथरात
 पगुपरेनमुझदागरीयाः ॥ ३॥ अरजपरजमेकोनहिमानेसिरवाध
 नतोरियागरीयाः मोहेजानअकेलाघरलीयेवसेदकावतनाग
 रीयाः ॥ ४॥ ईतगोकुलउतमथुरानगरीपरकृष्णसेनागरीयाः सुर
 स्पामवरगोवरनअधियाअवनवसवरीरीवागरीयाः ॥ ५॥

॥ १॥ भरनकोईपानीयाडाजातआगेआगेमैचलेहोपीछे
 वेरतसाथमैजीवडरतेआपनेकोकोउपुछेवाटभरना ॥ १॥ जमु
 केनीरकदमकिगछियाहरियकदेमोरगातछाडोछाडोनन्दके
 लालायतनावाटभईहैबहुतभरन ॥ २॥ जमुनाकेकदमकीग
 छियाहारेनीरयेमोरगातसुरस्पामप्रभुनुमारीदरसकोह
 रिकेचरनचीतध्यानधरात ॥ ३॥

हैं—॥ अवनजाई जमुनातीर नार भरन जाये। १॥ जमुना जल
 भरन जातो मधुर मधुर कहत वात। लहकी लहकी दहकी दह
 की लायन गाली या हो। १॥ यकला से लट परा तो यकला से धरत
 धाई। यकला से वाहा गई अवत मुसु कहै या हो। २॥ वीच वीच
 गोपी गोपाल वाजे तघन न मुरली वाजे। तत तत तत तत ठैया ठैया
 नीरत कहै या हो। ३॥ बरहन हम सप्रदी हुं ज सो दान हि माने।
 भक्ति दे हो मो कौन दलाल के छो दे या हो। ४॥

हैं—४॥ लाला मत रो की नारी तो वीरानी। १॥ हम तो जाते
 जमुना जल भरने को। तुम वाल चहाम सानी। १॥ मटु की को
 रें वे आं मुरारे। आरे सविनु मजल दानी। २॥ जाये पुकारे राजा
 के सकी आगे। उतारे जाऊ तेरि पानी। ३॥ चंद्र सवि धर जान
 दे मोहन। चरन कमल लय टानी। ४॥

हैं—॥ जमुना जी मैं कौन गली से जाई। १॥ येहि गली से जा
 उतो सवि सव। रोक टल कहै या हो। १॥ उंस गली से जा उतो सवि
 सव। रोक टल धर दाई। २॥ डेर भये हाम जान दे मोहन। जल भ
 रने को आई। ३॥ मुरदा सप्रभु ते मारी दर सकी। सवि सव चर
 न पारि। ४॥

लाउनी। चारदेसकी चार गुजरिया चली जाति जमुना नहाने अ
 फने अफने बोली मिलगी कृष्ण को समुझने ॥ ७॥ पैली सखी
 या कहै ही डकी हात मति पकरो मेरा में सर नागत है सावरो ली
 ये आस रा मेनेरा ॥ छोटि उमेर मेरा बाला जो भनू आन दीयो
 मुर पर घेरा सासु हमारी देंगी गारी छोटी नन डुमारे ताने ॥ १॥
 ह्मछा सखी बीकाने री पाछिम दीसा ह्मारे घर छठे काही करे
 छो बीद रोबोलपुरे ह्माने दरछ गेली बा टठे काही करे छोठा
 को ह्माको जल भरसि मे गेली ठारि छे छो बिली की रा छव सिठा
 रे पगामे हात धराछो ह्माने देवठे घर जाने ॥ २॥ सखी पंजावन के
 है दिक्क भनु की सानी दसदासि साहि इह मजला बडुरुह
 त जाव अफने बीगाने नाल बसदासि जेरीया गह्मातु कर दो
 सी जेरिया साहाजुग जाने ॥ ३॥ सखी पुर्वनी कहै कृष्ण वाक
 नगुना मोहै काछुका तोहै कावर जतहु नन्द सो कईयो प
 ठेयो भीनुम् का ससर डु करि यामार बुराहे वात कहै
 हमको मुरका हर नाम पुरिने चार बोली या कहै सभाके
 छुर म्याने ॥ ४॥

राग ॥ सखि री मे पानी यां के से जाउ ॥ ५॥ सखि नाघान
 टपट काम कुनवा ॥ कर जधि पाये वीसिवत जमुना टट ॥ १॥ उच
 कीउन कीतन देख अचिटर ॥ करत धीताये वीसिवत ॥ २॥

राग ॥ जमुनातन थारेरे गुजीयां सविनेदन नैद वृजराज
 स्पाम ॥ धरे ॥ जैगल जैगल सुनो साज पारिहे ॥ जैगल बोलेयां सुरि
 या ॥ १॥ ग्वालवाल सगलीयो हे ॥ कृतमकुत की कर छेयां ॥
 २॥ मेद धिवेचन जातो वीं झाये न ॥ पकरली मिरि कर छेयां ॥ ३॥
 सुरदास प्रभु नुमारी दर सकी ॥ वाडी कडम की या जुरि छेयां ॥
 १४॥

नीर भारि स्पामने छिनीलीये बीकुटी घाट मोडो अविद्या ॥
 मोर मकुत केरुल क देखाई ॥ कान मे कुंदल लटनीयां ॥ १॥
 बुनी बुनी कलीया ॥ सेजव नाई ॥ मोरि जिया लेवन मालीनीयां ॥
 २॥ सदा हमारा फुल गुलाफी ॥ पतम हमारा फुल गुलाफी ॥
 मेकली वेंनी सुख दालनीयां ॥ ३॥ लागी लगत से जीया मे परि
 गये ॥ बेतालाल चतको चेत नही ॥ ४॥ कहीयो दील दार सुनो
 जीया मेरी ॥ बीतवन चोली दासनीयां ॥ ५॥

राग ॥ रोके मोरेगाग शि यानुमकेसानेदलातरे। धरे
काछेनोकछीनीयाबालेवठनेदोसवारे ॥ सुधमेमुरलीयासोहेवही
नंदलाताहो ॥ १ ॥ कानमेकुंरलसोहेगलेमोहनमातारे ॥ ताननत्री
गावेमोहेलातावुजवातारे ॥ २ ॥ साथपाचसधीयामीलीपानीयाकेचल
नारे ॥ कदमुकीछैयाछैसानेरानंदलाताहो ॥ ३ ॥ काहेकीमकुटीफोरेक
हेमेरिरुवारे ॥ कहुकीअंगीयाफोरेकमैनंदलातारे ॥ ४ ॥ गावेमीयानानसे
नसुनोवुजवाताहो ॥ वुजसेकहैयाआजुभैयामनवातारे ॥ ५ ॥

राग ॥ ॥ येकलामनजाइराधाजमुनातीर ॥ ६ ॥ राहावानमेठकहीला
गतहै ॥ मोहेनस्यामअही ॥ ७ ॥ जबवैगोघादेहोगगरियाकोकरिरावोधिर
॥ बाकेपारनेजलहुमेफलगयेकालिंदीदिययेही ॥ ८ ॥ बीउफासीबीउभुजबलमो
हेबीउफासीबीउतीर ॥ सुरस्यामप्रभुआनमिताउछिनछीनजानसरिर ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ भाननदेहोवुजलालगागरियागुगारे ॥ ९ ॥ सासुननदकीधोरिगये
पानीघनवा ॥ छडेजीयाबकुलालगा ॥ १० ॥ हमारिसंगकीडरनीकसीगयेजी ॥
हमकोरावोवुजभाइ ॥ ११ ॥ कंमकीमेठाउगडेअरजकरनुहैजी ॥ माननहीनंदला
तगा ॥ १२ ॥ सुरदासप्रभुमारिदरमकोजी ॥ हमचरगाकीदास ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ काहावंसि बालने गागरिया मोरे फोरि ॥ कू वानही घात मेरो कननो क
 द ॥ छीनी लीया काहा सीर के गागरिया ॥ १ ॥ सब सवी येन मीली भरज कीयो है ॥
 कहियो नंदरानी बाल गोयाल ॥ २ ॥ हमारा अर्जि सुनी ले हो राजा ॥ काय का अ
 सीरु हनु डरवन कीयो ॥ ३ ॥ नंद हीरानी को भरजीन पाइ ॥ कव मेरि हे माता ड
 बन ही देउगी ॥ ४ ॥ तव गोपीनी मीली संग लगाइ ॥ कृपा कहोर वीये स्याम हम
 रि ॥ ५ ॥ मैया सीनी का कौन भरोसा ॥ कहैया लाल को भरोसन होइ ॥ ६ ॥

राग ॥ ॥ वृजवंसि के लाल क्यो मोरे गागरि क्यो पकरि ॥ कू ॥ गागरिय क
 रि मै भजन जानुरही ॥ मोनिके माता क्यो रुट की ॥ १ ॥ मैज मुना जल भरन जानुर
 ही ॥ छिपी लीये मोरे सीर की गागरिया ॥ २ ॥ जाये पुकारो राजा कंस के आगे ॥
 न्याये नही मथुरा नगरि ॥ ३ ॥ चंद्र सखी हिन बाल दूबी ॥ दरसन खातिर मैं अ
 टकी ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ होजी दील न उदासी स्याम मीने: मीलंगीर घुबीर ॥ कू ॥ अंत
 रज्यामी घट वासी ॥ हरि ने मोहत गाइ प्रभु मोहत गाइ ॥ १ ॥ बाट घाट बीटा बने
 धुरे ॥ धुई वनारस का सी हो ॥ २ ॥ जानरही न मुना जल भरे ॥ कृष्ण रहे बल हा
 मि हो ॥ ३ ॥ कहे कबीर सुनो भाइ साधु ॥ येह पद ग्रहा हम गाइ हो ॥ ४ ॥

रागः ॥ ॥ जानारे जमुनापानी मोहन ॥ कर्क ॥ सीरपूषाघरापरशरी ॥
 गोदबालववाभारी ॥ १ ॥ हमारीसंगकीडरनीकसीगइ ॥ हमकोबदरवानी
 ॥ २ ॥ बाटहीघाटमें रोकनबोकट ॥ रोकनाहीवीरानि ॥ ३ ॥ गागरिमेरे ॥
 या मुगरी ॥ मोनियानाकेलरदोरी ॥ ४ ॥ जायेपकारोराधाकंसराजसो ॥ मेली
 जानोथकरानी ॥ ५ ॥ चंडसर्षाहीनबालकनछवी ॥ नुमुजीनेहमुहारी ॥ ६ ॥

रागः ॥ ॥ रोकटगैलवामेकैसेभरोयानीया ॥ कर्क ॥ अधरमदारमवेनुवजा
 येगबालबालसवसंगलगयेः कहेनमानननंदराये सोमावनघातफिरनघरघरको ॥
 जैसेनीदरइकशोरिमेरिमेजा ॥ १ ॥ मोरमकुनकंचनकोइलकेमकरमनोहर
 कुंदलअलकेभालतिलककेसरकोराजेऔरवैजंत्रीमातवीराजे ॥ पिनाम्बरक
 टिकसोरचीनवनीयाः ॥ २ ॥ हनकींकीनीयाउपुरबाजेइनाइनामवमुनीजनरा
 जेपगपैजरियापायेतवाजेदरसदेवीडुखडरहीभाजे ॥ अनिसुंदरअलबेलीची
 नवनिया ॥ ३ ॥ मडुकीछीनमोरेमनहटकेथागोरेजमुनाजलटकोः सुरस्पाम
 हरिनागरनतकोकांहाकरोमानेनहीअठको ॥ दरजोरिकहनजसोदमाहारानि
 याः ॥ ४ ॥

रागधुमरि ॥ ॥ कहैयाजमुनामैनजाइहुयारः अचलपकरमुमुकीवीकहै
 याजमनाजाइहुयार ॥ कर्क ॥ कवकिमेवडेवाडेअरजकरतुहै ॥ इतनाभरज

मोरेमानुकहैया ॥ जाहासमेपछोरोजासोहीनामबनावे ॥ कबनेनगरनलीनांक
हैया ॥ २ ॥ चंद्रसखीहीनवालकहवद्वी ॥ राधावसलमुखमोरकहैयाजमुना ॥ ३ ॥
राग ॥ ॥ जमुनामेकरनकलोलराधाप्यारि ॥ कृ ॥ मंजनकरनजमुनाजल
जेदी ॥ दोवनहेतनखोल ॥ १ ॥

रागविहाग ॥ ॥ जमुनाजलनीकोलापोचन ॥ कृ ॥ वंसीवनसखीकलीजमुना
जल ॥ नीकोलापोचन ॥ १ ॥ बाजेनमृदंगपरधरनीधराये ॥ लेननानबहुरंग ॥ २ ॥
रेनुउत्पलाचादनीमे ॥ असोदायानंदन ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ आरेजमुनानाजाइहोराधाआरेथारे गोपालरेमाइ ॥ कृ ॥ जमुना
केनारनीरधेनुचठावे ॥ मोहनमुरलीवालरेमाइ ॥ १ ॥ मेदधीवेचनजानवृदावनरो
केवपीगवालरे ॥ आरेदधीयाकेदनमागेआरेजसोदाकेलानरे ॥ २ ॥ पीताम्बरकी
कधुनीकाछेगलेवेजयेत्रीकेमालरे ॥ निरछीनजरियाहामुपरदारेआरेजीसाराबेहा
लरेमाइ ॥ ३ ॥ सुरदासप्रभुनुमारिदरसकोहरीकेचरनचीनलालरेमाइ ॥ जन्मजन्म
कीधायकधुनापेआरेमीलेगोपालरेमाइ ॥ ४ ॥

भगन ॥ ॥ गगरिभरवदेप्यारि ॥ कृ ॥ विद्यावननटधेनुचठायेमोरमकुटसि
रभारिभकुटिभालनिलककेसरकोसोभितआनिछुछुवारि ॥ १ ॥

उकीउकिआवनपुरलीपजावनजाउमैनपठिदारे॥ हसीमुसुकानवितोकीसामरो
नैनवानतकीमारि॥२॥ वेदपठिसकलवृजनारिवृदावनकिनारी॥ कोजनसक
लवृजवननहीपावनकोजानेवैदविचारि॥३॥ सहघाठमैरोकननोकनज
सोमनिनन्दुलारि॥ वेरभरघरजानदेमोहनसुनीलेकंतहमारि॥४॥
भयेहोचेतचेननहितनमैमानोदसअहंकारि॥ सुधिबुधिभूलीगयोवहुरि
नसैंचाहलवनननयवारि॥५॥ सुरनरसुनीसवध्यानधरतुहेः सिवसमाधि
नगरि॥ अम्बरदासभजोकमनापतिविसरतनाहिविसारि॥६॥

भजन॥ ॥ नारिनहीजानावैदेनिपठअनारि॥७॥ यहरोमैसुवासा
रिजमुनाभैलेगरिवेनन्दकेठारोनामोकोनजरवेमारिवे॥८॥ उठितेरिजरि
बुठिववरविनारिवेजावोवैदेअफनेघरमैपिडाभैलेभारिवे॥९॥ गोकुलामै
वैठेवैठेहामसोउसोपारिवे॥ बाहिकेबोलाबोजाकोनामगिरिधारीवे
॥१०॥ सुरसियास्यामप्रभूगैलोवलोहारिवेः मेरोदरदवह्निजानेसाबलवि
हारिवे॥११॥

चोः वाघावजहमीलनकहाइः मोहनसुंदररूपदीयाइः ॥
 नइतइछपीछेनछेनमाहीः इलकावनसवअंगनमाहिः ॥
 औंसिकोमुदेखीनहीमोहैः नंदसुवनसमसुंदरकोहेः ॥
 वहीमखीसवहीकेमनभावे ॥ सबकोहुवाहिदेखीसुखपावे ॥
 लोकलाजकुलकैसेकामहीः जोपावेसुंदरवरस्यामहीः ॥
 येयेहमोहीअगमअतीलागेः येहसुखमीलेनहीवीनभागेः ॥
 इनकोगर्गकह्योनंदपाहीः वीनासुकनयेप्रापतिनाहीः ॥
 तुमहोइनकीतपकरिपायोः औंसेमंदहीगर्गसुनायोः ॥
 कहसखीइतनोभागहमारिः जोबरयावहीनंदहुतारो ॥
 तातेमोमनमेयेहआवेः ॥ किजेजोसवकेमनभावेः ॥
 तपकिजेहरिकेहीनलागीः पुजिगीरिपतिसोबरभागे ॥
 ईदभुवनसुंदरवरपावेः औरसकलकामनातसावेः ॥

रांग
व अ

ठुम
ग

क
क

ग
क

अ
र

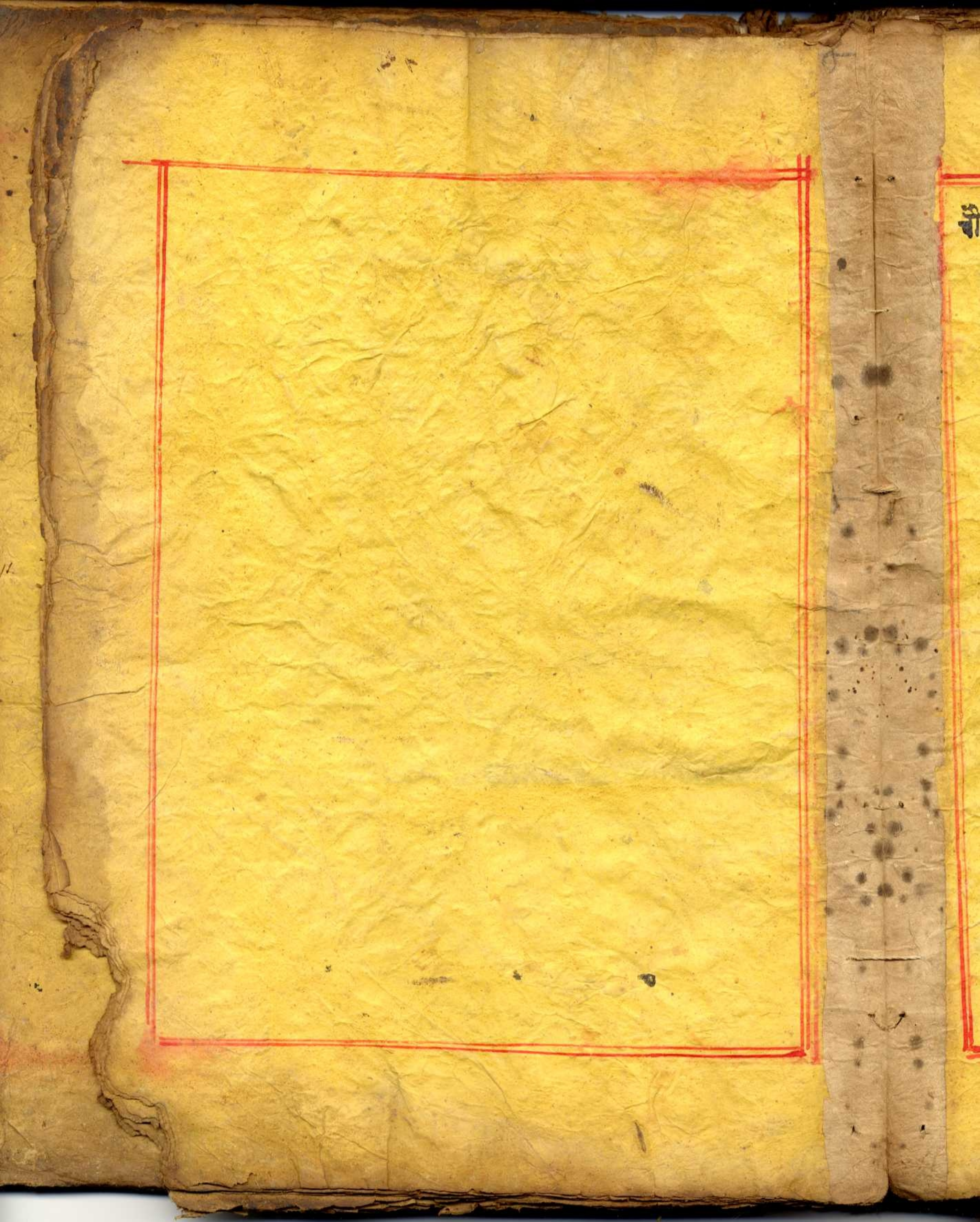
ह

राजठुमरि ॥ १ ॥ यानी घतवा मेगागर को रीरे ॥ वातवो हतवी बुझो रीरे ॥ मोतज मोवा पुतु मागे
व अत करत वतनी रीरे ॥ १ ॥ रितहा हा गधारे वतु ह मोहने मुख मो रीरे ॥

ठुमरि ॥ १ ॥ अगगरि मगो री रावत हके युम की मये ह ॥ जाती री हो नमुना न ह नरत
रो कल ह यनी घतकी घये ह ॥ १ ॥

कजती ॥ १ ॥ वती पारो के तेन्दकी हा हा यनी या के से के ल ह ॥ १ ॥ नये न जानी बा ह म ने
क्या नी ये रातर साती है ॥ १ ॥ ह म से वतना कर के पारो न म वती घर जाती है ॥

गज ह ॥ १ ॥ कल ह म तु मोर कुचे से आये चलै गये ॥ बादा को या या आफ
की आये चलै गये ॥ फारस तन मी ले आफ को आये चलै गये ॥ १ ॥ ना
अक लाई आफ को ही राजे ऊवा ॥ चौकत पर मीर पत के ह जागे
चलै गये ॥ २ ॥ हा ह म मु के देवी के को ठे पर छाय गये ॥ के के स
व छियाई के ह म वी चलै गये ॥ ३ ॥



दीरलीला:

बी: भवनपनसवहीनविसरायो: वजसुवतिनहरिसोमनलायो: ॥
 येहैवासनासवडरजामी: होयेगोपालहमारोस्वामि: ॥
 कामवासनाकरिउरध्यायोहरिकेहेतनपहीमनलायो: ॥
 धनदससहसगोपकीकन्या: करनजीतपहरिहीतधन्या: ॥
 रहनक्रियाइततपकोसाधे: छाडइसवभोगउपाधे: ॥
 प्रातकालजसुनाजलगाइ: प्रहरप्रयंतरहेजलसाही: ॥
 जपहीउमापतीहरवृषकेत: सुंदरस्यामकछनपतिहेतु: ॥
 सितभीतमनमेनहील्यावे: नयेनमुंदीकेध्यानलगावे: ॥
 बारबारयेहकहेमनाइ: हमवरपावहीऊवरकहाइ: ॥
 जलनेबहुरिनीकसिसवआइ: पुजहीगोपेस्वरसीवजाइ: ॥
 चंदनविष्णोपत्रजलधारा: अछेनसुमनसुगंधअपारा: ॥
 प्रीतिसहीनसवसिवसिचठावे: धुपदीपकरिअस्तुनिगावे: ॥
 छ: करहीअस्तुनिगानरहुविधी: पानीपंकजलोरही: ॥
 बारबारनवायेमस्तक: प्रेमसहीननीहोरही: ॥
 जयेमहेसकृपालसिव: आनंदनिधीगीरिजायते ॥
 कैलासपतिकछ्याराअगजग: नाथसर्वनमामीने: ॥
 जगजुतवीकुंडससिकल: गंगयुनसोभीनसिरे: ॥

कमलनयेन विसाल सुंदरः चारु कंदल सुनिधरेः ॥
नीलकण्ठ भुजंग भुसनः भस्म अंग दिगंबरः ॥ अर्ध गौरी वीसाल उरः
सिरमाल धर करुणा करे ॥ कर्पूर गौरि प्रसन्न आननः पंचवक्त्र लोचने ॥
काम प्रद सुव धाम पानः काम सोचयी मोचनेः ॥ भगवान् भौ भव भय हरनः
भुना दीपति संभु हरे ॥ प्रनत जन पुरन मनोरथ जगत पतिः ममथ करेः ॥
वृषभ वाहन त्रीपुर अरिः मृगराज वर छाता म्वरे ॥ सुल पानी वी सुल सुलनः
मुल कर सी विसं करे ॥ सुर असुर नर नाग नवपदः परी मन वांछी नलहेः ॥ पु
जने पद कमल प्रभू ह मः कृष्ण पति चाहति अहेः ॥
तुम सर्व जगत् ^{देहा} जीव जिव जाननः जन मन पीर ॥ परम दान दीजे हमे सुंदर वर वल वीर
येह वर दान न आसि व तुम सो चाहत अहे ॥ कृष्ण कमल पद ध्यात रहे हमारे उर सदा
चोः ॥ यहि वी वी वृज नित्ये ने मनी वारेः सी बकुं युनि कृष्ण प्रनि चाहेः ॥ नीन प्र
नियान य मुना जल बोरेः प्रीति रिति सो मत न ही मोरे ॥ सवी ना सो बहु भागी
नी होरेः गोद पसार युगल पद जोरेः ॥ तेज रासी दीन मनी जगत् स्वामीः जगत
चक्षु सव अंतर ज्यामीः ॥
चोः ॥ जो नित्ये जल पे हांगी न हायेः ताको दोष देत अधिक ॥ ताको दोष नासन
व पावेः नांगी पर पति संसुख आवे ॥ नव हरि मन येह के वी चाराः इन के वस
नहरो इक वाराः ॥ प्रभू सव कीन वडु विव चाइः कदम्ब वी छे चठी रहे लुकारिः ॥

लेबसनदारअरकायेः जहानहाभुसनलरकायेः ॥ नीलांबरपाननवरसारीः सेतयी
तचुंदरिअरुनारिः ॥ ध्यानकरननेजवसवजागीः नवजलवाहरनीकसनलागीः ॥
जलनेनीकरिआयेततदेव्योः भुसनवसननहानहीदेव्योः ॥

रागः ॥ ॥ राधाकृष्णरहेवहीधान ॥ कृ ॥ छोनासोकाहाधोना ॥ आरेनीजआरेवीस
राम ॥ १ ॥ आरेमुनलकरमुदुरिछैना ॥ आरेनीमुघानआरेनीसराज ॥ २ ॥

रागः ॥ ॥ जमुनामेकरनकलोतराधायारि ॥ कृ ॥ भंजनकरनजमुनाजलरोही ॥

धोवनहैतनबोलेः ॥ १ ॥

रागः ॥ ॥ वाजजमुनातिरकीजेः तीरकीनेवलवीरकीजे ॥ कृ ॥ हमजलभीतरमुप
जलवाहीर ॥ कैसेवनेपरनीनकीजे ॥ १ ॥ लेकरचीरकदमचठीवेदै ॥ धाइचठवलवीर
कीजे ॥ २ ॥ कबकीमेठादिठाडीअरजकरनुहै ॥ आवीरजानअहीरकीजे ॥ ३ ॥
नुमनोठोनानंदवावाजीके ॥ हमदुखभानडुलारकीजे ॥ ४ ॥ चंद्रसखीहिजवालकदम
छवी ॥ हरिकेवररापरनीनकीजे ॥ ५ ॥

रागः ॥ ॥ हरिलेगयोचीरहमारि ॥ कृ ॥ छेपिछोपीआवतु श्री नंदलाताजमुना
तीरबथोरि ॥ हमेमुमुकानबीलोकस्यामरोलेगयोचीरबथोरि ॥ १ ॥ लेकरचीरकदम
चठिवैरेहमजलमाइडवारि ॥ अवकीवेरनुमराखीलेप्रभुनुमहीपुरुषहमनारि ॥ २ ॥
अवकीपनिमोरेराखोलातजीहुनीहारिमेवेरि ॥ मुरस्यामसखीअमरमागनधीदुख
भानकीमोरि ॥ ३ ॥

रागः ॥ ॥ वलसुदेजादेजादेहमारोचिर ॥ १ ॥ येहसारिबरसानकीयारि ॥ भैयाह
मारभेजारि ॥ ११ ॥ हमनोसरमेवडेनुमहसने ॥ यहवडीवानेवेजारि ॥ १२ ॥ लेकरचीरकदसु
चठीवैठे ॥ हमजलमाफउधारिखडी ॥ १३ ॥ स्पामसवीपीयारसकीमुवे ॥ येहननकारस
देजारे ॥ १४ ॥

रागः ॥ ॥ लेगयेचीरमुगारिमेकैसेकरुं ॥ लेगयेचीरकदसुचठीवैठे ॥ मैजुडुलमाफ
उधारिसैकसेकरुं ॥ १ ॥ चीरहमारिदेउसावरि ॥ नुमजनिहामहारिमेकैसेकरौ ॥ २ ॥
चीरनुमारिजवहामदेउगी ॥ जलसोहोगान्यारिमेकैसेकरुं ॥ ३ ॥ जलसोन्यारिजवहाम
होगी ॥ जायेगीलाजतीहारिमेकैसेकरो ॥ ४ ॥ जायेउकारोकंसराजकी ॥ धीरधरोगिरी
धारिमेकैसेकरुं ॥ पाकंसराजकीनामनलेसवी ॥ बायाभुजाफरकीहमारिमेकैसेकरुं ॥
५ ॥ समदिबुझीकेवाननकरोकाहा ॥ कंसराजकीराजमेकैसेकरुं ॥ ६ ॥ वींदाव
नमेडंजगतीनमे ॥ नोरनोराधाप्यारिमेकैसेकरुं ॥ ७ ॥ पुरहिनीपाचपरिराधाजीरु
हमहासेदेगतीमेकैसेकरो ॥ ८ ॥ सासुचुरिघरननुनती ॥ वरीवचीदेगान्यारि
मेकैसेकरुं ॥ ९ ॥ चंद्रसवीभंजोवालकृष्णद्वी ॥ चरनकमलवलीहरिमेकैसेकरुं
॥ ११ ॥

रागः ॥ ॥ नीथुरवनवारीनीथुरवनवारिआइहोगैलेनीथुरवनवारि ॥ १ ॥
मवसवीयानामीलीगयेजमुनामे ॥ मारनजमुनामेछोरि ॥ ११ ॥ छीपिछीपीआवतनंदकी
लाता ॥ लगइचीरवयैरि ॥ १२ ॥ लेगयेचीरकदसुचठीवैठे ॥ हमजलमाफउ
धारि ॥ १३ ॥ नुमारोचीरजवहामदेउगी ॥ हमजलमेन्यारि ॥ १४ ॥ पुरहीनीपानवीरुज

नीनिकसे ॥ कलसेजुकाये ॥५॥ गोकुलकेहमवहीहैगालीनी ॥ मथुराके
पतिहारि ॥६॥ कहुवाकेहमवहीहैगालीनी ॥ कावाकेपतीहारि ॥७॥ तुमहोहोना
नंदवावाकी ॥ हामरुषमानकेदोलाई ॥८॥ सुरदासप्रभुवीरखीमनभइ ॥ तुमजीनेह
मसि ॥९॥

रागः ॥ ॥ लगनरहोजमुनाजीमेपरेसावरिनेचीरछोडाइ ॥१॥ येकसमयेहरिमा
तीकेकारनधीजुनंदनजीकेवैनागइ ॥ सुखपछाडीनिनलोकदेखियेनाकनहोइहोइ
जीयाराघुमीपरेसावरि ॥२॥ येकसमयेहरिब्रजजीकोयेवालवछरुवासवहरनकीयो
॥ जोजानकेप्रभु ॥ श्रीजुनंदनजीकेहमपरेसावरिनेचीर ॥३॥ कोपीतइइचठेव
जउपरगरजनघुवरचहुदीसरजनलागी ॥ सप्रदेवमीलीबरसनलागीचहुदीसरजन
वृजधुवाउसावरोनेचीर ॥४॥ कोपितनागचठेवजउपरजलजमुनाजिमेकंडीपरे
॥ वैठेपनालकालीनागनावेसुरस्यामप्रभुचरणापरेसाव ॥५॥

रागकजरि ॥ ॥ श्रीकृष्णसरारिहेवनवारिगौबानकोचठवइआ वडेकाली
रेकमलीयावनवनभिजेहेगइआ ॥६॥ थरवैजालगवाबैवायेगेसलीधिनचोराये
॥ लेकेभागरिकदमुनलेसवियावतिजोहेना ॥७॥ करवीनकरजोरसुनायेमो
हनकेसमुझये ॥ मेतोदासिहुंतिहारिसावरिसुरतमनभावौना ॥ ८ ॥

रागः ॥ ॥ कहीनगीरमारिइजाकहीरागीरधारिरे ॥ कर्क ॥ भंजनकरतचनेवृजव
तिना ॥ चीरउतारिधरेतनसारि ॥ १ ॥ चीरकेवदलापीनावरदेराधा ॥ जलमेंहोंगइयारिहो
॥ २ ॥ नुमतोधीनानंदववाके ॥ हमरुसमानडुतारि ॥ ३ ॥ बाजाहानराधाभगवकलीहू ॥
दाहीनाकरकुचयैडाजे ॥ ४ ॥ कहनलालरैसोजनीजावेराधा ॥ करजोरिसीतलवनाइ
हो ॥ ५ ॥ चंद्रसखीहितवालकहनधवी ॥ नुमजीनेहमहारिहोराधा ॥ ६ ॥

राग ॥ ॥ देतोगालीकौनहरिनाने ॥ कर्क ॥ नहीगोरिसारिनहीनोरिसरहजी ॥
नहीनोरैरहुवारि ॥ १ ॥ पुरहीनीपातपहिरिमेंनिकलो ॥ कहनवजावनताली ॥ २ ॥
चंद्रसखीहितवालकहनभजो ॥ हरिकेचरगावलिहारि ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ दुवहनहीरावरिलडीकेजा ॥ कर्क ॥ परघरसोवनमोहीजगावन ॥ यो
सोधिनुकहैया ॥ १ ॥ दहीमोरैवाइमदुकोमोरैकोरे ॥ राधाकवरकहैया ॥ २ ॥ चंद्र
सखीहितवालकहनभजो ॥ दहीमोरैवातकहैया ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ करतबिहारिबीहारियेहोवनमे ॥ कर्क ॥ लेकरचीरकदमचठीवैठे ॥
हाभुजलमाइउघाडीवडे ॥ १ ॥ पुरनयनपहिरैराधानीकले ॥ लाजनालीगावीहारि
नोरामनमे ॥ २ ॥ अयकीकेचीरवक्तीसवजमोहन ॥ भौहमीचरियानोरिववमे ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ येकहैयादेदारोमोरैसारि ॥ कर्क ॥ लेकरचीरकदमचठीवैठे ॥ हमजल
माइउघारि ॥ १ ॥ लेकरचीरमौनहोइवैठे ॥ दीजेचीरहमारि ॥ २ ॥ जलविचकंपनता
नीससिरमे ॥ देहहमारोसारि ॥ ३ ॥ चंद्रसखीहितवालकहनभजो ॥ वरगासरनवनवा

रिः ॥४॥

रागः ॥

॥ स्याममीलनकोजमुनामेजाइहो ॥१॥ सर्वसखियरामीलीस्याम
 केकारनप्रातसमयेउरीजमुनामेजायेवस्त्रछोडिकेत्यानकीयोहोस्यामचरणापरभक्ती
 रखके ॥ आनंदपुर्वकखेतीरहिहैं ॥१॥ सबगोपिनीमेह्यानकरिकेत्यामचरनमेमन
 बीलखाये सोहीसमयेभोस्यामसुंदरनेजमुनातिमेंजाइदेवे ॥ वस्त्रछोडकरवाहैस
 बीसव ॥२॥ सोदेवीजसोलालालाकहैयासववस्त्रकोउगईलेकेकदम्बउपरबाधिली
 येकेआफनंदसैवक्षमेरहीके ॥ मधुरमुरलीबेउरजाइहै ॥३॥ सोहिधुनीसुनिकंपभ
 इकेनंदलालकोदसुनकरिकेसवसखीयेनमीलीहीनजोरिकेभद्रागुर्वकवीनयेकरिके
 ॥ हमारवस्त्रदेहोकहैया ॥४॥ रक्ताबीचमैयायामैनेनुमारावस्त्रहमनहीजानेवस्त्र
 सबकोहामनेदेगानुमाराहोनोनीचेआव ॥ कदम्बनीचेआयेसखीसव ॥५॥
 सोहीबानसुनीसखीयनमीलीकदम्बनीचेआइवैवेगोपीनीसबकोअंगदेवीके
 कुचमैराडलपरहारधरिके ॥ प्रेमपुर्वकचुम्बनकरिके ॥६॥ वस्त्रसबकोआ
 फपहीनायागवालीनीकेमनमोहभयाहै वडाआनंदसैहानजोरिकेभक्तीपुर्वकउ
 जाकरिके ॥ घरघरफिरकेआयेसखिसव ॥ ७ ॥

जौः अतिआतुरसवपहीरनलागेः प्रेमप्रतीतिकेरसमातिपागीः ॥

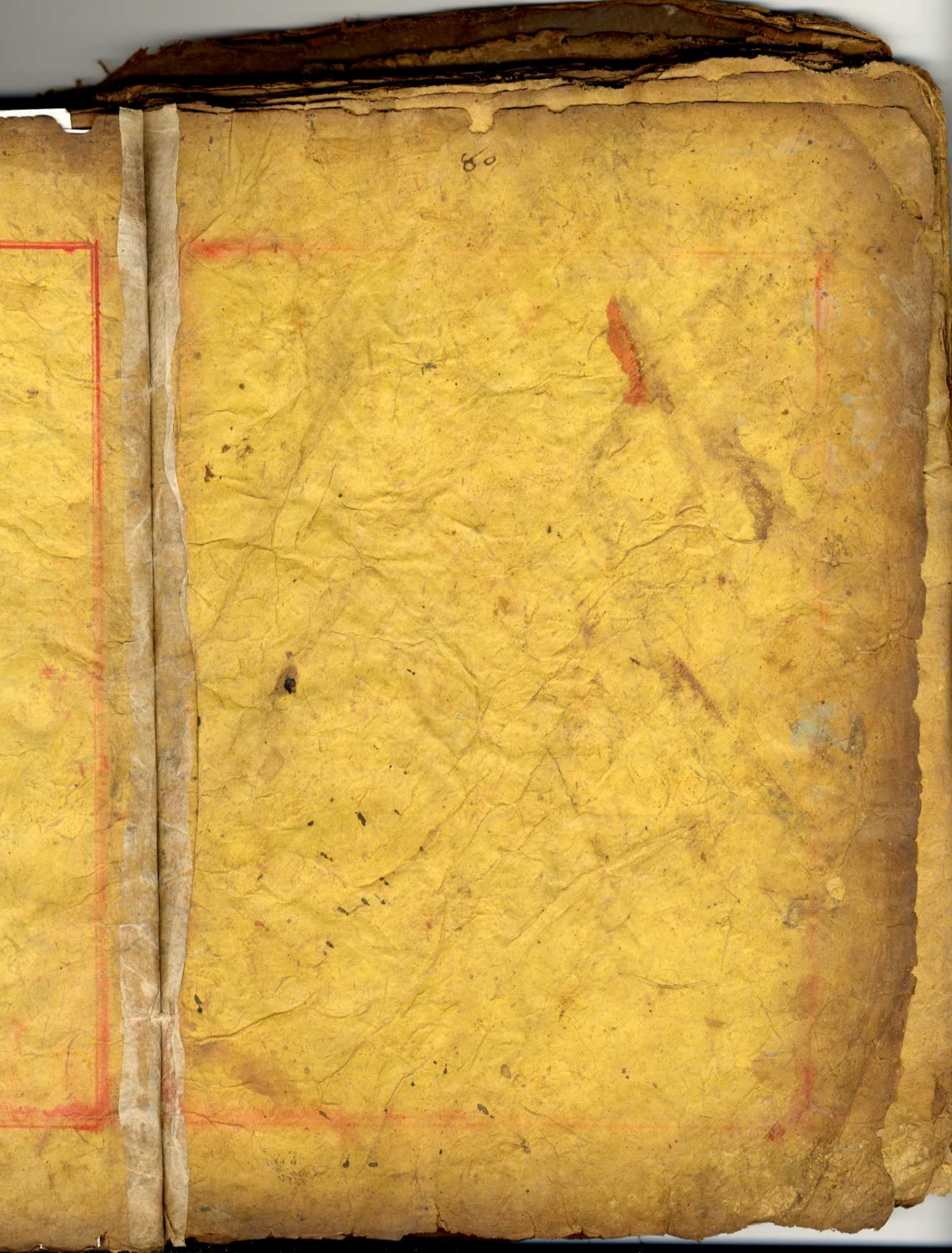
नवहंसिवोलेऊँजबिहारिः मेघतीनुममेरिसवप्पारिः ॥

अंतरसोचडुरिकरिदारोः मेरोकहोसत्यउरधारोः ॥

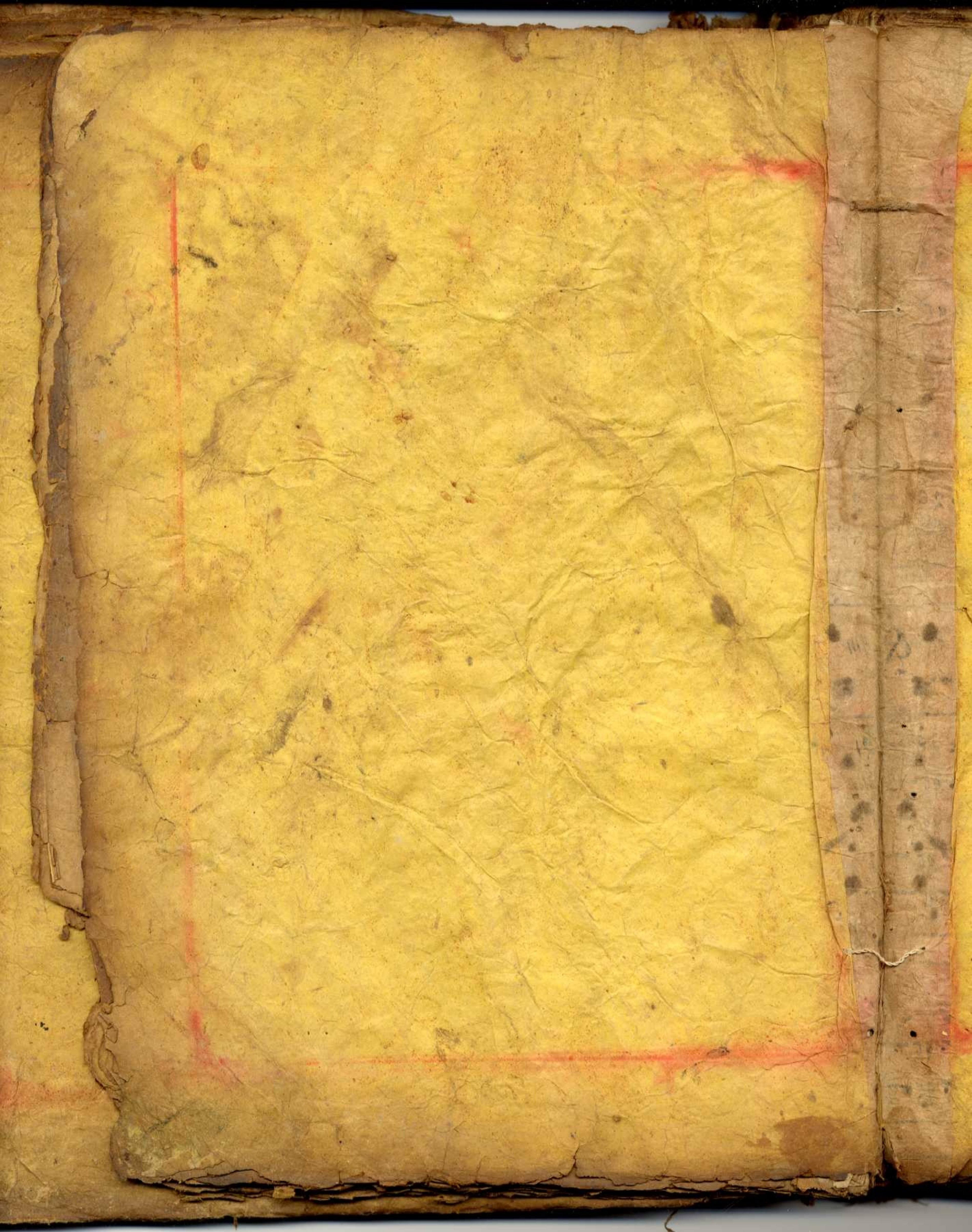
सरदारानुमआसपरेहो : अंकमभरिसवकोउरतेहो : ॥

वीदाकरिहंसिनंदकीलाला : नीजनीजसदनगरवृजवाला : ॥

गोपीनउरअनीहसवठायो : मनमनकहनिक्कलचरपायो : ॥



80



89

गोवरधनलीला:

चौ: कृष्णप्रेमवृजलोगसमाने देवपीतरसवकालभुलाने ॥ कार्तिकसुदिपरेवा
जवहोइ ॥ उहो उजनवृजसवकोइ ॥ ताकेसुखिबुधीसवनभुलाइ ॥ सबके मनमे
ध्यानकराइ ॥ सोनिथीअतीसमीपजवआइ ॥ जवपसोमतिकेउरसुधीआइ ॥
कहननंदसोनंदकीरानीसुरपतीपुजा तुमहीभुलानी ॥ जाकिरुपावसते वृजमाहि
येकहुवसुकभीकहुनाही ॥ जाकेकपाददधीगाइ ॥ सहनमस्थानीमथनसराइ
॥ जाकिकीपाउनहमपाये ॥ जावकपासव ॥ बीघनसाये ॥ भईसकलवृजमारुवठ
इ ॥ कसतरहोवनरामकहाइ ॥ सुरपतिहेकुलदेवहमारे ॥ गोपगायेवृजकेरखवारे
॥ तिनकेतुमससुरनभुलाइ ॥ रहेदीवसपांचकअवआइ ॥ कहोसकलगोपन
केराइ ॥ इत्यज्ञकीकरोदअइ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग: ॥ ॥ वृजधरधरपरवनीनवनाये ॥ क ॥ इइहिपुनकोवजवनिता ॥
नीजनीजगृहपररुचिरवनाइ ॥ १ ॥ पुरिकचौगीऔरजीलेवी ॥ दृगदलकेमोदकह
वनाये ॥ २ ॥ दविधुनददमवनऔमिसरि ॥ सवयकवाराअधिकवनाइ ॥ ३ ॥
सुंदरसुखकहीपकवान ॥ जसोमतिआकनेहातवनाइ ॥ ४ ॥ काहालागीक
हापकवानवधाना ॥ सुरसामदेमिहरवाइ ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

चौ: अधवासितपैआपपुजाउ ॥ गिरिगोवरधनधराउ ॥ येहविचारमनमेठहराइ ॥
नवहिहरीमनप्रकउझीउपाइ ॥ बैठेऔरमहरिधीगजाइ ॥ तिनकोहरियोक
हीसमरायो ॥ आजमोहीसपनोसकआयो ॥ पुनसपुनीनयेकअतिचागे ॥

गारुजातनसुभगतिधारे ॥ तीनमोसोयोकसोवशईः इतिउनेकाहावअइ
 भनुमकोयेकदेववनाउ गिरिगोवरधनप्रगतदेवाउ ॥ येहपुजातुमइनहिचअसोजा
 तेमोहमागेफलपाये ॥ नुमआगेभोजनवहवैहेः प्रगतभावनोहसदीधेहे ॥
 रागः ॥ ॥ गिरिपुजनकेहेतसकलमिलीवृजवासी ॥ क ॥ बहुबीजनयक
 वानबहुतहेः बहुमिठाइयांक ॥ रसगोरसमेवादीवीधिवीवीअभिनाभौती
 करसाक ॥ १ ॥ जेलेसवगीरिपुजनकोचलेयुल्लहहेवृजकीलोक ॥ कपुन
 कतनकहुषायेबरतनचरसकेसवभोग ॥ २ ॥ नौसनसाजीसीधारकीयेहे
 वरभुवनवहरंग ॥ जठजुठजुरिकेचललीकीरनीपूकेसंग ॥ ३ ॥ नंदमहरअ
 रुजसोभातिरोहीनीवलदाउसववा ॥ नंदनरुसमाननरोनीललीनारीक
 वृजवाल ॥ ४ ॥ गिरिपुजनकोचलेवृजवासीनीजुठमीलीरंग ॥ सुरदास
 छवीकाहालागीवरनुदेवीदेवहरऊ ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 राग ॥ ॥ संगबलेपुजनेगीरिनाथ ॥ क ॥ जसोदरोहिनीमहतारिअन
 वृजजावकेकीनारि ॥ आगेगीरिनाथमोहनसंग ॥ १ ॥ नंदमहरऔरअनेक
 ॥ औरपुरवासगोपीजनका ॥ आगेगीरिनाथमोहन ॥ २ ॥ येहीवृषमानकीज
 दोनारि ॥ ललीतादीकवृजनारि ॥ आगेगीरिनाथमोहन ॥ ३ ॥ सबसंग
 हाँलीमीलीजाइ ॥ सुरदासयेहपदगायेः आगेगीरिनाथमोहन ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ गिरिपुजन कोचले वजवाभ ॥ ६ ॥ चंद्रवदन सबसव सुगन येनी
॥ सकल सुधर सब को कीलवयनी ॥ ७ ॥ सकल वृन्द और गोपस मोहन ॥ जानच
लेनुवनिनी कोनुहा ॥ ८ ॥ नौजो मनसव अनिह प्रवीरा ॥ सबको उमन मोहन
आधिनी ॥ ९ ॥ कोहिसबी नाल नुद कूवनाये ॥ कोहि गावत कोही नाचन नाहि
॥ १० ॥ होत कोलाहन अनिमगमाहि ॥ सुरस्याम देवी हरवाइ ॥ ५ ॥

राग ॥ ॥ वजवासी गिरिपुत्रे जाइ ॥ ६ ॥ नंदमहर उमनंद सकल मी
ली ॥ पुरुचे गोवरधन सुवयाइ ॥ ७ ॥ गौरगौर मीलीनुवनिनगाये ॥ जाहना
हानुत्य करन मनभाइ ॥ ८ ॥ नौजो मनसव अनिह प्रवीरा ॥ सबको उमन मोहन
आधिनी ॥ ९ ॥ कोहिसबी नाल नुद कूवनाये ॥ कोहि गावत कोही नाचन नाहि
चौदीस कोस कीरे चौरासी ॥ उतरे धेर सकल वजवासी ॥ १० ॥ सुरदास गिरि
पुजन लागे ॥ सकल समाजे प्रेम सुवयाइ ॥ ५ ॥

राग ॥ ॥ पुजन गीरी गोवरधन नाथ रामा भजो रामा ॥ वजवासी
सब संग मिली माथ ॥ १ ॥ पंचामृत वरु कलस भराये रामा ॥ दादर
सिधर जो गीरी अत बाये रामा ॥ २ ॥ वरु रोले गंगा जल धाये रामा ॥
सुघंड चराडन तिलक समाजे रामा ॥ ३ ॥ सुमनसुत की चीज चहाये रा
मा ॥ सुमनसुगंध माल पहिराये रामा ॥ ४ ॥ कोउ सखि नृत्य करन कोउ
गावत रामा ॥ कोउ साखि ताल नुद कूव जावत रामा ॥ ५ ॥ कतरसवी जनवी

वीहीमीठाईरामा ॥ गीरिआगेपकवातधराईरामा ॥ ६ ॥ तवगीरिवरकोसम
 नेमनाईरामा ॥ भोगसमर्पेघंटवजायेरामा ॥ ७ ॥ तनमनधनगीवरकोदी
 हा रमा ॥ वहुबीधीगीरिआराधनकीउरामा ॥ ८ ॥ तवप्रगन्धेगोवरसनना
 थरामा ॥ यज्ञपुरुषप्रभुसुतिकेमाथरामा ॥ ९ ॥ चन्दवदनतनस्यामन
 मारारामा ॥ मोरमकुतवैजंजीकेमालारामा ॥ १० ॥ तवप्रभूमधुमेनामध
 धाईरामा ॥ अंतरध्यानभयछीनमाहीरामा ॥ ११ ॥ जैजैकरकेसवनेमना
 येरामा ॥ सुरदासदेखिसुद्धपाईरामा ॥ १२ ॥ १२ ॥

छं: फीचोभुल्योदेवधारन: नाथतुमहीवीमारके ॥
 पुजातुमारिकहाजाने: हमअहीर्गवारके ॥
 आपहीकरीकृपादीहोसोप्र: स्यामहीआयेके ॥
 दहिवावषकोवनार्: नाथयेहअपनायके ॥
 अवहमेकरकौनकोप्रभु: सरनेतुमारिपाईके ॥
 इइकहकरिहैहमारो: नाथरुजपरआइके ॥
 तुमहीकरताहोसवनके: तुमहिमवकेइसहो ॥
 कोटिकोटिविप्रागडतुमरे: रोमप्रतिजगदीसहो ॥
 स्यामहलधरदासनरे: कसलयेदीउरहे ॥
 करिकृपायेहदेऊं: प्रभुहमओरकहुनाहीबहे ॥
 सुतननेदोउदारेगीरीपद्मआपनंदचरणनपरे ॥
 वाहंसिगारिलखिप्रीतिपंकजपानीदोहुमाथेधरे ॥

दो: यमैसुरपतिको धकरि मन मेग भविष्य: प्रलये काल के मेघ
सवली है तुरंत बुलावये ॥

छं: अति ही भयातक घटाकारिकं जल ऊं पठतर नहि ॥
घेर ली हो ब्रज चहु रि सि पवन प्रलये: रुकोर ही - ॥
गरजत गगन घन घोर त कयत न दीत वार ही वार ही - ॥
होत महु अघात ब्रज नर नारि च कीत नीहार ही - ॥
गजेवन जे गायले ते धाये फीर हज आव ही - ॥
अंधधुन्ध अपार खोजत धाम पेचन पाव ही - ॥
सेत त जा हात हाव सु सवन नारी मन मोचन महा ॥
बैर सुरपति सो कीयो अव होन धौ चाहत का हा - ॥

राग ॥ ॥ वर्धा हुन लागे वृज ना ही ॥ १ ॥ उमडी धुमडी घन गरजन ला
गे ॥ परत यावद अघोर ॥ १ ॥ अरर अरर आकास ते हो ॥ जल दारन व
न घोर ॥ वार वार वीज ली चमकीर ही ॥ च कचो धनी चहुवर ॥ २ ॥ ॥

राग ॥ ॥ आजवर सानी बोले मारे ॥ १ ॥ इन गोकुल उत मधुरानग
र ॥ गोवर धन की वर ॥ १ ॥ हाड र मोरे पायी हा बोले वंसिके घन घोर
॥ सब सखीयन माली मंगल गाये म्याम सलोने मारे ॥ २ ॥ गरी पर चढी
के बोलंजी मुनी है इन के घन घोर ॥ नागी रिया पर कृपा की जे राधा
नंद की मारे ॥ ३ ॥

राज ॥ ॥ देवभू दीनबंध भय होए ॥ प्रगतपाल भक्त न दुख हारि ॥ १ ॥
 नाही चाहि सब लोग पुकारि ॥ राखी लेहु जन नंद दुता रि ॥ १ ॥ जब जव
 ई परिहें आहें ॥ जब ही जमने लोग वनाहें ॥ २ ॥ नाही चाहि नाही बन वा
 रि ॥ मरणाच हत वज के नर नारि ॥ ३ ॥ जै जै गीरि गोवर धन नाथ ॥
 राखिलेहु जन जानी अनाथ ॥ ४ ॥ अब की बेर राखी प्रभु लीजे ॥ वज्र वामी
 न कोर रक्षा कीजे ॥ ५ ॥ जै जै गीरि गोवर धन राखे ॥ ये हजल ने सब लेहु
 वचाये ॥ ६ ॥ दीन जानी के करिये ॥ सुरदास ये हवीन ये सुनाये ॥ ७ ॥

राग ॥ ॥ धने धने तुम ऊबर लीही ॥ मकर गीरि ही उठाये ॥ १ ॥ गायो
 गोप गोपु जन नारि ॥ भय सक छीन माह सुवारि ॥ १ ॥ हे कोई आदी
 पुरुष ओतारि ॥ देवन कुं को देवन पुरारि ॥ २ ॥ अनी को मल भुजतन
 कतु मारि ॥ माहा प्रवल पर बटये ह भारि ॥ ३ ॥ साज दीवस वेटे गे ह
 भाती ॥ वर सत जल धर दीन अह एती ॥ ४ ॥ सुरभक्त हीन गीरि उठाही
 तव जे गीरि धर नाम कह हई ॥ धने धने ॥ ५ ॥

छः परे डनव तेस मगीरि धरः वाम कर गीरि वर धन्यो ॥ देवि
 या कल सकल व्रज को सोचई कछिन मेह न्यो ॥ करत जय
 जय गोप गोपि सकल मन आनंद भरे ॥ त्याम सब के म
 ध्ये गडे ॥ कर जन धगीरि वर धरे ॥ परि अर्घ दीन धार मु
 सल सलील की वर साकरे ॥ अंध धुंध अकाल चहु
 दीसी ॥ सब तरु कहे रत बडे ॥ व्रज नीर गंभीर पुनी पुनी
 गरज परवत पर गीरे ॥ करत अति डन पात वज्र पर
 मेघ पर लेके फीरे ॥

राग॥ ॥ यह छवीवरनेन हीजाई॥ १॥ लकेमध्ये स्याम अतीसो
॥ गीरि हीत हीत जडराये॥ १॥ वृजवासि प्रभू के छवीनोरधि॥ मन ही
मने सुख पाई॥ २॥ तव प्रभू गीरि अवनी पर राखे॥ अवर वीते वर साई॥ ३॥
सुरदास छवी का हा लागी वरन॥ प्रभू गती ले वीयन जाये॥ ४॥ ॥

राग॥ ॥ अतिक थोर गीरि को मतवाड सै प्रभू ली हली डठाई॥ लल
नार्धन्यै वा के जनक जननि वा के परिवार वडे भागई॥ १॥ सुरपति पुजा
सव मेती प्रभू गोवर धन को पुजाईये॥ ललना प्रवल भयावन जल सै गी
रि ही डठाई॥ २॥ वृजवासि गाल बालन रनारी गो सव राखि लेई॥ लल
ना गावत सुरदास प्रभू के चरित्र ये हनी नगव ही॥ ३॥

राग॥ ॥ जाड जाड रे साम ली यागडे वारने रे॥ १॥ जव मे जनम ली
यो प्रभू वृज मे सव को डख गयो सव छीन मे॥ जसोदा भरत भुलाने कुलो
पारने रे॥ १॥ माता पीता को बंध छोरा ये नंद राज के धेनु चलाई॥ जमला
अर्जुन और पुतना जारने रे॥ २॥ कैसे बंसी त्यन वृजरक्षक अकाव का
वृताय करक्षक॥ ३॥ दीप यो काली दहवी अधर तारने रे॥ ३॥ इहने को
पली ये वृज उपर है को हिरा यो भुवन करिये॥ कृपा करे का रुन खव
र गीरधारने रे॥ ४॥

राग॥ ॥ वृजवासि सव मीली ली हो॥ गोवर धन परिक्रमा की हो॥ १॥
धन्य गोवर धन धन्य लाला॥ धन्य धन्य प्रभू दीन दयाला॥ २॥ जे प्रभू दीन
वंधु हीत कारि॥ भंजन वीयती भक्त है तुमारी॥ ३॥ असर न सरन तुमा

रोवानी ॥ धन्य धन्य प्रभुजन सुवदानी ॥ ४ ॥ जे जे गोवर्धन राई ॥ सुरदास
ये हलीला गाये ॥ ५ ॥

राग ॥ ॥ धनी हो विंदावन धनी गोवर्धन ॥ धनी धनी नंदन श्रीवनवारि
॥ १ ॥ सुरपतीगर्भ भजन तुम की हा ॥ वृजवासि सब संग मेली हा ॥ २ ॥
वाम हान परगीरि धर एये ॥ वृजवासि सब लीये हो कजाये ॥ ३ ॥ धनी
नमुना धनी धनी वृजवासी ॥ धनी धनी गालवाल सुख एसी ॥ ४ ॥ सुरदा
सय हलीला गाये ॥ हरिकेश चरण बीज हो लाये ॥ ५ ॥

राग ॥ ॥ जय जय का सुख वचन सरन वृज के वासी ॥ ६ ॥ सुरप
तीमान मठन तुम की हा ॥ प्रवल भयेवन जल सेव चाई ॥ ७ ॥ जये गो
वर्धन जयेवन वारी ॥ सुरस कल मिली जये हो मनाये ॥ ८ ॥ ॥

सो: कहै ईद पछिताये मै भुल्यो जाने नहा कीनी वहुत धी धाये भये कर मन
थाकल भयो ॥

दो: सरसा सरसा कहौ चरण परि परि हो जाये उताल: सरणागत पावन
वीर दत जी हेना ही गोपाल ॥

सो: दीन वचन सुनी कान करि हे कृपा कृपाल प्रभु: ये हे करत अनुमान
सुरमाये क आयो वृज ही ॥

छ: करत असुनि जोर सुर कर धेनु आगे राखी के ॥ वीदी प्रभु पाउ पु
लकी पुनी पुनी नाम गोवींद राखी के ॥ जये जय कृपाल मकुट मा

धवकृष्णअगतीतगतीहरे॥गोपपतिराजीवनोचनःकरज
 भवगीरिवरधरे॥वासुदेववृजीदयेदुपतिकैसअडिसुरर
 जने॥हरनीभवभयभारमहीअहीराजवीसपडःगंजने॥
 कीतीरनावर्तवत्सापुरपकाअयनासनं॥अतिहीदुष्टअ
 रिस्तधेनुकअसुरवंसवीनासनं॥चोरीमाखनवातदृजघर
 भंजीतरुजनदुष्टहरे॥योगिजनजपतपनपावतधन्य
 दृजजनवसकरे॥धन्यगोकुलधन्यजमुनाधन्यदृजदृन्दा
 वने॥धन्यगोपिगोपयेसोदानंदगीरिगोवरधने॥फीर
 तचारतधेनुनीजपदःपद्मफनीअहीयतिधरे॥सक
 लभजनभक्तरजनरामनीरततणनेभरे॥जनकसुरसरि
 सिवसनकधनश्रीनहीछाडतछडे॥परसनेपदभयोपा
 वनजयेतिमयेजयेजयेहरि॥ ॥ ॥ ॥ ॥

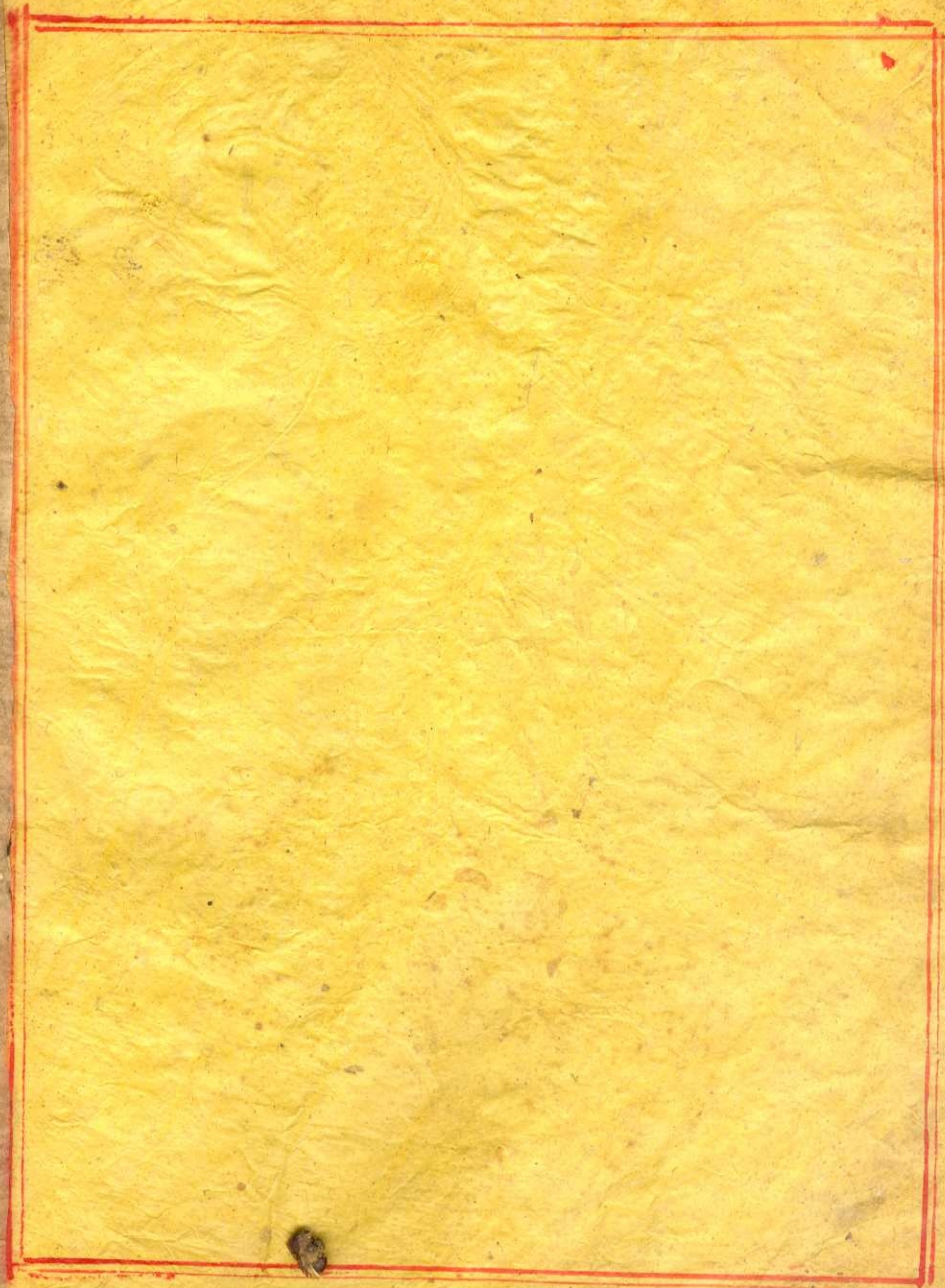
दोः करिकरुगिरिमनहसिअतिपयोसकप्रभूपाये॥हेप्रसन्नसुरधेनु
 पतिवीडाकीयोयदुराये॥

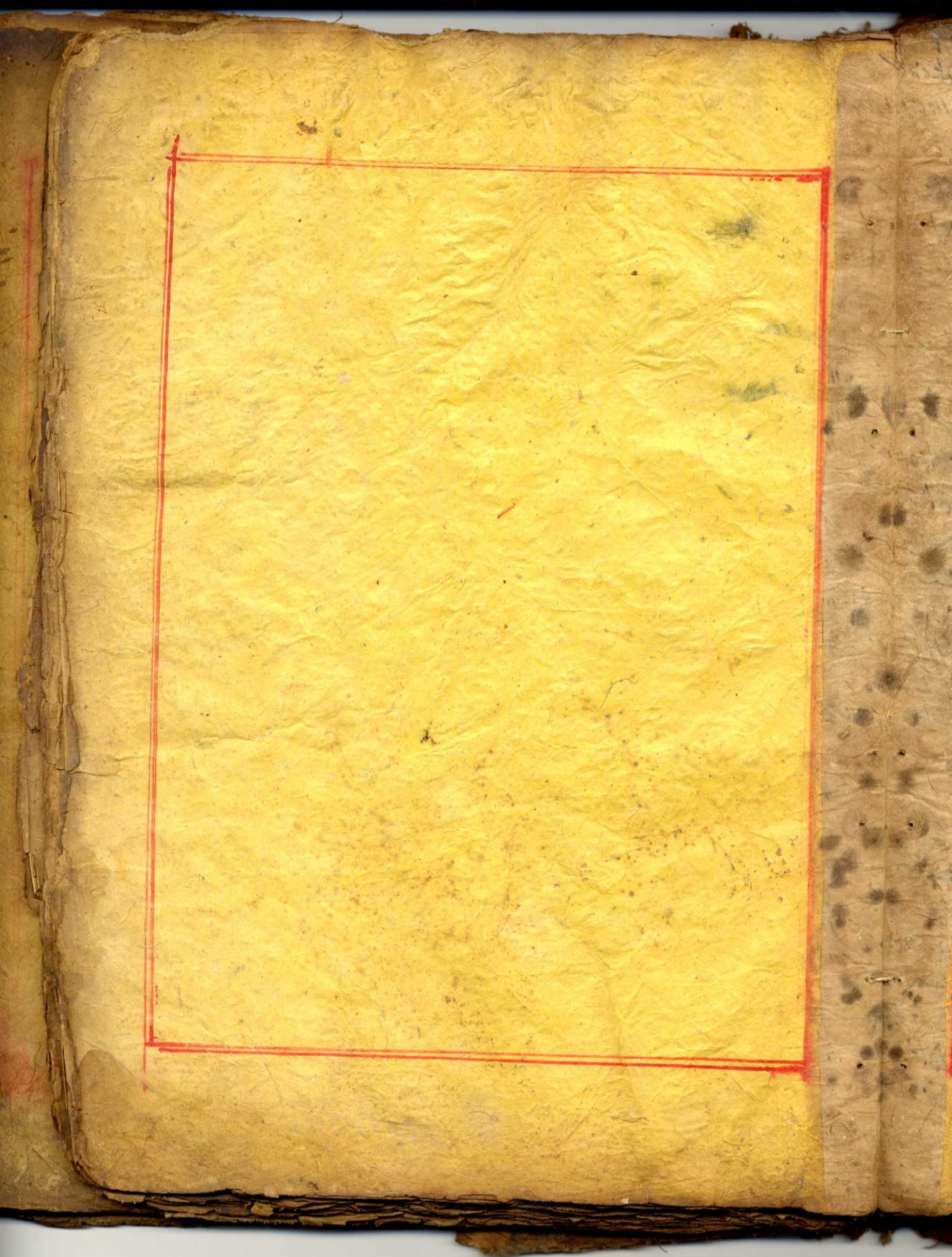
४६

अव



89







दानलीला

हो: नवसतसाजसिधारतन गोरसलैबुजतारि॥वेचनईहिमगआवही:मो
मोप्रीतीवीचारि॥

सो अवईनसंगवीहार करु दानदधीलायकै: येहमनकीयोवीचारहरि
जमोहनलादीले॥

बो: दधीकोदानरच्योईकलीला: भक्तनकीसुवदायकसिला॥दधी
दानीनीजनामधराई: रुजयुवतिनमनसुखउपजाई॥स्पाम
सघननवलीयोबुलाईसवसोकहीयेहवातमुनाई॥रुज
युवतिनितगोरसल्यायै: यामारगहवैवेचनआयो॥तीहे
वीरायेदानदधीलीजे: गोरसवायेजाननपदजे॥येहसुनी
सखउठेहरपाईभलीवातनुमस्यामसिवाई॥सवहीतमन
अतिहसवखयो: कहतस्यामदधीदानलगायो॥उतरेवन
वनगवालीनपेली: वेचनदधीहीचलीअलवेली॥

६५: प्रगतेसोप्रभुबुजमेवीलासी: जाहीमुनीजनध्यावही०
योगजपतपनेमसयेम: करि: समाधीलगायही०
रूपरैषनवरणजाके० आदीर्यतनपाये०
भक्तवससोबलपुरन० गोपबलनभगाईये०
कोटिकोटिबलुडिजाके० रोमप्रतीमुनीगावही०
कीतबलप्रयंतजलथलआय० सवउपजावही०
आपकति: आपहरता० आपहीपालनकरे०
बानसोप्रभुदानदधीले० गोपीकनकेमनहरे०
धन्यरुजधनीगोपगोपी० धन्यवनपावनमही०

धन्यमोहनदानमागत ० दुददधीमावनमही ०
 धन्यवजयेकप्रलकको ० सुखभारियेह्रीभवननही ०
 कस्तुरमनी हरधिपुतीपुनी ० सुमनसुंदरवरयही ०
 काहुगोपिगालके ० नहीयेककही बहनुधरे — ०
 भक्तजनहीतवीरदजाको ० अमिनलीलावीजर ०
 वजवीलामहुलामरुहिको ० नीत्यनीगमागमकहे ०
 दामवजवासिसदायेहगाये आनंदपदलहे ०

राग ॥ ॥ षडिरेहोग्वालीनीदीजेमोरेदान ॥ क ॥ येहमाहिरंगमे
 आवतजावत ॥ कवहुनलीनमोरेदधीकेदान ॥ १ ॥ दीगजीआवत
 पकरजातो रही ॥ फोरतेरिमदकी लकृति केदान ॥ २ ॥ २ ॥

दो ॥ चलोसखीज हा जाइयेत हांवसतवजराज ॥ गोरसवेचत हरि
 मिलेऐकपथदोकाज ॥ १ ॥

को प्रभु पूरणवस्रअमराडा ॥ जाकेसेमकोटिबलांडा ॥
 प्रभुसरणनवलकहाये ० मधुरातेवडावनआये ॥
 जाहांदेवलोमुनिजेते ० सवगोपगआलिनीतेते ॥
 देवकीसुतनामधराये ० वसुदेवहिरूपदिधाव ॥
 जवगोकुलईकाकीही ० वसुदेवहिआग्यादीही ॥
 जिनिर्नदभवनपहुवाये ० तहांनन्दकेलालकहाये ॥

जन्मलियेवसुदेवके गृह नंदके बालक भये क्षयन कोटि यदुवंस माया
युथगोपीग्वालके श्रीकृष्णके मऊ बरुत बालक गोचरावन बन गये
हरषिगावहिं दानलीला सुनों मजन कान दे ॥

चौ. सब घर घर को ब्रजनारी. दधिगौर सबे चन हारी ॥ मिलि युथ मथो
सब कीन्ही. जमुना नत मार गलीन्ही. आगे मोहन धेनु चरावै. मधु
रेखर वै कजावै. जहा बाट वसन की सोई मुरली सुनि आनंद होई
सब धार उपर चलि आई. पहिचानि लिय जदु राई. येक बालक
कहत प्रकारि तेहि सुहत नाहिं गंवारी ॥

छः तोहि सुजत नाहिं गंवारी गूजरि कृष्ण ठाकर धार के.
आई काहेन करो बिनती अजहु है वर्य सात के
हृदये समुहि विचारि जालिनि कृष्ण छांडि कहां चली
दान देहु निवाँहि अकसी करि भले तुमहु मली.

चौ. मिलि युथ गोपिका आई. पहिचानि लिये मदुराई ॥
जनिवाट सबै सुसकानी. हम आजु मने हरि दानी ॥
हम को न कहाते आई. हम को हरि चीहृत नाहिं ॥
तुम गो कल की ब्रजनारी. तुम हो वष भानु दुलारी ॥
तुम रे मिर गोर सभारी. हम रे पनु नाघट वारी ॥
कहु दान हमारे लागे. हमि के मन मोहन नागै ॥

५०
ली जी ये तनहि जी ये नन्द के सुत गानी हम सो

छः तीन लोक मे कवन जाने घाट जमुना तीर को जात आवत कुंज वन मे
इह तलाल अहीर को दान देवुष भान लाली सुजस हम सो की
ली जिये नन्द के सुत जानि हम सो गर्व वडतन की जीये ॥ ॥

चौः तव गाल मुखामि लिखेरी ॥ अरि कामुद की मरने रौ ॥
कोई हाथ प्रदिधिका ठे ॥ तव दुध चंडि सिवा ठे ॥
ये कवाली निठारि सीई ॥ प्रभू का तुम शीत चलाई ॥
कछु मागदही भरी लीजे ॥ नइ दान की रीति न कीजे ॥
जव के सराज सुनिये हे ॥ तुम ई को उदे स पठे हे ॥

छः कैं सराज के राज मे प्रभू नई रीति न की जीये नंद के गृह दुंध
उपजे दुष परे न छी जिये सदा आवत जात मधु ए दान
हम सो किन ली जीये दही मागत छाछ दुग्ध लभ नीर जसु
नी पी जिये ॥

हम हुवा की ओर ही नीचा जा हम सो इत वाज न की हे सो दान
चौः तव गाल निकहि छे सी बाता ॥ हसि बोले त्रिभुवन ता ठातु मती वलो
गमे देखो हम को जनि मानुष लेखो ॥ हम ही सब दैत्य संघार ॥ ये क
का करे कंठा विचार तुम के सको करु उमाता तेहि कालि करोपि
समाना अब उग्र सेन भये राजा ॥ तेहि कालि करोपि समाना अब
उग्र सेन भये राजा ॥ हम इ अवता हिनि वाजा हम सो हठ बादन
कीजे हंसि दान ह्मा रे दीजे ॥ ॥

ॐ जो को वेद पुरा न गावै मन मानै सोई करे पर अधीन वल हीन जो
नरक सके डर सो डरे दही मोर सको न वुझै देख अभरन आय
नी जडित हीरा लाव कंचन मांग मोतिन सोवनी ॥

सौ कित तिन मांग विराजै कित पावन नु परछाजै
कित कंठ रत्न की माला हो रमानिक पुथे नंद जाला
बाजु बंध कंगन भल सो है नक दे सर सो जग मो है
सिर बेनी उधो बहु भांती तह लागी रत्न की पाती
मनि मानिक के गल डोले मधुरी कवि किं कि ना बोले
कित पाट पीता मर पाहिसे कित षो दस भूषन की रु

छंद रय देवि विचारि जालिनि कंज वन की बाट है लुटि लेई को
सबै भूषण को नु छारे साथ है इहा सवत की दान लागै हठन
को जे सुन्दरी कंस ते हम डरत नाहीं सुनत बाट सबै डर ॥ १ ॥

चौ एक कंगन ले जव दीन हरि सो विनति वडु की न्हा
प्रभु थोर वरुन कछु लीजे अव पार सवन कहा की जे
येक बाल करी चतुराई तिन औ घटना वहु पाई
जव आई कल जी सो भाषा प्रभु नाव कहा की ई राजा
अरु लाहि ठी संग साथीं प्रभु सां प्ररी मोहि भाती
तव कल सवै लमरावे अव नाव के हो की ड पावे

ॐ ओं घट घाट गंभीर जसुना रात को नहि पंथ चलै
 बाघ सिंह बट पारवन में कुबतु म को भलिक
 हैं जुठ माया मोर परि नम सपन हैं दिन चारि
 के कोड काहु के संग ना हो अंत देषु विचारिके

चौ जव ज्वालिनी के मन माना धृगजिवन के जग जाना धृगजीवन
 धन परिवा एतु महीं प्रभूनाथ समाए अवचरण सरण प्रभुदी
 जे तन मन अपनो करि लीजे अवचरण सरण सभलागी सम दे
 प्रभु परम भू भागी पथ एती परि अधियाशी जनी छांडिय एतमु ए
 री ॥

छः जन्म हनारी सुफल करिये लाजत जिचरणान परी पल किलाज
 गमाय ज्वालिनी जन्म जन्म से बाकरी रहसि मोहन संग हिल मि
 मिमनि मानिक दीपक वरै श्री कृष्ण राधे जुथ ज्वालिनी के जवन सी
 डा करै

चौः यकर हस मरा डल प्रभू ठाना सव गोपिन के मत माना
 कोइ गंध धूप ले आवे नेवे दे कि जुगती वनावे
 तल राधो जियान प्रवावे कोइ माथे चोई शोलावे
 कोइ ताल मृदङ्ग बजावे कोइ आरति मंगल गावे
 नृत गीत नाद अमृत बानी रहस्य मंडल करत वधानी
 जहां वाजत तात मृदंगा मधुरी धनि वेउ ~~अं~~ वजावे

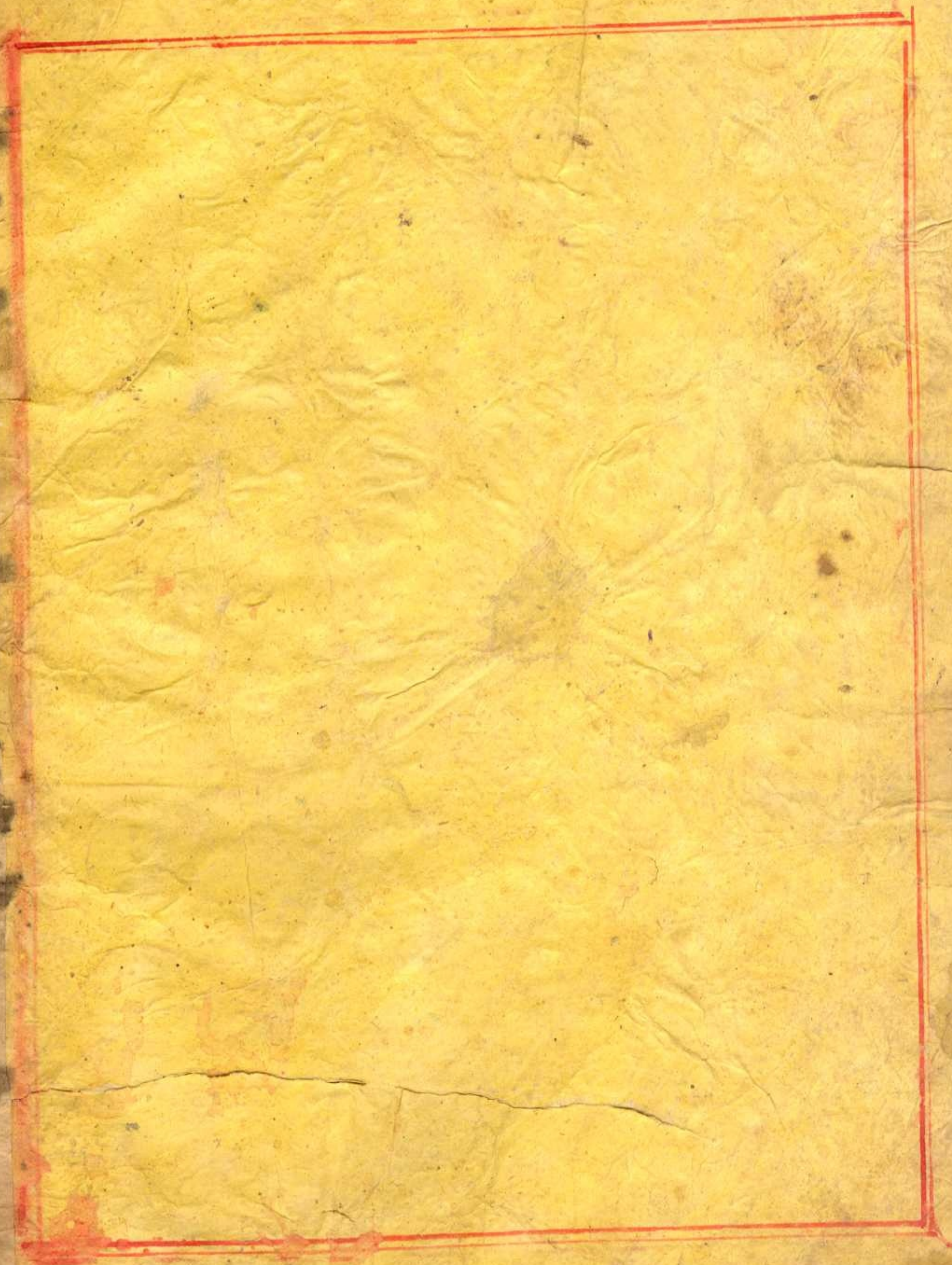
करना लवने को धोरी रह समराज को घन घोरी
न हो मार कि सोरा के मोरी दोऊ कल राधे की जोरी

छः श्री कृष्ण धर वजाये आरति जु थामिल सेवा करै
गिरिजा नंद प्रसाद पावै जगजग के दुख हरै
जो न रंगा वहि सन लोला सुनाहि जे चित जावै हि
ने तो पाव ही प्रेम भक्तो विष्णु लोक सिधाव ही

दोः प्रांसिक घोत वसावरे जाऊं घर नट नारि ॥ सकुचन पछिले दान को
मेने दुं नीवारि ॥

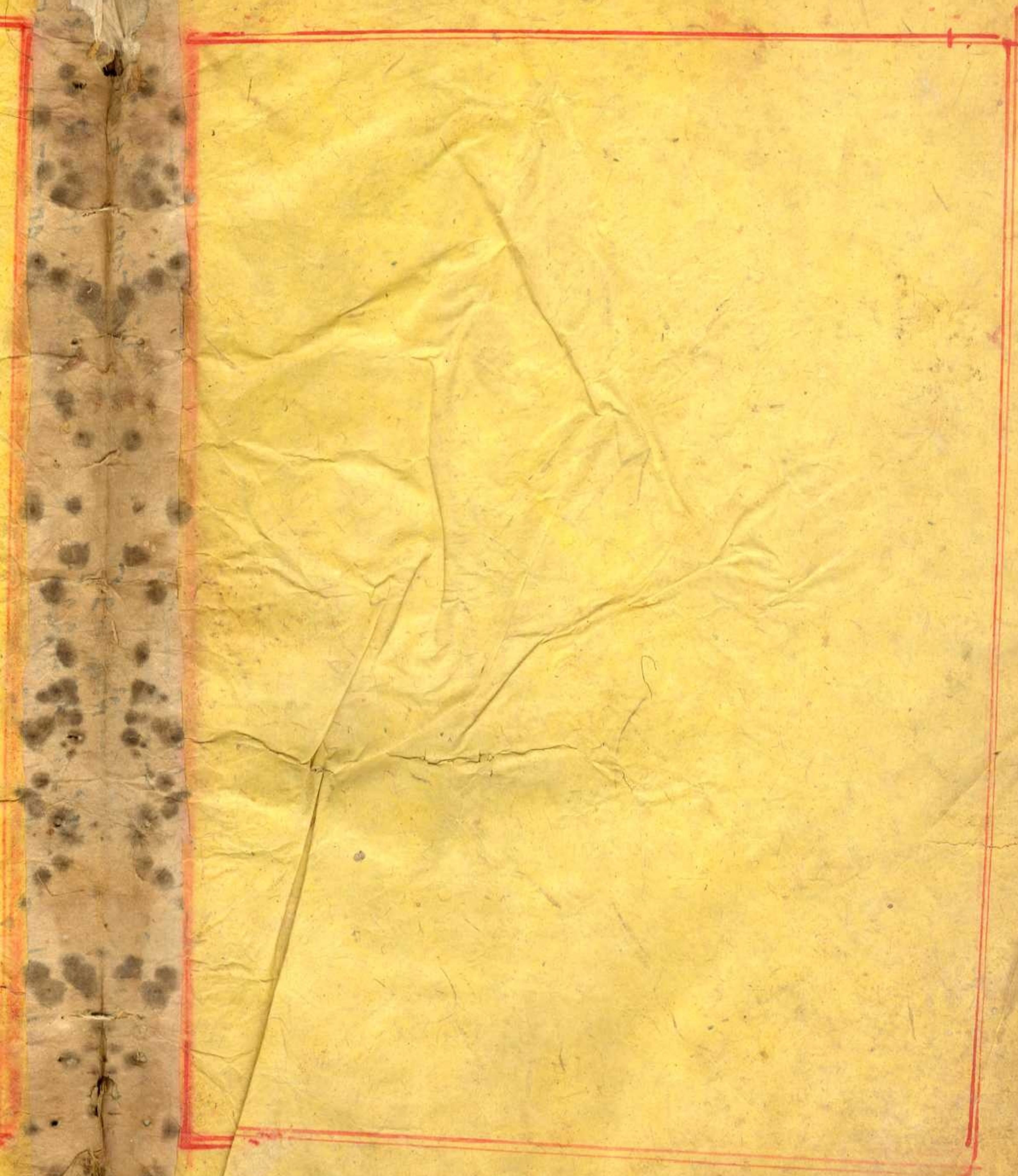
सोः ये से वचन सुनाये सपन सहीत हरि वन गये लगये चिन्तु एये सुवति
न दान मनाय के ॥

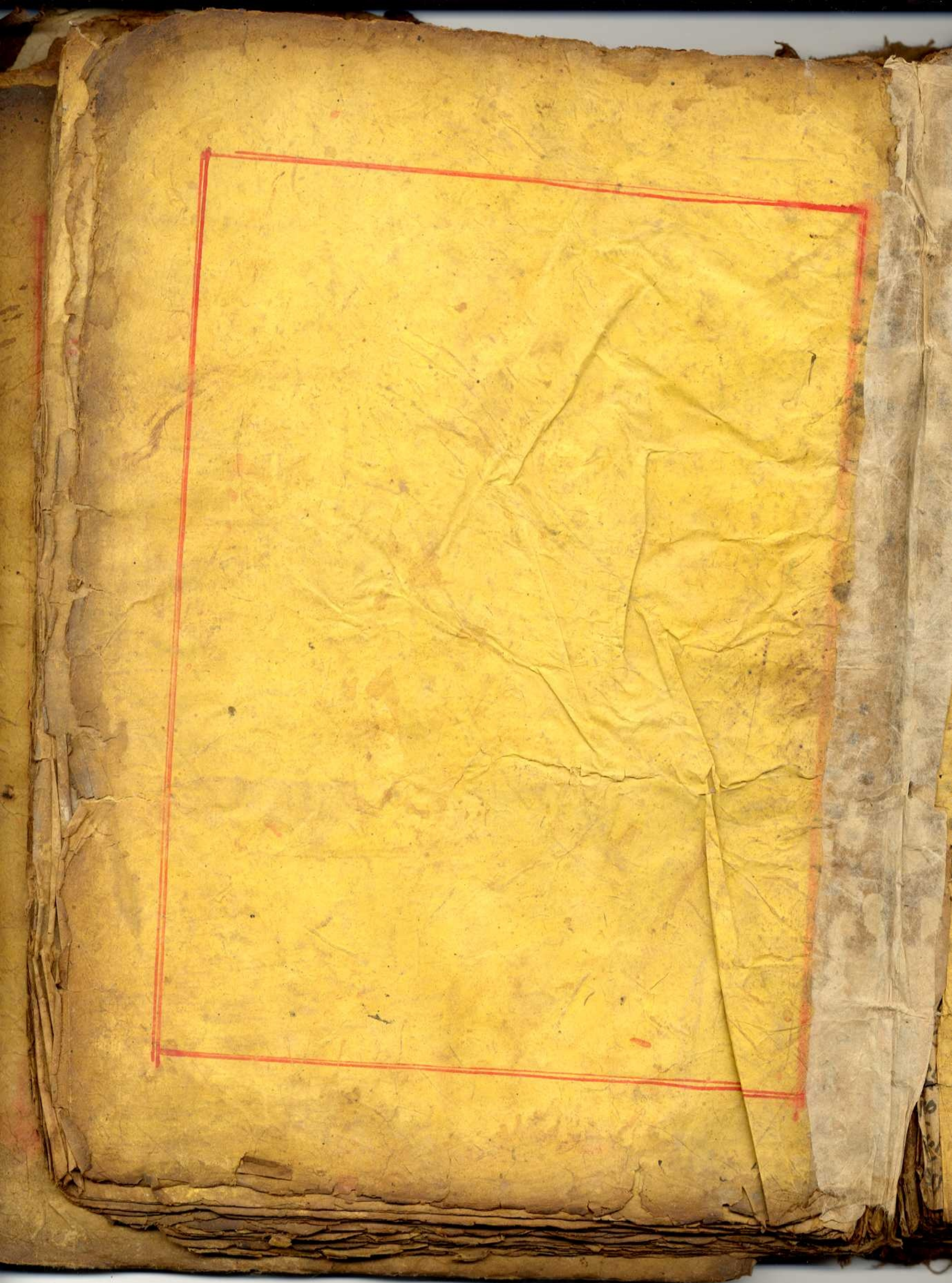
42





43





राम लोना

राग आजु बड़ावन रास राधा को नगई ॥ १ ॥ चालव लोस धीरे धन नली
 ये आजु बड़ावन रासी ॥ भैयाय कहरि ले चलो राधा ॥ आजु सुहाग की राम रा
 धा ॥ १ ॥ जैसे चडावी जैसे चडा होर हा है ते सो चीत की रही ॥ ब्रज विष्णु ना
 चने देखत है वो सदा सीव दान राधा को नगई ॥ २ ॥ सब सपि कियो य लभ
 गारये कसो यकव ही ॥ मलाये कभई एधा यक भई राधा ये कभई एधा ॥ ३ ॥
 ललीता लीय हो मृग मूढ मोहिनी विनुव जाई ॥ मला विनुव जाई एधा वेनुव जाई
 एधा वेनुव जाई ॥ ४ ॥ फूलन फुले फूल बाएनी फूल ये कभई मला ये कभई ए
 धा ये कभई एधा ये नई ॥ ५ ॥ सुरदा सब लीजाई चरण का प्रेम कली ॥ मला प्रे
 म कली एधा प्रेम कली एधा प्रेम कली ॥ ६ ॥

राग ॥ ॥ चलो ये लीपाई योरे चौ सर चरु गमी लीये लिया ॥ १ ॥ प्रथम विसा
 ल वाडला मय मल हरन मल मल न मोतीन मुख लन की ॥ तापर चन सुमर
 न की ॥ प्रतिन मनो हर छंद वेद लागे ऐतीन को सकल आस्ता भावन को सक
 ल दावन दावन को दाव कडेन कदे दावन की मेवा पान मी गरि मुख इलाजि
 ने बीभारंग लगे वही तीयाई भात्री एत्री एत्री एतीयाई भाचो ॥ १ ॥ जीवीधी
 आति पासा जी एण एमे वामे अंकल के बीधी नाय ठन के धन मरन के ॥ पठन
 परितन लागे छका रुकीत भये दौ धर मे लता संत दीपन मै अस सी छीन बोनी
 धी दसौ दी साये धार रे लुइ लीये कर दम रुदीमी की दी की दीमी दीमी धि
 धी तार धन क धन क धन धन धन राही लोइ मजी लाइ शिलीमी ली छा
 री ॥ २ ॥ सुनी जो वारे रास धने तीर ह मनो चौधु मुखन मे गुगल प के पर रे ती धी
 रुहीये सोर क लाजा न जो राजी ह मृग संतान आगम भावन को मृग संतान आ
 गम भावन को ॥ आदी लगी अठार कहिये वो लन लागे धान सुर सोलवी

धपममगगसारीगमपपधाइना॥३॥ येहीवीधीवाजीचतुरंगरसकीवाजी
 सेवाजीपकवाईनवाजीनकोजीतनकोप्रेमेनेमरसगनकेमनमेराजकाजसुष
 संपातिको॥ राजानारायेनमिह्नीकोजीतभयसव० नजीनगावेरंगवरसा
 वेडुधदारिद्रकोनादीरनादीरदीरनदीरनदीरनदीरनदीरनदीरनाइजा
 ॥४॥

राग॥ ॥ चलोराधाकुंजनकुंजनहेरु॥४॥ श्रीवृंदावनकीकुंजगलीन
 मे॥ सवसषियनमीलीधेरु॥५॥ जमुनाकेनिरतीरधेनुचछाये॥ लेलक
 टीगोवाधेरु॥६॥ चइसवीभजोवालकृष्णछवी॥ हरिकेचरणचीतपेलो
 ॥७॥

राग॥ ॥ चलोसवीकुंजमेजाइजाहमीप्यारगीरिधारी॥८॥ जोनप्र
 भवेउकासुरकोहालकरप्यारगीरिधारी॥ जैनसेजासहसषिरिसवडुध
 छुनगीरिधारी॥९॥ वींदावनलचोसीपसंगेसवेडुधपारगीरिधारी॥ हा
 मिमुककानहंप्यारिउचोप्रभसंगगीरिधारी॥१०॥ विंदावनवापुराजस
 वेमुवीहालगिरिधारी॥ कृष्णनेहातउचदारेहासुसेमागिगीरिधारी॥११॥
 नंदकीलालहंगीरिप्यारिहमारिप्रानगीरिधारी॥ सुरहामप्रभउमारेक
 कृकेप्यारगीरिधारी॥१२॥

राग॥ ॥ भजनकरतुहासुनंदकीहारेरासराधाकृपाकरिये॥१३॥ करोत
 पसियानामतुमारो॥ वैठेरहोजलगंगाकिनारे॥१४॥ गोरसुवेवनमारिसहर
 मे॥ औरकुदबाधारिये॥१५॥ वृंदावनमेकुंजकलीलमे॥ राजदीयेश्रीगी
 धारि॥१६॥ सवसवीधरनआईमहलमेदेवनआईश्रीगीरिधारि॥१७॥ सुर
 सप्रभुनमारिहरलको॥ तसएसगतागाहंगीरि॥१८॥

राग॥ ॥चलोकसुम्मीवारीगोरिचलोकसुम्मीवारिः आहरेवलभसुनीआ
ईरे॥१॥ वारुवरसकीराधाप्यारि॥भयकृष्णजीसैआईरे॥१॥ येकवनफु
लेवेलीचमेली॥येकवनफुलेअनारि॥२॥ चइसुविभजोवालकृष्णछवी॥
हरिकेचरराचीनलाई॥३॥

राग॥ ॥मोहनमदनमुरारिभजोएधाकृष्ण॥१॥ मोरमकुतसरलकुंज
धरमोरपछेपरसुभकारि॥मालचन्द्रधरमुक्ताहलधरकारुमेकुंदलहेम
रि॥१॥ वनमालाधरतनमालाधरवैजंजीमालाधरे॥सेवचक्रओणरायप्र
धरवंसीकेछवीहारि॥२॥ देवराजकीगर्भतोरकेछपंनकोतीवलमारि॥वा
लवालसवगोवाचजईगोवरधनगीरिधारि॥३॥ वीडावनमेकुंजकलीलाम
रासरच्योहैवनवारि॥हातलकृतियासुववोसिधरवोसिकेछविभा॥४॥
दधीमयनीकरुडनाधरप्राणनाथकीवलीहारि॥सुरदासप्रभुतिहारि
हरसकोहरिकेचररावलीहारी॥५॥

राग॥ ॥मगमयनेदलालमैनहिजाईहो॥१॥ करीछविगातकुंजन
मेकहिछवीहलकावनमाली॥बोचकतोचकरेसरलीमेमनमेराहोतवीहाल
मैनहिजाईवो॥१॥ मोरमकुतमकरकुतकुंदलवाकौनैवनारिमा॥चोतवनमेकहु
जादुकेनाहवठेकठिनगोपालमैनहिजाईवो॥२॥ नीनपतिदासमागहैकुंजकीज्यो
प्यारिगोपाल॥मसलीलालप्रभूआफवनायेसमुहामेयेइनीहालमैनहिजा
ईहो॥३॥

राग॥ ॥अलखारेछवीलतुकीमतुकछवी॥१॥ जमुनाकीनारेसवठाडे
येसवीया॥अगभारेमोरेलागीसवीया॥१॥ हेकहुवातघवरथहिदि
नकी॥जोवरमागेपरदेसमेवतुकी॥२॥ सुरदासप्रभुतीहारीहरसको॥ह
रिकेचररामैकुदयेमैरवीया॥३॥

राग संगलीयेवजनाशिमैमधुवनरासरच्योवनवारि॥१॥जैजनुनाथ
 जसोदानंदन॥जनलालचतुहैपददेना॥२॥कालींजीजननीर्मलसाहो॥उ
 वतिसंगलीयतहीमोहीसे॥३॥गोपीनीसातवीसातवीसए॥जैसेजलबीज
 मीनभरिजाईसै॥४॥मदनबीलोदवीरहीजनगावही॥मदमदगतिभावन
 नावैसै॥५॥बीचबीचवीरहीनीजवतीवनावो॥औलेकहीसंगमधुखुनिगा
 वसै॥६॥करकगनकीकीनीबजावही॥गतीवानगतीसंगनचावहीसै॥७॥
 गोपीनअवीरगोपालनगावही॥औलेकहि संगमधुखुनिगावसै॥८॥घं
 डीतअधरवीवीधीषुषपावही॥येकहीयेकवीतापसुतावही॥९॥सखन
 जोहनपापनसावही॥तोरहीहालकपातविदारहीसै॥१०॥

राग॥ ॥आवैरसियामोहनछलरसियामोहन॥१॥आरेहरिदीदारेवन
 हरिगोवाआरेहारगोवावठायेहरिगोवा॥छवरगसीजभीमुखजावेनक
 णिलालकरलीयेमोहन॥२॥आरेहरिमकुठकेरुलकेललीताआरेहरित
 लीताकुंदलहरिललीता॥अंगअंगसववनेमोहन॥३॥आरेहरिअववतीहा
 रिजईनप्रभके॥चाहीनचाहीवनेमोहन॥४॥आरेजाकेदरसथसुरनरमु
 निआरेसुरनरसनीमोहेसुरनरसनी॥सुरापुराहतसंगवालसवलीयेमो
 हन॥५॥

राग॥ ॥मडकीधरेसौरछत्रधरेधरेयेकवालसमडकीधरे॥१॥येहवाल
 बनीभवनमोहे॥सीपसंवरकादीकध्यानधरे॥२॥मोरमकुठमकराकृतकुंद
 ल॥गलदेजतीकेमालाधरे॥३॥श्रीवृन्दावनकीकुंजकलीलामे॥राधाकृष्ण
 संगरहे॥४॥चंद्रसखिभजोवालकृष्णछवी॥हरिकेचरराचीतध्यानधरे॥५॥

राग॥ ॥ शुकीशुकीवामदेदेजोवीराजामै राधामाधोऊजवनेहरिराधामा
धोऊजवने॥धू॥जोतुमवैरसोपीठवढायैराधाहरिगैलतावनेहरिराधाह
रिगैलेताहीवने॥१॥आगेआगेचलेस्यामसुंदरवरपीछेदृषभानकेदुरा
रिमोहन॥मोहनसहीतराधाप्यारि॥२॥येवनहैहिंदीसरवनहेतुमोहे
गेलवीसरईमोहन॥मोहनसहीतराधाप्यारि॥३॥

राग॥ ॥सवराहावातनेधरफीरेवडावनमेरिसामारिया॥१॥सुनजंगल
जंगलसुनसाजपरि॥कहुसुनपापकरिया॥१॥माथेतीलकलीलालवीरा
जे॥कानमेकुंडललतकनैजा॥२॥गोकलधुडवडावनधुडे॥धरफीरेमथ
एनगरि॥३॥सुरदासप्रभुतुमारिदरलको॥हरकेचरणकीयामेवलीह
रि॥४॥

राग॥ ॥वंसितेरसुनाकाधाकुंजनछिपिगईरे॥१॥सोरसयेगोपीनीना
काधाधुरेकुंजननाहीमिलेहो॥श्रीराधाजिप्रकारोकाधाजसोमतिमुत
काहागईरे॥१॥येकसपीलेकेकाधाधुरेअंतरध्यानभईरे॥नतवरकाधा
देवीयानामेमलानवहरिप्रगतभईरे॥२॥

राग॥ ॥जादीनगोपियनसंगछाडीकेमोहनअंतरध्यानभये॥१॥जा
दीनकेगतिकहालागीवरनसखियोमेजैसेहातभई॥रोवनीषोजतिप्रछ
तीनरुतहुनुमदेवीकहीस्यामनये॥१॥हेतुनामिहेमाधववीमालतीहेधा
त्रसुनदये॥तुमहरिजीकोबडेपीयारिकहोकहोकाहागये॥२॥हेकदम
हेकडलीकेसरिहींगजावतआपगये॥हेगोवरधनजसोदाकेसुषुनुमदे
वीगयेप्राणालये॥३॥देवगयेहप्रभूहेमृगवनचरहेजलचरगजराजह
॥देहुंसुनसबतलायेदेहोहरिलक्ष्मीपातिजीवदानदये॥४॥

राग॥ ॥सुनगवाहालीनीहोअवकहीदेवोहेमोहन॥१॥गलीयाकेगली
याफीरनजसोदा॥कहीदेवोवालगोवीराडअद॥१॥जाडमैजनीहैहरि
मेरिनेजीहैं॥सबतेजोलागीगयोहनीया॥२॥चउसबीहीतवालकल्लखी
॥सुननैलोहमारिभवनवा॥३॥

५७
राग॥ ॥वतादेसवीकाहागयेभगवार्॥ध॥गोकुलधुडेवीदावनधुडे॥७७
तभईमैहैएन॥१॥करजोरजोरछडोवोरे॥आगेमेरोवचनयेकमानवताडे
॥२॥स्यामविनामोहेचैननआवै॥लागेवीरहकेवानवता॥३॥स्यामवीना
गोकुलहोयेदोलुं॥वीरहाकुरसमान॥४॥तासुदर्सनवीनमोरेननकी
होतसवी॥घरघरकरतपहीचान॥वताडे॥५॥

राग॥ ॥कहीदेघोस्यामसुंदरके॥ध॥ज्यादिनअंतरध्यानभईहो॥सु
धीनरहेतनमनवहीधरके॥१॥उछतहेवनपुगामुलसे॥काहागयठक
रवहीनगरके॥२॥सोरहोसैसाथमहपठरानी॥छाडीगयोवैरगीनीक
रके॥३॥गावहीउजरपरनापरही॥लागीरहीरठताराधावरके॥४॥

राग॥ ॥नहीआयेतहोदरदमोरेछतियायकाहा॥ध॥जरनीरवाननीर
वीधवीलेहो॥काहासोमलाकाहासोकवओसोवनीयायेकाहा॥१॥
बुझलपीरसरिवोराजीत॥आधिरयेभलाआधीरयेहीरसुवनीयायकाहा॥२॥

राग॥ ॥लेयारूपमुमनीकआईजाहागयेकहाईसारिरैनगमाह॥ध॥
येकतरधीथाईमोसोविततिकरतहैं॥अवकटिनकरोगीतुमसैउरहैं॥१॥

Narayan Man

राग॥ ॥गोकुलवासिगोपीनीसबनेज्याहुवैठजमंडलमे॥६॥जबगो
पीनीसबज्याहुंवाहैंरामकरोंकृतयारकीया॥श्रीरुहमजोतयारभयो
हैदीनारवसिधुनीकीया॥१॥हेतुलसवीवीनरुहसरहीकेराममराउल
मेनाचकीया॥सोहीसबसेस्वर्गव्यापिभयदेवकंन्यादिमोहभया
॥२॥सोओरमैस्यामसुंदरनेयकसविलेलोपहुवा॥यहीसमयसोस
बगोपीनीलेरोधकरिकेवडहुवा॥३॥हमाराडुषकीवातदेवोसवीअ
वज्युडनेकोवेधहुवा॥सावलीपुरतीकेचरणाचीतधारिधुनेफीरेठकीव
हुवा॥४॥हेतुलसिनुमहमधुमालतीरुहदेवातोलाचकहो॥हेगजएज
वाघमजुरमृगवंसिंवालेकोनुमनेदेवा॥५॥अैसेपछकीगयासवीवीच

मोहनीपल्लीप्रगतहुवा॥ सबगोपीनीकेत्रीप्रकारिके घरघरफोरकेच
लेगया॥६॥

राग॥ ॥चलोसखोकिंजमेजाई॥जाहाश्रीप्यारगोरीधारी॥१॥जौन
प्रभूधनुकासुरकोहालकरप्यारगीरधारि॥जौनसेत्रासहेसखीरिसमेहु
बधुतगीरिधारि॥१॥बीन्दावनचलोसखीसगसबदुखपारगोरेधारि॥
हासिमुषकानहेप्यारिउतोप्रभूसंगगीरिधारि॥२॥बीन्दावनवासुरिबाजे
सवेसुधीहालगीरिधारि॥रुहनेहातउचदारेहासुसैमागगीरिधारि॥३॥
नंदकीलालहेप्यारिहमारिप्रानगीरिधारि॥सुरदासप्रभुतुमारेभक्तके
प्यारगीरिधारि॥४॥

राग॥ ॥आवनकीमनभावनकीवलीहाललालजीके॥१॥नवनबारआ
ऊहारेआये॥भागवठीयेहीपावनकी॥१॥श्रीबीन्दावनकीकिंजगलीनमे॥
ऊलवारिअनेकलावकी॥२॥चइसबिहातवालरुहलखी॥हरिकेचरणा
चीतलावनकी॥३॥

राग॥ ॥सोवसोवपासावहुरुहजुयारु॥१॥रुहजुयारुपरामार
सिकयावनरे॥१॥सीरसमदुकलोवहामसकुडलरे॥मोहनीवासुरीपु
याकडमूसदीलरे॥१॥बालउगआकासनमीवापलेहलरे॥गरुडया
ललगयाउसुहुनहीलरे॥२॥जीगधनजीगजनछीतअरपनरे॥अवला
मनरथपुरेयानाबिबरे॥३॥

राग॥ ॥मधुवनबेलतहोवनमालीर॥ध्रु॥जलधरनीसोषाईसावेमाथे
मकुरभरि॥चडकतिलपरवाजेवासुरिसवगोपीनोकेमनहरि॥१॥गो
पीनीगनसबबेलनलागेभीमलजमुनाकेतीर॥वासनलागेकदमकिनाथे
जातोकससीरहरि॥२॥गोपीनीगनसवगावनलागेकठतालबजाई॥जमु
नाकेनीरदहमुदलीवाजेगोवरधनगीरिधारि॥३॥बरवारितुघनगरजनता
गेबिजलीकेतरवारि॥४॥

राग॥ ॥अवनाहरिराससर्जुचलादेधिआईहेरहिरासर॥ध्रु॥धुमकधु
मकधरसचलनकीनीकीनीकीनीघननन॥तननननजानलेतोछबलागेहे
॥१॥वाजेतोमृदंगमीतुमीनाधीमताधीमताधीमता॥सुंदरगतीनरागनेरि
नेनामैअर्वडर्वलेतोतानतवलातनदेखीआयरे॥२॥कोहीसीतारकोहीत
मोरकोहीबजावेतगतीमृडंगा॥कोहीकोहीकोहीतानलेतासुरउठाडनीरे
॥३॥ताताकीतितागताथैयाथैयाहोईहा॥वानीसुरसरदहरेहरिमृडङ्गरे
॥४॥ब्रह्माविष्णुशिवसहितनारदमुनीसबछकोतभये॥ऐसेकबीकौनकहे
मुनीजनसबहो॥५॥६॥

राग॥ ॥दोताहुलतस्यामास्यामहुलावतचलतपवनसनननसननन॥
ध्रु॥राधाहुलतस्यामहुलावत॥लेतोतातनननतनननतनननननी॥१॥सब
सखियेनमीलीस्यामवीराजीत॥उरतपवनभनननभनननभननननन॥२॥चहुस
बोहीतबालरुलछवी॥पवनहीफुलेहुनननहुनननरुननननन॥३॥३॥३॥४॥
राग॥ ॥स्यामसोनैनदिललागीगईअधियास्यामा॥ध्रु॥मनभावनमन
मोहनीरंजनरुलकलासरवारुयभंजनचंचलनारिचपुवसकीनुमुरलीमने
हरमनहरलीनु॥कलीनपरेनफलतदीनरतीया॥स्याम॥१॥कालीमर्दन
कंसनीचंजनजगवदनछोरावेनीरंजनसुरस्यामप्रभूहरहरजलोदा॥

नीरवीत भये हो स्यामवीतु अधिया ॥ स्यामसो नैनादीत ॥ २॥ —

राग ॥ ॥ जे गोवीन्द जे गोपाल जे गोवीन्द कहियो ॥ ध्रु ॥ गोपाल कहत लाल
वधी अधीक जान होत है ॥ खेलत वृन्दावन सखीनी संग रहिये ॥ १ ॥ धुमक धुम
कचाल चलत पाये लवाज्य कहक मोरि ॥ ऊतत पीच कारि गेले लाग लाग रहिये
॥ २ ॥ लकत लकट लाल गोपी संग लालवाल ॥ उरत भमर भर भारना गीनी संग
रहिये ॥ ३ ॥ सुरदास हरि प्रताप हरि के गरागाई ॥ लाखी गती सखीन जात चार
रा लागी रहिये ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ आरे मो सो करत बीहारी लाल गिरधर करत ॥ ध्रु ॥ गृह गृह सेनीक
लीक जवनीता ॥ देत लागी मोरे लाल जी के गाली ॥ १ ॥ उठीरि सीयानी बाके मना
जसो दा ॥ काहे देतो प्यारि मोरे लाल जी के गाली ॥ २ ॥ घरी काली हल दामोडरि
ठोडे ॥ लागल गहना छुतत पारि ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभू तुमारि दरस को ॥ जन्म जन्म
को दासी तुमारि ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ हरि को नचाये राधा प्यारि ॥ ध्रु ॥ पहिरो वे सारि बुन्दरि सिरे मे मडुक उ
तारि ॥ छीपी रहे काहा गोपीनी के भीतर बुझि पेरे जै से नारी ॥ १ ॥ सुरदास प्रभू तु
मारि दरस को हरि चरणा चीत लाई ॥ श्री वीरदावन की के जगतीन मै चाल चलै वन
वारि ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ खेलन के हूया वीरदावन जाई हो मधुवन गई हो ॥ ध्रु ॥ मोर मकुर सी
रहीरा हल के कान मे कुंडल मोति हल के को सु मम शि को गल मे दोरे गल मे
जये ती को माल विराजे ॥ चतुरभुज रूप कमल नेत हरि जी को खेलत ॥ १ ॥ राधा
सखी सब रास खेलै बैजरी मृडंग दंफु वजाये देव कन्या दिरीषी सब मोहि गगन में
दल से फूल बरसाये ॥ असे धुम चलायो हरि स्याम ने खेलत ॥ २ ॥ स्याम सुन्दर

नेवीसवनमे मधुरलोयेन वजाये सोही सबद सेया कल उठी के सब लषी याग
मीली अंगार करिके ॥ रास खेलन को गयो है मधुवन खेलन ॥ ३ ॥ राधा सब लषी
मगन भई के कृष्ण चरन मंगल गायो वनमाली को पुल च द्रायो भक्ती पूर्वक
पूजा करिके ॥ घर घर कीर के जाई ये लषी सब खेलन ॥ ४ ॥ ब्रह्मा संकर नारद मु
नी सब सार दसे सगरो शजी ने रेव धेन को ध्यान करत है दरसक उन को परे
कठीन है ॥ बीना भक्त से पायेन ही हरिजि को खेलन ॥ ५ ॥

श्रीराम कृष्ण गोपाल दा मोहर हरि माधे मद मुदर के सब मुरती काली महर कंस
कीती वीजे देव कीती दन नुम सरन चक्रावात वैरा मही मंगल सायेर मंगल क
रनाये यती नाम जपो नो सुवासर जनम जनम को भये हरन हरि गोपी रे परमा
ने दे भज गोविन्द राम राम श्री नागर नौलष सीर मनोहर मोहर मुतनी ल्यामा
मोरम कुट पीता म्वर सोहे ऊँडल रुत के काहा बीदा वनमे रासर बोहे सह
अगोपी काहा राम लक्ष्मन जात कीजे दोलो हनुमान कीजे जे ॥ ३८ ॥

भजनवसोवासके

रागभजनरामायेन॥ ॥ तेगदियेभवन सुरतलागीवनको॥ १॥
 माताकेके बोली मारे गाहीलातनमे॥ ॥ वानपीदनी अयोध्या
 छोडीछु मपिताके ववनरामचलेवनमे॥ १॥ पीताबचनपरमा
 नकीयोहै॥ धनुषवानलीये काधमे॥ ॥ जवरथमधुवनहाक
 डीयो मधुवननको॥ ॥ आनन्दभयोमाताकेकेकेसनमे॥ २॥ मा
 तकेसितलासोचकरतुहें॥ ॥ वैठे अपनेमनमे॥ ॥ सीयागुमकोबीया
 रितगतहै॥ ॥ प्राणवसनमेरे छोटे लछुमनमे॥ ३॥ तुलसीदासआ
 सा रघुवरकी आनधरे बीसिनमे॥ ॥ नातगुमिगायोउठबोली वरु
 रोगेगुमगुन कीतनदीनमे॥ ४॥

आजगमडोउवनकीसीधारे॥ ५॥

वसरथजीने बताऊपायो॥ अछरलीखदीये कारे॥ धनुषवानली
 येरामसिधारे॥ लेखनसिकरभैयाआयेहंसकारे॥ १॥ चीछीनगरप
 डितलछुमनके॥ छोडेकरादिये ठाडे॥ लेचीछीननमनमेवाची॥
 आभकेकेनेहमकोदेसगीकाले॥ २॥ चतभरतदोउरोते छोडेको
 सीत्यामहागि॥ नेनाऊनकेयोचं वतहैं॥ जेसेजलकेपुकारे॥ ३॥
 तुलसीदासआसारघुवरकी॥ लेवतसवनरनाहि॥ सीयासंगलई
 लछुमनमे॥ सुरतलागाईसीने॥ वनकीनारे॥ ४॥

अवधप्रदिमूचेनगारे॥ देसरागसरगाई॥ छडवाकरीइइमुखेहैं॥
 ॥ मातकोसत्वावहुतदुखपाये॥ १॥ चरमेभरेमातकोसत्वा॥ वाह
 रभरतआई॥ नेनाऊनकेयोवरसतहैं॥ जेसेवरवाकीकरुआई॥ २॥
 कहैरामनेमनोआईलछुमनसीतोकोसंगआई॥ सीताजीकेम
 लीयेमे॥ ॥ अनीधर्महमारोचटजाई॥ ३॥ तुलसीदासआ

सार चर की॥ हरि चरण बल जाई॥ हु कम्भी ओ हँठा कर जीने
॥ सीता जी के लछमन रथ में बैठाई॥ ४॥

आजर हो मेरे रघु वर पारि॥ १॥
आज की रैन आयो ध्या वसरो॥ ठुठ जावहु तस कारे॥ मे के सेरु
मात को सीत्पा॥ दसरथ के कई से वचन हारे॥ १॥ ताल रघु
ये पो लव नाये॥ आपर हेर ख वारे॥ तान वान के सर वन मारे॥
जादिन के कई ने देस नी कारे॥ २॥ नौ दस मास गर्भ मौर
ओ॥ तवन भयो मोहे भारे॥ जवरथ हा क दीयो मधु वन को
॥ आजर हो मेरे अखिया के तारे॥ ३॥ तुलसी दास आसा रघु
वर की॥ राम चन्द्र वन को सीधारे॥ सीता संग लई लछमन ने
॥ सुरत लग गई भैया वन के की नारे॥ ४॥

वीपतपरी को दिन लगत तुरोरे॥ ५॥
भोर भई जब कीर न पतारे॥ तव से दुरव भयो रे॥ मात को सी
त्पा ठाई रो वे॥ अखियन में जाके रुदन म बोरे॥ १॥ सुगी
डो अयो ध्या नगारे॥ सुनोत वृधारे॥ भरत भैया ओ ठ
मो ले॥ मे दुखी का लना दु सो रे॥ २॥ नीकल की ले
सेवा हर छोद॥ भारि दुख भयो रे॥ मेरे सत वन वासी हो गयः॥
मो दुखी को का लना दु सो रे॥ ३॥ जवरथ हा क दीयो मधु
वन को॥ वृक्ष को वो भयो रे॥ तुलसी दास आसा रघु वर
को॥ राजा दसरथ जीने प्राण त मोरे॥ ४॥

भजनभरतजी के

भुजेभरतराम का नामाई ॥ १ ॥ ॐ ॥
 जबसे धर्म भव धरि मेः मोहे दुदासी आई ॥ धरणी लीयो
 और घाट जात मेः ॥ प्रजामाता मेनेः रोषतनाई ॥ १ ॥ सीयावी
 नामेरी मंदिर ॥ राम गोतल छ मन की ने ठकाई ॥ २ ॥ माता के
 कई ओठ को लीराम लखन दो उभाई ॥ उन को तो बने वास
 भयो है ॥ तुम को तो गदिमै दंगी दिलाई ॥ ३ ॥ कहै भरत तुन
 माता के कई ये क्या कुमत कमाई ॥ तुलसीदास आसार
 धुवर की ॥ इन बात न मे नहि है भलाई ॥ ४ ॥

कहै भरत तुन के कई माई ॥ ५ ॥ ॐ ॥

राम लखन दो उवन को पठाये ॥ मेरी फिरावे अब राम नही पाये ॥
 ॥ १ ॥ राम लखन तेरे काहू बीगा डो ॥ कहा बोट कीयो दसर धराई ॥
 ॥ २ ॥ बदे राम और लख मन भीते ॥ राजपारु की को छाई ॥ ३ ॥ यह म
 तमाता तो हे कीत दोनी ॥ साचवता नही ले कुवीस आई ॥ ४ ॥ अब न
 ती कु मे भव धरि मे ॥ जवल गदर सरा मन ही पाई ॥ ५ ॥ तुलसीदा
 स है दास उसी को ॥ जा को नाम लखन व पाई ॥ ६ ॥

भजनभरतजी के

मन की मे नही हवी गुलामा ॥ ७ ॥ ॐ ॥

लख भवन लख गोली लासन ॥ उन वीन क छ नामूहाना ॥ १ ॥ राम ल
 ख मन वन को सीधारे दसर धरत मे है प्रान ॥ २ ॥ बीर कोर को बल
 रिमाता ॥ दाहिं भी ले डो भ्रमा ॥ ३ ॥ तुलसीदास आसार धुवर की
 ॥ हरि के चरन धर ध्याना ॥ ४ ॥

भजनवनकेरहनेके

वनहिमें जाहरिने कहरि वनाई ॥ के ॥

भोगपत्रकीदनीक दीया: चन्दनवल्ली लगाई ॥ हरियेल
वाडावाये दई हैं: गडिनसे मगा चुग जाई ॥ १ ॥ एमलतहु मनसी
लकेवैठे: सीतावागु नार्ह ॥ हरियेल मगा चुग गयो: मगा की
जातल मेरे मन भाई ॥ २ ॥ इतनावचन कृपा रामने: मगा कीगो
ल दवाई ॥ धनुष बाण लीये गेल मेटाडे ॥ चौक सरहना मेरे
ल दमन भाई ॥ ३ ॥ दुर जाये जो मगा मारे: हाहाकार सुनार्ह
॥ सीताजीज वयो उठ कोली: अपने वीरन की लख मन जते स
हार्ह ॥ ४ ॥ मगा मारे एम धर आये: लूनी मटे द्या पाई ॥ गल
सी दास आसा रघुवर की ॥ सीता वता दे मेरे लख मन भाई ॥
॥ ५ ॥

प्रेम कधीमें ताजो गी अलख नगायो ॥ के ॥

अलख २ गोजी खडा पुकारे ॥ सीता ने मून पायो ॥ हठ जाजो गी मेरे आ
गे से ॥ तेरा काल लखी के हाथ जो आये ॥ १ ॥ बारह बरस वन खंड मेवी
नो तेरो पार नहि पायो ॥ मोली ले के मागन नीक सो जल के प्यासो
रानी तेरे घर आयो ॥ २ ॥ अंग भभूत रत्ना के जो गी: अंदर हि धसत आ
यो आसन मार मदीमें बैठो ॥ जब जोगी जाने नाद बजायो ॥ ३ ॥
गल सी दास आसा रघुवर की ॥ हरि वरणो वल पाये ॥ सीता
पकड़ जो ली में डाली ॥ जब जोगी जाने लत को मै आये ॥ ४ ॥

रामगीर्णः ॥ ॥ कावमनामयानामयेनेकेहुमदुरेः पल्लवद्विबो
नेवातछात्रमायाकयारेः ॥ १ ॥ अनेगुचीनतया मनकीमन
सरे भक्तिनईश्वरिया ध्यानयायप्रवरेः ॥ येनेमदुसंपतीचोनेमदु
थोसंसारेल्लगमशकेनकाठेकेनाजकतल्लरेः ॥ २ ॥ जीगुचनगीगु
जनगीगुसंपतीधका नाहाकवीछयसं भुलेजुयाचोनरेः ॥ ३ ॥ हु
यादीनसंपोचीगुयावनेमात्मीः चनसंपतीनेकगधेयनेतेनारेः ॥ ४ ॥
अनेगुजन्महीलाधुगुनरुजन्मगुल्लः काननभात्तपावचेतयागका
वरेः ॥ धोजन्मसचेत्येयायनपुतसात्मीपतसपहुतावेगुयेमा
लीसोवरेः ॥ ५ ॥ हूकहभक्तनगीर्णनल्लाईरे दयेमदुनरुजन्म
अहेफुकेमतेरेः ॥ तनमनसततयासुतीपदगुयेकाववीवे
कनवीचालनभजेयागकावरेः ॥ ६ ॥

रामगीर्णः ॥ ॥ परमात्मामनपत्पामयागवीसयेवासत्तात
रे ॥ १ ॥ कालववेलेहीताभुलेजुलः गुभनयावेसेतमासायात ॥
धुधकात्तसंवेठीधरेयातधन्याकाकाकात्तनापत्तात ॥ २ ॥ पु
जायानाथासंज्ञकलातः ध्यानतयमफुयामनपीवांत ॥ आत्मा
सादिसकस्याकेलातः मनतयमफुपीध्यात ॥ ३ ॥ रामनामतोतावी
मयेधातजमनलाकमच्यात ॥ साधुसंननभनयातपापीदकोजगा
लेलात ॥ ४ ॥ चहिहीहियाहुईद्यौजालः धंगभायधर्मवतेया
त ॥ चंडीकादासदेकेवीतीयातजमभयपुरकावीयुसाग
त ॥ ५ ॥

क. ३५ गु. ३५

भगवतिताहरनेके

भारित्तुमनसीताकौनहरीः॥६॥

गारप्रचठकेसागरदेवोः॥नहिंकहुगलभरनेकोगई॥१॥
॥हुहुकागमंदितपरवेठे॥सुनीमठेयापडीः॥२॥क्या
हरिलेगयोत्तकापतिरावनः॥क्याकहुसिंहनेखाईः॥३॥जल
सीदासआसारदुवरकीः॥वनहीमेंवीपतपारिः॥४॥

माललीला

राग ॥ ॥ श्रीराधारानी तो हे मनावन आये ॥ र्क ॥ भीतर बाहर दोरे बदी है ॥ तो ही
कारन आये ॥ १ ॥ पात घाट बोझावन धुदे ओर धुने नद गाई ॥ धुद फीरे मधुता के ग
ध्वी अवमोले वरसानी ॥ २ ॥ आवत जावत हमै ठकेली कोहे वी सारि शधी ॥ पैजा परो
गी भिते रिललीता आज तुम कोहे वी सराई ॥ ३ ॥ श्रीवीजावन की कुंज कली मे मोहन
तेरु करि ॥ चहु सषी हीत वाल कृष्ण छवी हरिके चरणा चीत लाई ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ बीच वात वनी हो राधा तेरि नैन वीच ॥ र्क ॥ हुकी आवत हुकि जात वद
न पर ॥ नैन लके बीच वात वनी हो ॥ १ ॥ सुरदास प्रभु तुमारी दरस को हरि चरणा चीत
धावति हो ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ मेरे तो जीवने राधा को हेरु सि सुख से जमोरे ॥ र्क ॥ पैजा पही गी भिते रि
पीया जी तो रि कहे ॥ १ ॥ पैजा पही गी भिते रिललीता ॥ पैजा पही गी भिते रि बहावति ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ तुम तो भोरे प्राण पीयारि दरसन मो की दो जीये राधा ॥ र्क ॥ क्योले
गाई राधा क्योले वजाई ॥ प्रेम से ल्याई गोवाधे रो ॥ १ ॥ सुख से गाई कृष्ण कर
मे वजाई ॥ जानै से ल्याई गोवाधे रो ॥ २ ॥ चहु सषी हीत वाल कृष्ण छवी ॥ हरिके
चीत लाई ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ राधा वीनु ना ही जीया बो जो ॥ र्क ॥ ये कंद मरि के राधा महु रि सगे
बो राधा ॥ महु रि मे घोटी पीया बो हो ॥ १ ॥ दीछी या सहर मे छुडी या मगे बो रा
रा ॥ जीया रमे हात गल बो हो ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ तेरि थुमक चाल राधा प्यारि का हो ले कजरया भारि ॥ र्क ॥ तेरे हात
बो मे मो है नगीना ॥ मेरि यारो से मत हरि लीना ॥ १ ॥ तेरे दास वामे मो है वटिनी ॥
मेरो यारो से कर ल प्रीती ॥ २ ॥

राग॥ ॥ मानकरे नंदलाल गुमानी राधे ॥ ध्रु॥ दुक फुलत अतु धन धन लक्ष्मी ॥
गोद बिलावे अफने लाज गुमानी राधा ॥ १ ॥

राग॥ ॥ वीनती कुमरि की चरि मेरे माने माने मान ॥ वीन चुक मोती मान की मते
थान थान थान ॥ १ ॥ काहे के बैठे प्यारि भये जान जान जान ॥ दुनो मेरे जीवन धन
प्राण प्राण प्राण ॥ २ ॥ मेरे हृदय को पिर प्यारि ज्ञान ज्ञान ज्ञान जनी जान रसि
कली जे दी जे दान दान दान ॥ ३ ॥ ~

राग॥ ॥ नैन स्यामा कमल की सैन बहूत तेरि गोपीनी वैना ॥ मकुट तेरि मोती का
लना कल्ल तेरि पीती म्वर का चरना ॥ कन मे कुंड लना गल मे शोली क मोली कती
लना ॥ १ ॥ हात मुख मुदली वी जेया ॥ जाहा श्री राधे नै सुना ॥ मोहर तेरि स्याम का हर
ना वचुं तेरि सर क मीलना ॥ २ ॥ पाउ तेरि छम क छम क चलना गोपीनी सब हा हा फ
रे ॥ काहा चरणा की ये हृग न गाये सुंदर सै मलित मुख बोलना ॥ ३ ॥ ~ ॥ ~ ॥

राग॥ ॥ रिपी क्षीपी आवन नद के धारे चलो राधा जी मेरि दरवार ॥ ध्रु॥ कपी क
हैया मेरि को बोलिये ॥ देखो सब जन पेडा बीलाई ॥ १ ॥ गल मेरे पेदा जुहारा ॥ मे कैले
जाउत मेरि दरवार ॥ २ ॥ वहुतर माई गो कल मे जाई ॥ कल की भये तुम मथुरा की एनी
॥ ३ ॥ चंड सखी सवर सभये मोहन ॥ नर मे तुहाये गंगा जल सै ॥ ४ ॥ ~ ॥ ~ ॥

राग॥ ॥ मोहन रूप बनायो दरिबाना ॥ ध्रु॥ हात सो हछल अंगुटिया और सो ह
अंगु नाना ॥ मोही चरणा की आये गुजरि गुजरि चरणा ह मुजाई वरसाना ॥ १ ॥ भरि
भरि पैजा चुरिया सो ह आषि गा जल मुनि ॥ पान पान मुख लाल भयो ले दर पन
काहा मन मुसु काहा ॥ २ ॥ हाति घोडा पीन लकी चले जाउ भस्ताना ॥ वीडावन
की आये गुजरिया गुजार देवी काहा मन मुसु काहा ॥ ३ ॥ जव वरि सानी विनिग

येन खगली या को देवाना ॥ सुरदास आसा चरण की नारि चले कोहि हग रमर
दाना ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ अलवै शिरो धायेत नीसानु से कहिये ॥ १ ॥ आवत जावत हम मो
थकला ॥ फलवा मेल लीया वीछाई ॥ २ ॥ श्रीवांटावन मे कंज कली लमे ॥ नाहक
राग मनाई ॥ ३ ॥ चइ सखी भजो बाल कल छवी ॥ आरे हारे के चरण वतु ताई ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ मन मोहनौ मन मोही नाम मन मोहो कहो ॥ मुष चंद्र चष चकोर सदा जो
हो कहो ॥ १ ॥ घन स्याम रसिक नागरि तुही हुदामीनी ॥ जति मान अधर पान
करो जात जा मिनी ॥ २ ॥ अपराध नही पीये भेक छु भुलनु गई ॥ प्रतिविंदे देवी
आफनी सखी पीये को गई ॥ ३ ॥ समुझाई कही भगवती अवलागी कान सो ॥ सु
षदा नीउठी आनुर भेदि सुजान से ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ हमे मतिरो केन बल बुज गोरि ॥ मोहन मे ये हस्ता चन आवे जुठी
हमान की सोरि ॥ १ ॥ वीच हीने को बात वना बोरे ॥ सकरि मोहै भरोरि ॥ २ ॥
नारयण वीधी को कहा सु जीतो सीची धर कोरी ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ राधाजी स्याम बोलावटु हैं मै तो आई बोलाउन चलो जी सो के रे जी
॥ १ ॥ प्रात के आई नसाज भई ॥ कछु नहि दया मन आवत तेरो जी ॥ २ ॥ प्रिया
जी गया ॥ जो तुम आई है मोका चलाउन ॥ कहो कछु कांडु काहा खवी का
नाबी ॥ ३ ॥ वअफने धर गाजतु है ॥ मै तो वेरी रई अफने गृह माजी ॥ ४ ॥
येहुं जीया यह वाट मी ॥ अतरी तु के दल लेगा वनि हारी जी ॥ ५ ॥ इतिक
हे सुन ये मन मोहन ॥ जैसी कहो जो सिचाया ल्यावजी ॥ ६ ॥ जल के ठ

लकपाहाके पानी ॥ बालकेरेतमै नाडचलावजी ॥ ७७ ॥ कागजके उदीयावन
 मोहन ॥ पानीमे आगलगाडनमे हारिजी ॥ ७८ ॥ जेमै हरिदेई लीनहीलाण
 त ॥ ताको मृडंगवजावनलेइ ॥ ७९ ॥ जोतुमहेवपुरी उतीयाजीन ॥ पानीमे
 आगलगाड नीहारिजी ॥ ८० ॥ जसरहुं वृजके बसलेसषी ॥ भुलीगई नंदला
 लेके वारिजी ॥ ८१ ॥ कचकलीयेयेक तोडीलिगई ॥ एक फूलके फारनलाव
 नगालीजी ॥ ८२ ॥ आतीलजी जो वृजके बसले ॥ येक फूलके फारनलावनगा
 लीजी ॥ ८३ ॥ येडुनिया यहवा नही है ॥ अरीतके प्रीती लगावनी हारिजी
 ॥ ८४ ॥ वृजराजके साथ अनेकसषी ॥ येकतुमे असे नरि भईन भईहेजी
 ॥ ८५ ॥ फूलवारीन भैवड फूलफुले ॥ एकपावरी वासलेई तलेहेजी ॥ ८६ ॥
 अतर अकेफ फुले लमाहा ॥ एकतेलके बुददे हन देई हैजी ॥ ८७ ॥ जाहाहा
 डबने गजमोतीनके ॥ येक कंचनगाथी देई न देई हैजी ॥ ८८ ॥ जाहातारछ
 यधनवादलेमे ॥ चानछप्प अमाउसरानीजी ॥ ८९ ॥ पानीके बुद पनाले छपीची
 या ॥ पाभ छप्प हरिके गुणगायेजी ॥ ९० ॥

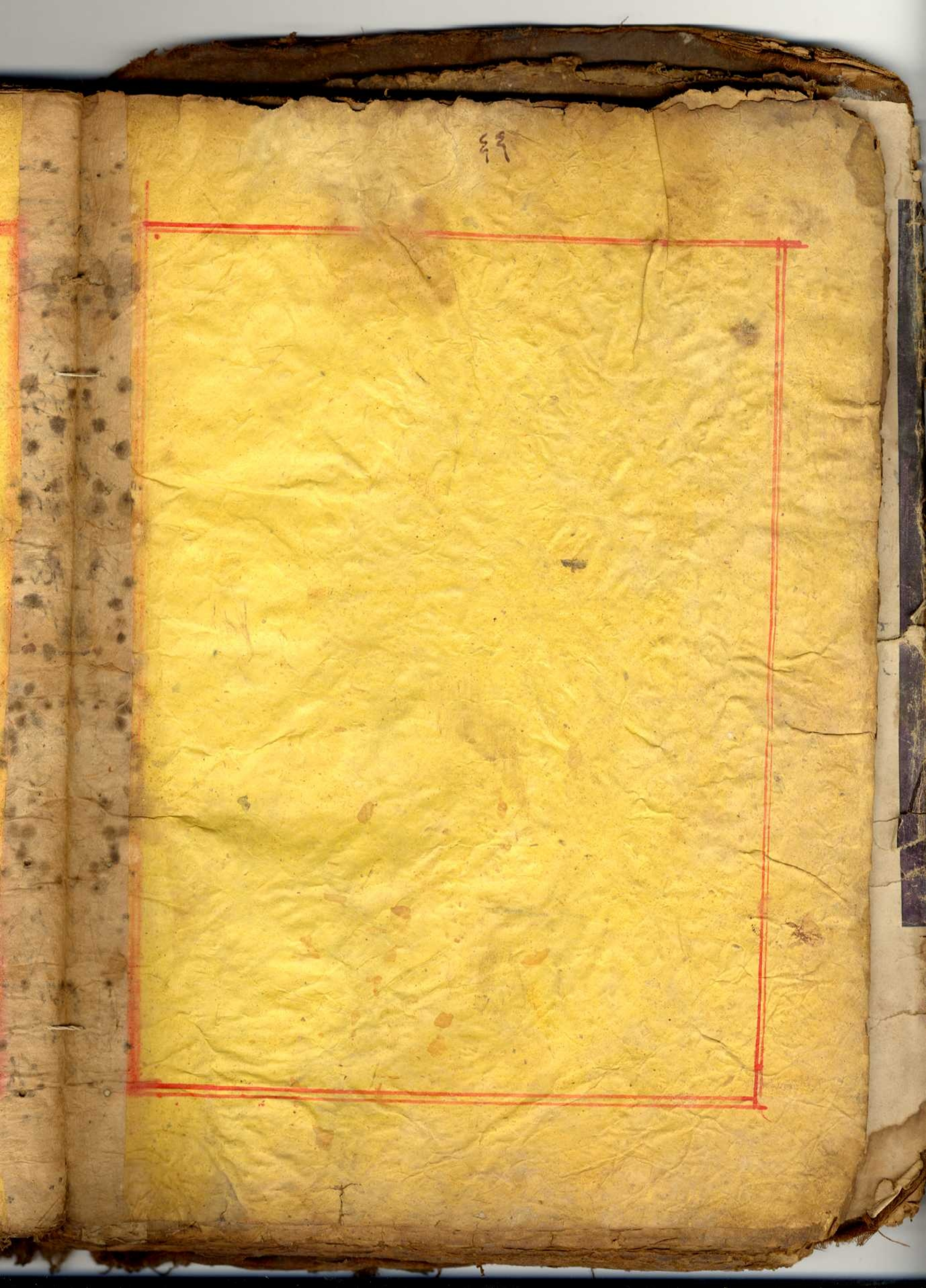
राग ॥ ॥ अलवेलीराधा प्यारि आहि ॥ ६६ ॥ सारिवनि अतलसके लडुंगा ॥
 मोतीचात भागभराई ॥ १ ॥ जोनेवीन आफु हरी आये ॥ बाध अनेक लगाई ॥
 ॥ २ ॥ श्रीवीडा वतमे कंजगलीलमे ॥ मोहनसवेन चाई ॥ ३ ॥ चरुसषी हीत बालक
 हन भजो ॥ हरिके चरन चीतलाई ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ कीयो तोरे रूपल मनाई होराधा ॥ ६६ ॥ कीय दुख दीन तोरे मासुन
 दीया ॥ श्रीये जोरे मनवड राई होराधा प्यारि ॥ १ ॥ पात पात वीडावन डडे ॥ म
 थुरागरचली आई होराधा ॥ २ ॥ चरुसषी हीत बालक हन छवी हरिके चरण
 नगाई होराधा प्यारि ॥ ३ ॥ ॥

७॥ ॥ ॥ ओ० ज्ञान मेरे जने मेरे एकदा श्री नजानी शा. छ. ॥

7

٤٩









बसिंदीला

राग वंसीयावाजेकोहेना हेरि कुंजवीहारि ॥ ध्रं ॥ हरिहरवासकी
वसुरिकमाया ॥ बसियासवनसुनायोरि ॥ १ ॥ आधीरातकीमचलीपह
र्ता ॥ दजीयालगकेकोहेना ॥ २ ॥ २ ॥

राग स्यामसुंदरवसीवालारेतोडेज्यानकीमनहरलीना ॥ ध्रं ॥ तनवीले
नामनवीलेता ॥ क्याजानेअवक्याकीरे ॥ १ ॥

राग ॥ वीषवरिवासुरिफेरिबजाई ॥ ध्रं ॥ हरियेहरवासकीवनिहेव
सुरिया ॥ दीलमेरिहरिलीउमनमरिहरिलीतु ॥ १ ॥

राग ओरपारेवंसिवजायेस्यामारोजायेजमुनाकेनारे सवसाधियान
संगता ॥ ध्रं ॥ इतछलउतछलजलभरनेकुं ॥ थाडीरिथाडीरेकाहाधारिरे ॥
१ ॥

राग चलोसधीनंदकीद्वारेजाहाश्रीकृष्णजीधारे ॥ ध्रं ॥ केहुनमेरेवासु
रीवाला ॥ वामेहरिमोरमकुटवाला ॥ १ ॥ केहुनमेरिवंकासुरमारा ॥ की
तारिसैसहेन्यारा ॥ २ ॥ नंदकीलालकीरलाने ॥ जसोडागौरधेलवाजे ॥
॥ ३ ॥ केहेसुरदासहरिगयेमनमे ॥ येकरामहेताडेवरतनमे ॥ ४ ॥ ४ ॥

राग काहावंसिवालानेसुमेरामनलेन ॥ ध्रं ॥ मैतुंफीरतहेवृजमंड
लसैकेहनमानतनंदलालसो ॥ सुधरतधरपीयावेनुवजायेलेतजानमो
रेवरवसकीनुसो ॥ १ ॥ ओरेवासकीवंसिवजतीसवलोगनकीमनहरलेती
॥ येकपेजनीयाछपूछपूवजतीओरेचीतवनउस्केमारे ॥ २ ॥

राग जंगला मधरसैमुरलीकायेस्यामसुंदरवजनारिदृदावन ॥
ध्रं ॥ सोहसहस्रगोपीनीमंगलगाये ॥ सधीसवरामचोददावन

॥ १ ॥ श्रीरुद्रजीनेवसिबजाये ॥ भुजमुजसवेंरुलेहदावन ॥ सोनकआकी
सवरीबीमोहे ॥ मुर्कीसव कोआसावन्दावन ॥ ३ ॥

राग वजीजवस्यामवसोबरे धनुकानमेथारे ॥ धं ॥ परिये हालधुनीसुनी
कोजीमीपर प्रेममतवाले ॥ कहेमुषसेकछुनीकटेकछुमोहवालवनमाली
॥ १ ॥ सवसवीयाकहेटाईमुहसेतुहे कापीरहेतवकी ॥ वजायेकोमही
मुहरोतरेआवीयामेजलजारि ॥ २ ॥ वतावतपीर हमारितुमतपरनात
रेतारि ॥ ज्वगनजीसेलगीजाताकीवहैमेतेमीठमारि ॥ ३ ॥ दर्शनइतना
लीयाचोहेमीलादेआतवनमाला ॥ तुमारेपाउपतपतकेजानकीदासव
लीहारि ॥ ४ ॥

राग वाजेवंसीयातानरसेवती ॥ धं ॥ परीधवनेतरचीतभईउचें ॥ मुसा
चलनजातोवावासीकदीदोरेवाजे ॥ १ ॥ स्यामसुंदरकीपासनजाईकहु
केसेमेपाईगी ॥ अबपायेलपायेलपापतनेरेनीधुरस्यामदारुनदुषदी
नुवाज्ये ॥ २ ॥

राग आर्सा मलीयानैतोछलकीनूरे ॥ धं ॥ सामरीसुरतीमोमनलो
भां ॥ चलोचलोकेठजोभनजोभनरसलीनूरे ॥ १ ॥ अधिकवासुरीवाजवला
गेसप्तसुरतीनग्रामरे ॥ वजकीसर्वासवगायतगायेलअवरहीयोमगन
आर्सा मलीयां ॥ २ ॥

राग वीरहकीआगलगीनतमेजलकूडिपेरजमुनाजलमाही ॥ धं ॥
जलसुकीगयेस्पवारजलेमधरीजराकारभयेछोनमाही ॥ बाकररपनपदा
लेवीलसी सनागमरेधरतीधरमाही ॥ १ ॥ कवीगंगाकहेयहदाहमेटीज
वआयेगोपालमीलेछीनमाही ॥ सावलीसुरतीदीक्षीपेरजवसेजीवचलचल

होईरहै॥२॥ भोजभावयेकोनहीभावेनयेननसैजलजातोबहाइ॥ लोकक
हेसधीलाजकरोजाकोलागीगयेताकोलाजकहोहै॥३॥ मोहनकेमुषवाजीग
ईमुरलीधरमोहनमोहीरेईहै॥ धाईलनेधुमेगठहमैसुधीसुंदरीनारीजेमुली
ईहै॥४॥ अबकेसेधीरधरोसजनीसंगरीदजमेवीपरीतभईहै॥ येहिवासके
वसिमेनासकरायहीवासकेवसीमैगाजभरीहै॥५॥

राग वींदावनवासुरी अैसेवजी॥ धं॥ तानकेसेभनकपरीश्रवनकी॥ नागी
नीईकीधसी॥६॥

राग काहिमोसोवैराकरी मुरलीया॥ धं॥ जातजातीतो सबकोहीजाने
॥ नमनफीलकडी॥७॥ जवतेमोहनअधरवयोहैतवतेवानपरी॥ चन्द्रस
धीक्षितवालकृष्णछवीसंगनीसोसुंदरी॥८॥

राग गोवंसीदाकीछेकालारे जमुनाजलकुंजावे धं कालापानीता
पीछगीमैकालाहोईजाठगी॥ सुधुरसुधरवेछाभैलेदेसतहरीलोप्रात॥९॥

राग हमारवसिकजईमनलेगईरे॥ धं॥ हमारीवारीआईवीजाईवीवाई
देगहाप्रात॥ वैठकदेईसीतलपाती यहुदेहुदात॥१०॥ तुतोतारेनालेहमतो
बालेवाल॥ तुमारीहमारीभेटभैलेवहीकदमकीछेया॥११॥

राग हमारोनद नदातुस्यामवंसीमगनलागीलो॥ धं॥ जदासंगसोपे
जावेतारासंगसोवेजावे॥ आमीरोचलतो नपरीथाकुरे॥१२॥

राग मैहरकीमुरलीवनपाई॥ धं॥ उठतजसोदामाईबोलतकी बडीया
॥ मैमुरलीधरदेनेकीआई॥१३॥ वसीमैकछुओरनहीहै॥ देहुनदेहुनदखभा
नकेहुलारी॥१४॥

राग कुजवनवेनुवजाई चलो चलो हो देवत रास ॥ १ ॥ जमुना फलीन
सुभवंसी रासरचेवनवारि ॥ रतनजडीत जगमग छवी राजेन सरदर ईनई जी
यारी ॥ १ ॥ ललीता चंपक ललीता दी सखि चडावती प्यारी ॥ लैलेताम
बोलावत सकको वंसी तेह मुरारी ॥ २ ॥ वंसीनेह सुनेह जवनीता तनको सु
रतवी मारी ॥ लाजकाज कुल ज्यगी चली सव कृष्ण प्रेम मतवाली ॥ ३ ॥ जरि
बादलो के मारी अंचल कोर कीनारी ॥ कती दार मोती तदावन के सजील है
गागन नारी ॥ ४ ॥ वेनीमाल जडाई वेनी अंजल रैखत मारी ॥ करन फूलन
षवे मारी ॥ कगता चंपक लीके छवी प्यारी ॥ ५ ॥ छत्रघंट का अनवतवी
छुवा पायन के दुन कारी ॥ रुध रुध वैठी वनठने के उठत सक रुर कारी
॥ ६ ॥ देघी चांदनी बछवी वनको छ कीत भये वजतारि ॥ सुनम करंद भुमीमार
फूलन के रही फुकी फुकी डभदारि ॥ ७ ॥ वंसी अधर अलख मुखारी के चीत व
न हसनती यारि ॥ अधर सुधा देदीमी चहु मोहन अवभये सरगता डारि ॥ ८
हमतो वंसी सुधावनर चीत वात कहु प्यारि ॥ वीत सोमा वीत देवी चके तुम
जाई घर सुकमारि ॥ ९ ॥ तुम कुलबंधु करे पती सवा धर्म कीरत विचारि ॥
नीसी वसी ये घर पतिसंग वनमे अपजस यात कुमारि ॥ १० ॥ हमत थक रि
तुम हे पती पाये येह सव रुज के नारि ॥ चीर चोराई हमै वर दीनो अवभयेनी
धुर मुरारि ॥ ११ ॥ बोलेहंस को कील सारद मृग मजुर सुकमारि ॥ चंड कीरन
रंजीत वन जगमग जाहो नीती मदनवी हारी ॥ १२ ॥

राग हमसो प्रीत लगी तो मल गई सब कोई प्यारि हमारि ॥ दुरको प्रीत मो
हनी कली गई न बहे जाई घर सबे ली ॥ १ ॥ दुरको प्रीत करन राई जानी गो
पस वावरनारि ॥ चरण अजुधन से मही प्रोजन नै चनत पकवारि ॥ १४ ॥
बोले वीह सीर सी कमन मोहन न मेग ले विहारि ॥ सोन मह अस्या महु ब
उपर प्राण देई सारि ॥ १५ ॥

राग भजो राधा कृष्ण मोहन वंसी वजाई ॥ ६ ॥ सहर मथ राव डन म
नो हरज मुना सीतल पानी ॥ वडन सुंदर पुरुषो नागर बोला अमृत पा
नी ॥ १ ॥ कान मे कुंडल कल के भुषन कहे या लाल वनाई ॥ तील क चंदन
कमल लोचन मोर मकट वनवारि ॥ २ ॥ बाहू वर स की जो भन मेरी कुलुम
रंग की सारि ॥ बही गीर धारि डुबे ले मे कुलुं की वारि ॥ ३ ॥ गोकुल वा
ल गौ प्रतीपाल घकुंज कुंज वन घेरि ॥ भक्तन के प्रती नंद महल की प्राण स
मान हमारि ॥ ४ ॥

राग कहे यानंद की लाला बजा देवा सुशिव नमः महल मे चाडनी चीत की
गले वीचना गीती लटकी ॥ कवा देवा स की वंसी ॥ फुका दे सुन की तवंसी ॥
मुरदास प्रभु न मारि हर स को बजा देवा सुरि प्यारे ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

राग बीडावन वं सिया बाजे रि अवतो मेरि मन हरली नु ॥ ६ ॥ जमुना
के नीकटे कदम के छेया ॥ उपर वीर चोरा योरि ॥ १ ॥ लाज छोड के अर्ज करतु है
हासी मुष दीये नत सारि ॥ २ ॥ बीडावन मे रासर चोई ॥ सब सखिया ना मिली
वा योरि ॥ ३ ॥ हरि ने अंतर ध्यान मे के ॥ सब सखी मली वील वा योरि ॥ ४ ॥ मे वी
दार हानी के कोने भरोया ॥ तुमारि सरन मे आई हो ॥ ५ ॥

राग सामलीयानेकोनेमंत्रयदककवजायेवासुरिया॥ ६॥ मैजसु
नाजलभरनाजातुरेहि॥ रोकेसिरकेगागरिया॥ ७॥ रायघातमेधुरननीक
से॥ वीडावनवाजेवासुरिया॥ ८॥ जबसेनेरिसुनीमुरलीकी॥ भोकलगाये
वासुरिया॥ ९॥ सुसुकसुसुकजियामानतनाहि॥ मोकोलागीकासरिया॥ १०॥
माहसधिमिलीधुरतनीकसे॥ कृष्णवजाईवासुरिया॥ ११॥ वडावनकीक
जगलीतमे॥ धुरतनीकसेसामलीया॥ १२॥ सुरदासप्रभूरगहेजुम॥
बंदेजुमनेकामनीया॥ १३॥

राग बाजीस्यामवालीतोरेंवसी॥ १४॥ काहेकावंसिकाहेकीजंजीर
॥ कोनेवजावधरेजमुनातीरे॥ सुनकीवंसिरुपकीजंजीर॥ कृष्णवजावज
मुनाथारेजमुनातीरे॥ १५॥ सुरदासप्रभूआसाचरणाकोहरिकेचरनमे
ल्यायगोमुरिधन॥ १६॥

राग वंसिवतसिजलकेदमधुरिछैयासुनसवीस्याममेशहेमेरेगैजाहो
॥ १७॥ मैतोजातोयालीयाफनेगरदकोहो॥ १८॥ धीपरवालबहेमेरिगैजा
॥ मेयेकलीकलीसंगनहेठुठाडीकदममेरेहेमेरिगैयाहो॥ १९॥ चंच
लछयेलबयेलपरमीलीगयोजीहामुजानेकछुअवरअवरवलेया॥
हासीहासीबोलनधुगनबोलोचीतवनमेकछुवातरेकहैयाहो॥ २०॥
श्रीगिरीधारीरसकोवीहाजीछलबललेगहेकुंजनमेयों॥ करोवतीया
छतीयासबछोरिमेसकोचालीयालीदोसनगैयाहो॥ २१॥ सुदीनब
रिषवरनाहितनकोजीवांखांकुरोतेरिपैआ॥ दासबसेतसराविडा
वनमीरनमावेमेरिहृलकोछैयाहो॥ २२॥

राग मनमेरो लेगयो बंसिवन ठट्ठ जमुना को तीर के ॥ धं ॥ पातपाल
 वृन्दावन ठुडे के जकली सब हेरि ॥ स्याम के कारन जोगी दुग्न कान में मुन्दा
 गले मेरा वंसी ॥ १ ॥ वृन्दावन में गौ वाच दूया गोकुल के उनयारि ॥ वस
 गोपीनी में काहु कहाये मोहन मुरली वाला ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ तुम संग मुरली स्याम वंजेया ॥ धं ॥ हमारे नंदरिया भय हो स्या
 मनो ॥ हम मोवा दारा ही है ॥ १ ॥ हम दधी वेचन जात वृन्दावन ॥ हम सीरम
 दुकी धरि होतु ॥ २ ॥ हम हेतु ममान कीया है ॥ मायो मे पारि के मैं न होतुम ॥ ३ ॥
 सुरदास प्रभू तुमारि दारस को ॥ आनंद से सुख पाई तु ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ मोहन मुरली वंजाई श्री कृष्ण वीहारी ॥ धं ॥ बाल बाल संग मनो हर
 चक्र सुदन धारि ॥ जसोमती नंदन गोपि गतरंजन चंचल नैताती हारि ॥ १ ॥
 ताल ब्याल राग मृदंग बजावत वंसि मधुर धुनी है मारि ॥ गोकुल बाल बकरी
 जसोदा यक दारसन मागे ती हारि श्री कृष्ण ॥ २ ॥

राग राधे वंसि वाले होतुम मुरली वंसी वाले हो ॥ सब दिल मेर ही वासुरि हो
 तुम ॥ धं ॥ जवन तोरि नाम कस मेरु ॥ सीस मरुदे ने बाला आ के होतुम ॥ १ ॥
 भुक्ति मुक्ति को दाता हेतुम ॥ सो देने वाला ओ फे हो ॥ २ ॥ तुलसीदास को ये
 हि आसा ॥ पाव करों पद दास के हेतुम राधा ॥ ३ ॥

राग भजन

वीन्दावन विच कृष्ण मोही यामन मधु वंसि वंजेयारे ॥ धं ॥ सख मुनी
 जब वीकल भई है सब सखी धुदन लागारे ॥ दोही चले वृज नारी स
 यानी धेरी बडु धाक है यारे ॥ १ ॥ स्याम सुंदर मुरली वंजाये गो

रिखानाचन चैयारे ॥ ग्वालीनी भवकुंठ प्रीकीयो हें मन मोहन चतुरे
यारे ॥ २ ॥ नारामें डलचंद वीराजे वसामी दुसुर आनेरे ॥ धंदे भाग
यह गोपीनीया के गुजत से ज्यादारे ॥ ३ ॥

राग स्याम सुंदर जीरे मुरली की धुनी सुनाये ॥ धं ॥ लाल बाल आ
घर की नारी ॥ सब की अलारुत मारे ॥ १ ॥ भवत न जानी तुही प्रभू राजी ॥
अन हडवाज वाजी ॥ २ ॥ आदी अनादी नीर्मल नाही ॥ सब सुर उषजन
वादी ॥ ३ ॥ जाके लीला भारी ॥ मुनी गंगाधारि ॥ अवमह दे प्रकारि
॥ ४ ॥

राग जीयारा हमारी बरिजाना कादी आई स्याम वंसीवाला ॥ धं ॥
वीडावन में गोवाव झाई वही काली कमरिया ॥ वही नंद की लाल क
हाई वही मुरलीवाला जीयारा ॥ १ ॥ सहर सहर सहर बनारस औ
रिलीये गुजराम ॥ सगरिन गरिह मधुरे फारे आई मेली मली रहे गये
हात जीयार ॥ २ ॥ काली दह मे कुंज पर तुहे काली नागन चीये ॥ कामीनी
यासे अज करतु है सिरसे दारे बादनी जीयारा ॥ ३ ॥

राग जनमे क्वाकरो सजनी वजीर वंसी छ सेवन मे ॥ धं ॥ परिसा
दिल देवाना का ॥ मुहे दरकान ही जंजीर ॥ १ ॥ दीलो के के दरकने को
॥ जुलुष वंदार का फीहें ॥ २ ॥ काहा लये लोद ही मजनु ॥ मुहे ले
बल उ सेवने ॥ ३ ॥

राग स्यामलासजनलागेदोलआफनालगालीया॥ध्रं॥लेकरकम
लकीहातमेंअफनेतर्फकोदे॥नजईकीराहोसैदीलमेंसभागया॥१॥
मेनेउछाताउनमेमकान काहाहेडर॥हाकदनीपुनदुरसैगोकुलव
तागया॥२॥वंसीमधुरव जाकेमनमेरोभागगया॥सोतेथेवेपरमे
आफनेमहलकेबीच॥३॥आफनेकारनमेवनवनदुरलीयेना
हाजपरेनमुखपरेदीनदीनगलेसरीरस्याम॥४॥४॥४॥४॥

राग सधिवसिवजिनंदनकी॥श्रीचन्द्रावनमेकंजगलीनमेसुधी
आईसावरधनकी॥मगनभईगोपीहरीकेरसवीसरीगईसुधीतन
मनकी॥१॥

रागदुमरि॥ मनमोहनरुस्रबंसिवजाईहो॥वंसिकेश्वरीपुनी
मनहरलीनुरे॥ध्रं॥ग्वालवालसवगोत्रालेकेकंजकंजवनधरे॥वे
लनचन्द्रावनकदमुकीछेयारे॥१॥

राग॥ ॥चन्द्रावनवंसियावाजीरहीरटनागररुस्रसुरारिके॥ध्रं॥
मैंपरिमैंपरिमैंकुकिमैंकुकी॥सुधभुलगयेयानीहसनको॥१॥गौ
वाचनसकेपंछिडरनसके॥गीरव्रगहनसकेजमुनावहनसके
॥२॥

रागईमन वेउवजाजेसवीमधुवनमें॥ध्रं॥दुतगोकुलउतम
थुरानगरि॥वीचजमुनानाउभागी॥१॥चन्द्रावनमेरासरचोहें
॥गोपिनीकेसंगस्यामानाचे॥२॥चन्द्रसवीहीनवालरुस्रछवी॥
हरिकेचरणमेंजाउवलीहारि॥३॥

राग सवराहावातमैधुरफीरेवडावनमेरि वासुरिया॥६॥ सुन जं
गल जंगल सुन साज मरि॥ सुन पाया कहि वासुरिया॥७॥ माठेति
लक की लाल वीराजे॥ कान मे कुंडल लटक दूया॥१॥ गो कुलधुर
दशवन धुडे॥ धुरफीरे मधुरान गरि॥३॥ सुरदास प्रभूतु मारिद
रस को॥ हरिके चरण मे पड दै जा॥४॥

राग भैरवी॥ ॥ आजु वंसिवाजे नमुना तीर कै ले कर आलीजी याध
रे नही धीरे वंसी॥ ६॥ नवदसिवाजि मोहन की सुधी नरही आली
तन मन की॥ भय वीहाल तन डंय प्रोचीर॥७॥ जल धल जीव जाहा
लगी जो हे सुनी वंसित्री भवन जग मोहे॥ वहेन सकत नमुना को तीर
॥१॥

राग॥ ॥ को वंसिवाले कालोरे नमुना जल षो जवे॥ ६॥ काला पानी
ना पीउगी मे काली होई जाउगी॥ सुघर सुघर वेदा भैले देखतो हरि
ली प्रान॥७॥

राग नीडह नारो ले गई राधा॥ ले गई ले गई ते गई राधा॥ ६॥ नाक
छु ले गई नाक छु दे गई प्रेम बाधे मे कुं ले गई राधा॥७॥ सुष मे ले ग
ई डध मे दे गई॥ कारे कपटी जी पार मारि गय राधा॥१॥ जो कोही
राजाने अरज मी लाये॥ जा को भैली वीच मे गई राधा॥३॥ सुरदा
सरस वस भय मोहन॥ भावली सुरती मिलागी गय राधा॥४॥

७३
राग ॥ ॥ अतीमे के से नीयारा बो लो हो रा धे वं सिले गर्ह ॥ ध्रं ॥
सुतल की दम की छे या वं सि दे सी झा ता हो ॥ आय गे ले सुतली दरा
वं सिले गयो ए था ॥ १ ॥ तो ही जाये पे या पे जा हो जाये भै जा हो ॥
जा हार हो भै नल कृष्ण वही कदम की छे जा ॥ २ ॥ वा स की व सु रि ए
धे ती हा ए बो ले या हो ॥ सुन की व सु रि ए धे मो ती हल कन लागे ॥ ३ ॥

राग सषीरे छल वल धंग न यो न जान ते रे कवर क झाई नी धु एई
चतु एई ॥ ध्रं ॥ कहत क दर श्री कृष्ण का त वं सि के ता न मो रे व स न
प्रा न ॥ कहत क दर न ही मान तो क झाई ॥ १ ॥

राग सषीरे वन वारी मन ली यो ली यो : वं सि व जाई अवर गाई
बील माई ॥ ध्रं ॥ महे सकहे अती धी न क झाई न मान तु क झाई
॥ छे क तु हे द गर कारे क रत मे ने ली यो हे चो एई ॥ १ ॥ चंचल
छये ल छा डो मन मोहन वं सि वा त मे रि व स न प्रा न ॥ दी ल ले तु क
जाई और गाई बील माई वन वारि ॥ २ ॥

राग स्यां मा के वं सि ना दे उगी मे ॥ ध्रं ॥ स्याम की वं सी पा या व
तु मे र सी छा पाई आफ ने त न मे ॥ क व री सौ ती क हो गे ज न मे
ले क व रि से क्का करोगी ॥ १ ॥ क व ड न दर स दी यो है मो को
ई न छ म काई उ न छ म काई ॥ मे से ना च न चा या मो को ते से ना च न
चा छा रेगी ॥ २ ॥ हरो स वी ज नी मे स म हाई अ फ न ज ले पर क्का

कहूँगी॥ नही तो मैं वीष खाई मरूँगी॥ ३॥ कुवरी का संग सो बन ला
गी॥ हम को क्यों कर सो बन लागी॥ चेहरे सही हीत वाल हूँ हनूँ वी
चरी के चरण चीत लागी रहूँगी॥ ४॥

राग बलीती तुम हैं वडेवाती मेरि वंसि नैनै चो एउ न न जरो से देवो॥
॥ १ ॥ वीजुली तरफे रेनु अब धेरिया के से एज परे॥ १॥ वडावन मे
ऊजगलील मे के से या एत परे॥ २॥ वडे वडे नैन वीसारी वीसारे॥
मोय कमान चढी सावेरि॥ सुरदास प्रभु मारे दर सको नाहाक
पान परे॥ ३॥

राग॥ ॥ वंसिया मेरा दीजीये प्यारि राधा॥ १ ॥ कीयो राधा रा
स मे चारि॥ रही संग ललीता हे प्यारि॥ १॥ वंसिया एरो जानना को
ही॥ तुमारे चीत मे सो है॥ २॥ सरव गुण रूप की वंसि॥ देदारे रा
धा मनु करे हासि॥ ३॥ वंसिया लेके ठार भई आगे॥ कहै या
रावे पाउ परि लाग॥ ४॥ कहै सुरदास यही चारि॥ जीते तुम
हम गया हाई॥ ५॥

राग॥ ॥ देदारे वंसि मेरि राधा॥ १ ॥ क्या लेव जाठ राधा क्या ले
मगाई॥ प्रेम से त्याग गोवा धेरि राधा॥ १॥ सुख से वजाठ राधा क
र से वजाठ॥ ज्ञान से त्याग गोवा धेरि॥ राधा॥ २॥ जो वंसि सुरन
र मुनि सो है॥ को वंसि ले गई राधा॥ ४॥

राग॥ ॥ हमारि वासुरि नही पाई रे ग्वालीनी हमारि॥ धर्म॥ आफ्र
त जाई वृंशवन वैथे॥ धुरत बोजन जाई रे ग्वालीनी॥ १॥ हमारि अर
जी सुनीये रे ग्वालीनी॥ कवतुम को दुष दीउगी रे ग्वालीनी॥ २॥ आ
फ्रत जाई कुवरि संग खेले॥ तव मै मुरली नही पाई रे ग्वालीनी॥ ३॥
ग्यातिनी के कारण प्रा नही लागे॥ तुम नीति हम हारि रे ग्वालीनी॥ ४॥

राग॥ ॥ देरा बोझ नारि वासुरि दीजीये वृंशना॥ धर्म॥ काल सवी
उही ठाड सिंहासन भुल विमारि रे जुगई हम धाई सुनि नही वात तु
मारि॥ वंसि नहि तैरे काम की लावें सि हम कुंदे हम आतुर होई मा
गति तुम ना हाक ना ही कहो हो वासुरि दीजीये॥ १॥ कै से वंसि हीये
लाल या पुना देखै पीता तुमारे सात कान के वडे वीकी तुम ओ सिल
गर वडन हैं लाला हम कुं मागे छज॥ यह चतुराई छोड के तुम नाय
चलाय गाय वासुरि॥ २॥ वंसि हम को दे हो ग्वालीनी ना हाक राग
मचाई मन मे सम ही वीचार करे को लोक हम आई लोक कह से चारि
चाकरे लाला मन मे सम ही वीचार॥ जा वंसि मेरे लत कमट की को
ना दे तो गमार वासुरि॥ ३॥ हम से कहै गमार अफने करन वज
ई मारो गुल चाचा रीद की वावा से जाई लेल कुटि मुख पै धरौ लाला
वंसि जा को नाड॥ जा धर को तुम बाल का मै को हेन ड जरे गाड वासु
रि॥ ४॥ वंसो की ड जर ड वें नही पावा पतु मारि तुम ओ सिल वचार
नंद धर को वन हारि॥ लख छाड रे अवल वदे लालाल आवे लग
ई लख गोपी दर्शन करे सी हर मन पछुताई वासुरि॥ ५॥

राग ॥ ॥ वंसियादे राधा मोरि हो ॥ ध्रु ॥ काले गाउ राधा काले
बजाउ ॥ प्रेम सै ल्याय गौ बाधेरि ॥ १ ॥ सुख सै गाउ छल कर सै
बजाउ ॥ ज्ञान सै ल्याय गौ बाधेरि हो ॥ २ ॥ चहु सखी हीन बाल छ
ल भजो ॥ राधा वैठल मुख मोरि हो ॥ ३ ॥

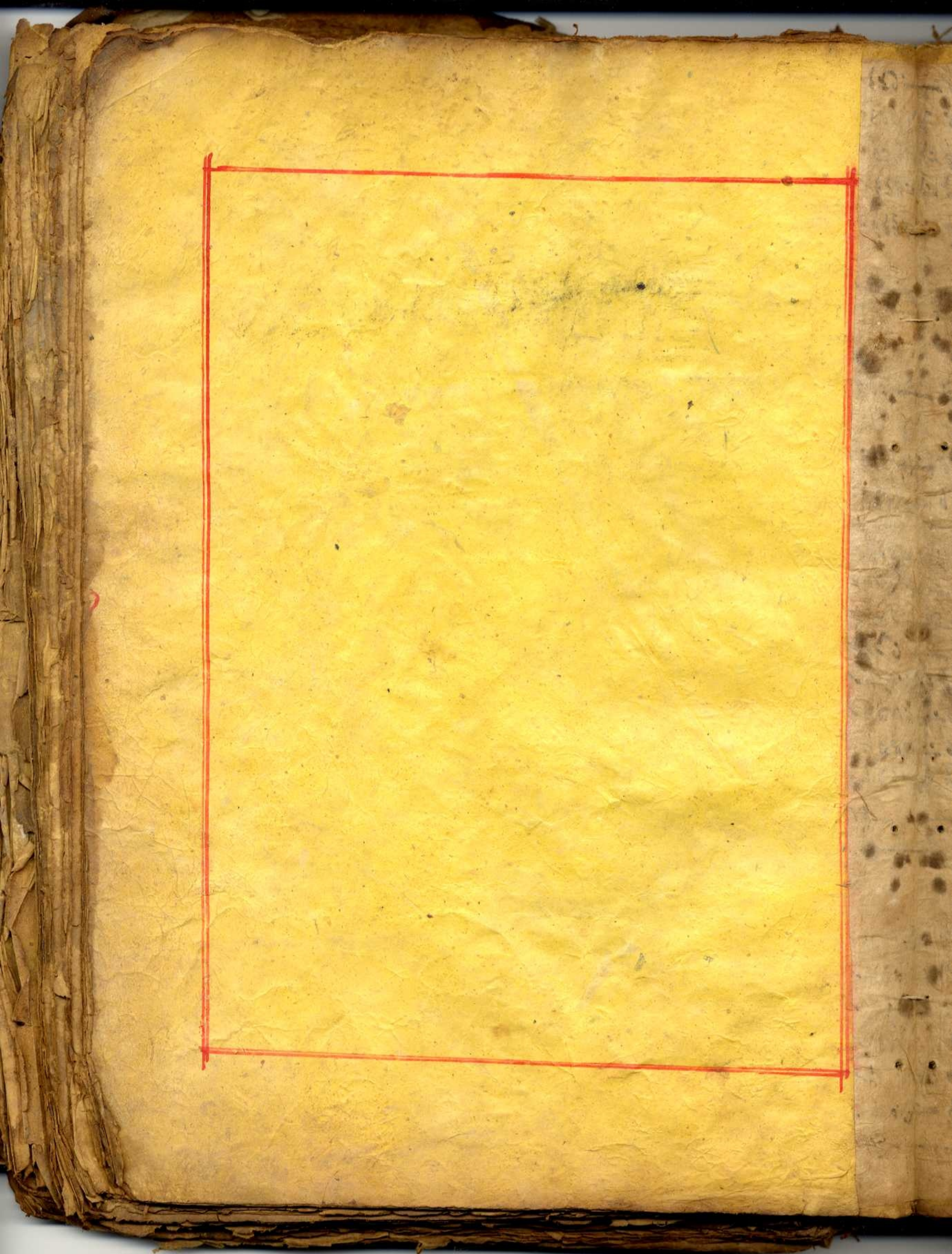
राग ॥ ॥ जे दो जे वंसि हमारि लीता प्यारि ॥ ध्रु ॥ वज्र मंदल मै
राम की चो है आइ चतुर वजनारि ॥ इत डते ना ही पीली है वंसि ले ग
ई चो राई ॥ १ ॥ चतुर गजारे वज्र की नारि वंसि हमारि दीजे ॥ सो वंसि
मे फू क बजाई दे दे वसमान को छोकी ॥ २ ॥ चहु सखी हीन बाल छ
ल छवी हरि के चरण चीत लाई ॥ सो वंसि मे फू क बजाई मोह परे
वजनारि ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ कीही देखो यारो वंसि चोरा वत प्यारि ॥ ध्रु ॥ जमुना की
नारे कदम की छिया ता हाव से बन वारि ॥ राधा पुछे स्याम सै तुम वं
सि का हावी सारि ॥ १ ॥ लाल छडी वै जंजी के माता कुमुद गदे ला
रि ॥ नथीया ड परे सारे सौ मे है वस भाने के डारि ॥ २ ॥ चहु सखी
हीन बाल छ ल भजो हरि के चरण बली सारि ॥ वीहावन मे ए सर चो
है नाचे राधा प्यारि ॥ ३ ॥

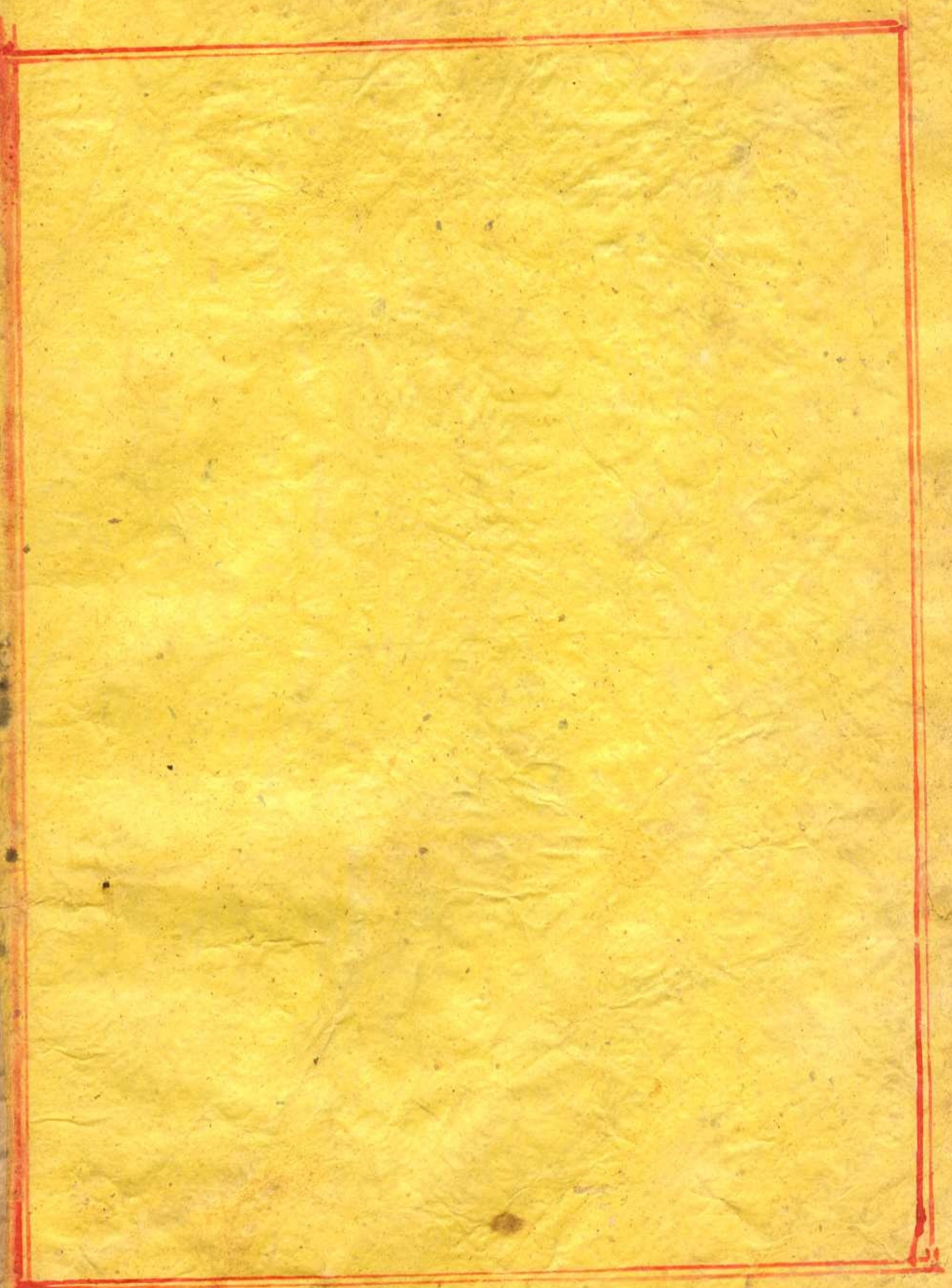
राग ॥ ॥ सखी रिदे देवा सुरि ॥ सुन गजारे वजनारि हमारि वंसि देया
री ॥ ध्रु ॥ हरि बाल की बनी हे मुरलीया सप्त सुतीन ग्राम ॥ सो वंसि
मे फू क बजाये मोह परे वजनारि ॥ १ ॥

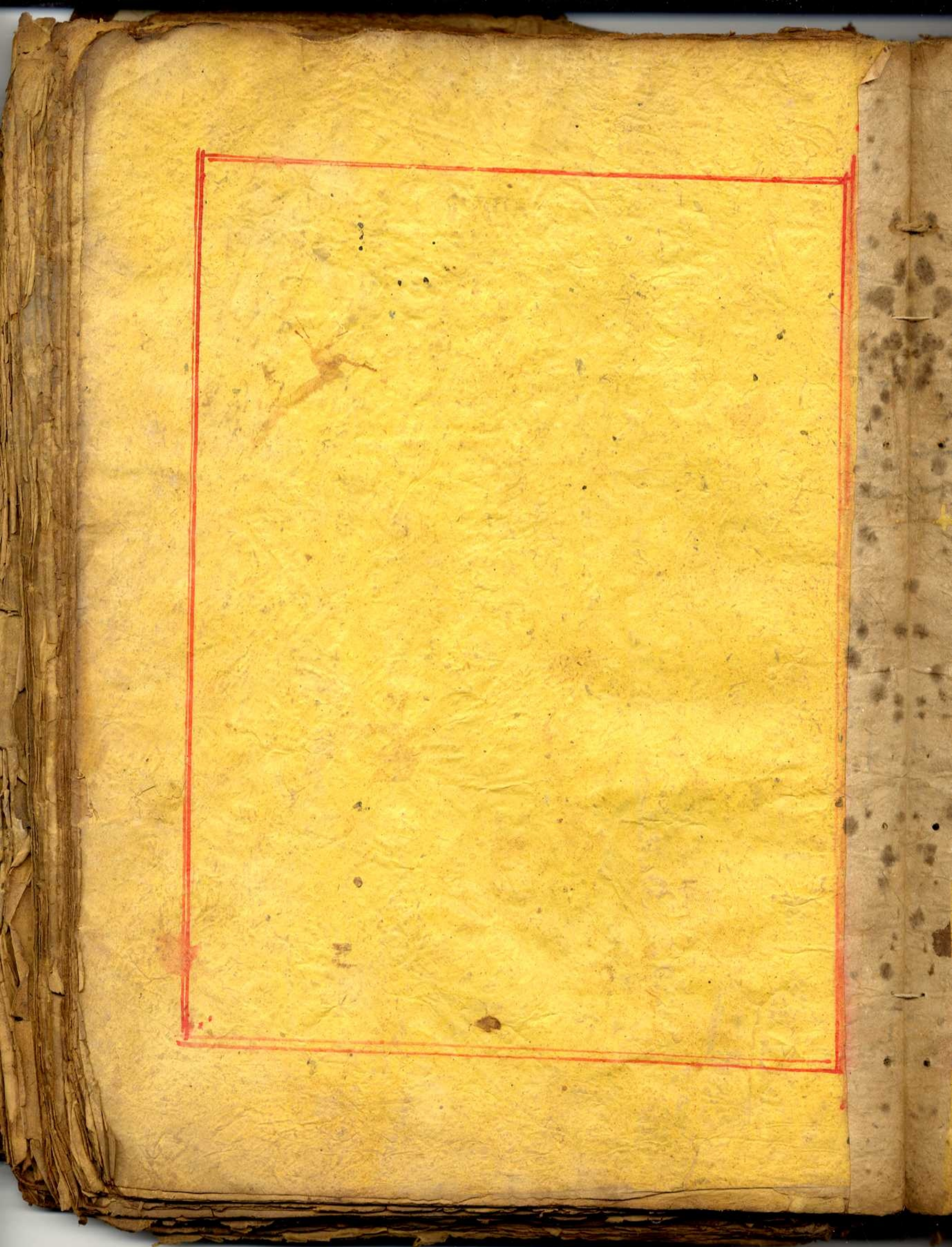
राग ॥ वीनतीकरुंतीहारिपारिवारे ३ ॥ आईयो ठोर वंसिदार ॥
 र्क ॥ सुमलसिहमाभागी वंसिदाय ३ ॥ नाडनहीदीनीगयो हारे ३
 ॥ २ ॥ वीनतीकरुंतिहारिपारिवार ॥ जनतारसीकेदीयाहैडुधता
 र ३ ॥ ३ ॥

राग ॥ वंसियामेरिपारिदीजेप्रानप्रानप्रान ॥ आठवरकालभु
 ल्योसुखदानदानदान ॥ र्क ॥ नहीकामकीतीहारिदेवआनआनआ
 न ॥ यानेकरुंमेतेरिगनगानगानगान ॥ १ ॥ वीनतीहमारोसुनदेव
 कानकानकान ॥ रूपारसीकेकीजेमोहीजानमानजान ॥ २ ॥ २ ॥



62





उधोलिला

राग ॥ हाकीलेगयेदुरअवरथ हाकीलेगयेदुर॥ १॥ स्फामकोच
 जयरथपरपरमवैरिअकर॥ उठनहेरोगोपालहेसवीसुजतनाही
 दुर॥ १॥ कुरुमिजपधुताईअवतामैततोहेसीउर॥ तोरतीगलेहा
 रकीकीनीतोरतीकरचुर॥ २॥ फातठधरतीपरतयाकलभयेहोच
 कनाचुर॥ सुरकेप्रभूबोलराजीनअवतोमीलनाउर॥ ३॥

राग ॥ वृन्दावनछाडेनंदलालावीछुरेज्येदुकलचन्द्रकवारभये
 वोकटीवाला॥ १॥ वरुहीअवपतीनहरकरना॥ फालभरनसषीनी
 छोनाहीनीसरीनकामरना॥ १॥ लेअवरुमहेयहनारी॥ नहीछेलानही
 नारीनहीरुमनजानतोमारी॥ २॥ कटननहीयहवीरहीनीरानी॥
 सुकेरतनगोपाललालमुषध्यानकरनछाती॥ ३॥ धाईकोही
 करधरुईरलाल॥ कोहीअंचलकोहीचंदनवलेष्टनकोहीदीग
 सेमारी॥ ४॥ चलीफीरनेहेजलतरनी॥ वीन्दावनहरिएसज्यो
 हैंएतमकीसरने॥ ५॥

राग ॥ लालावीगोकुलसुनोभईलोनाहो॥ १॥ सवसषीयाना
 येकहनएधीकाकवरोसोवसभयेलोहो॥ १॥ गोकुलवोजीवी
 डावनवोजु॥ कदडनमैतमैलेनाहो॥ २॥ बुनीचुनीकलीयासे
 जवीछाई॥ नीदननहीआईहो॥ ३॥ वीनानंदलालजीसेकलना
 परतुहो॥ वीरहपतागैलेहो॥ ४॥ ४॥

राग ॥ कुवरिभयेसौतीहमारेजलाउनछाती॥६॥सुनीउधोकीभये
ननैयनभयराती॥करिकुवरिसंगप्रीतदुसाडुयदेना॥१॥सुन
वंसिकेनानघरेपुछनानी॥पथयेनउधोहातवीएकेपाती॥२॥
लेषीनस्यामपरवातबुनहीभाती॥बहीहेमधुवनस्यामडलसिमो
रेछाती॥३॥नीधुरस्यामनेवीना॥नरफतहेदीनरहेनभवनभ
यछाती॥४॥बहीहेवीपतीसुनीवानबुहेनहीमाती॥जोगीनीहुके
धुरदेवडुयदेना॥५॥

राग ॥ छममोरेकुवरिसोवसभईलीहो॥६॥मोरमकतम
कराकृतकुंडल॥कानमेचोकीहो॥१॥पीताम्वरकीवखलगाव
त॥हातमेबाजुहो॥२॥मुषमुदलीमैवसिवजावते॥देवतरेवी
हो॥३॥जमुनाकीनारेकाधाधेनुचलाये॥सवसखीहकीतहो
॥४॥आवतआवतनहीगयेहो॥पीहानहीआवतहो॥५॥स्या
मवीनामोरेप्रानहरतुहैवसभईलीसौतीनीहो॥६॥मीनबहाड
रअक्षकतुहै॥स्यामलोलगावतहो॥७॥

राग ॥ कुवरीनेजादुदारारे२नीरमोहीयास्यामहमारारे॥नीर
मलजलजमुनीकेधाता॥जाईप्रीवैजलवाडारे॥१॥कुवरीके
वनीयाकीउनहीदेखो॥करमहमारीभभागीरे॥२॥नही
दीनआवतनहीरातीनीदरा॥तलपतलपरहीसरीरेना॥३॥
हंगोकलडमधुएनगरी॥वीचजमुनादोलेरे॥४॥चहस

भीहीतबालक छवी ॥ हरीदेवर एगचीतलाहरे ॥ ५ ॥

राग ॥ मोहीनेजीगयेहोनेदकुमार ॥ बीचवनमेछारिहम
कोवरोछलीहैलवार ॥ ६ ॥ आवनकेसुधीभुलीगयोचीठीन
भेजेहोमुणी ॥ कैसेएषुं हरीवीनानुमअवतोसहीतजातमोही
नेजी ॥ ७ ॥ वीदावनमेगवनकीउदीतसुधीवीसएह ॥ आफुतजा
ईकारीकावेरवीरहअगीनीनलाह ॥ मोहीनेजी ॥ ८ ॥ परोपेआजा
उडधोप्रभूसेकहोसमुहाह ॥ त्यामसधीपीयाकवधोमीली
होंदधाननमहमार ॥ मोहीनेजीगयहोनेदकुमार ॥ ९ ॥

रागसौरध ॥ त्यामवीछुरनवानलागीमोहे ॥ १० ॥ लागीहमसो
मोहीजानेओरनकोहीजाने ॥ ११ ॥ वातजीनकोवानसमरैनीषा
पतीयापान ॥ १२ ॥ पभमएमधुरसमरैगनपएगनवधान ॥ १३ ॥
हृदयेपतीसमआवननाहीसदायोहैंकमान ॥ १४ ॥ दुपतत्याम
सधीनहीअवकीयोहृदयेवधान ॥ १५ ॥

राग ॥ पानीलेखीआयात्यामाकौदेसवामे ॥ १६ ॥ जबसेआ
येपातीकलनपरैलनाती ॥ छुतीहातीपातीआयेउधोसैवचा
ये ॥ १७ ॥ जबसेवचायेपातीतवसेवीरहछाती ॥ जोगीनीकेजो
गव्यायेभोगीनीकेभोग ॥ १८ ॥ सयनमेसोयेराधाकाहाजीजगाये
हैं ॥ ओमेवीसएसछातीछातीमोरेछोहंगह ॥ १९ ॥ वसतडरिकी
हुडजवरवसाईदीकु ॥ कवरीसैप्रीतीफाहमवीसएईदीहा ॥ २० ॥

गावहीमुलुकदासछातीदेवीरानीआसा॥यसमअधमकीभस
मचढायोहैं॥५॥

राग ॥ उधोजोगपढउनआयअवकैसेधीरेजाधरोडधो॥१॥
यकसमयवृद्धावनडधोमोहीतनलागीगईप्यासा॥सितलमधुर
जलपानीपीलाईआफनदेवहीरूपडधो॥२॥यकसमेवृद्धाव
नडधोमोहीपाडलागीगयकाया॥सोहरिकंतनीकलीगईप्रभूजी
आफनेहात॥३॥यकसमयेवृद्धावनडधोमोहितनलागीगये
भुषा॥पाषलफलहरितोरिबीलाईप्रभूजीआफनेहात॥४॥
यकसमेवीडावनडधोकरनफुलेपहीणये॥तवकेप्रीतीकहागय
उधोअवसमजोगपहाईनआये॥५॥इनहरिहमसोप्रीतीक
रेप्यारेमीनमेंमीयाजलधानी॥तलफीतलफीजीवनीकलम
लागीपापीवीरोधनजाई॥६॥जोरजोरिचीतआफनेजोएजो
रनलाई॥अवतोमोहनमातीकेमुरलोमधुकरहातपराई॥७॥

राग ॥ जबसेकहैयामोसोजोरलासजेहअवतोसुनीयडधोक
वरिसमेह॥१॥जहुमेरिजनीतोहेडधोपीयागेलैचोरि॥
धीवीबाधेवतीतोहेउधोरेसमकीडोरि॥२॥रेसमकीडोरियायेडधो
दुहीफाटिजाई॥प्रेमकीबंधारायडधोरहेलोभाई॥३॥हरिही
रितयावहीदोरेरासवारि॥फारुहिनैआदेवाकंपेतासरिरा॥४॥
नदीयाकेतीरेतीरेडधजेवसंत॥नाजानुकौनैफलवाबुधेलेक
त॥५॥गोरातोरायेलागीलोकेबढमलाहा॥रुसलकहैयामो

सोजनीलाउपार॥५॥ मनयेविद्यापतीउधोसुनोदजनारि॥धीर
जधरेराधेमीलीहेसुरारि॥६॥

राग ॥ सबदजनारिहरिवीनुवीकलभई॥धर्म॥दुरहेजातकही
ऊँजवनश्रीवनवारि॥छुदतफीरतसबगोपीयातनकीसुरतवीसा
रि॥७॥जमुनाजलजलोगयोस्यामवीनुजलकीजीवजरोरी
॥प्याकलसधिसववनवनछुडैनैनवीरधीरि॥८॥यममए
तुममससदामधुवनकीवासी॥तुमकहीदिवोजातस्यामडने
सुषएसी॥९॥येकदंतअवलागतीहारेनुमतोसदाहरिकेरि
॥तुमकहीदिवोजातस्यामदनेसुषएसी॥१०॥

रागचरध जोगजानेकोनेउधोजोगजानेकोन॥धर्म॥जो
गहमसेकरिनआयेसाधवेकोभवनु॥बालभम्बरछाडीकेमृ
गक्षाताबछेकोन॥११॥साधवेकोमनपसरोसाधनेकोपवन॥तु
मजायउधोकहोप्रभूसोआबसुअफनेभवनु॥१२॥जोगजान
तकवरिवैजंजीमालावदनु॥सुरकेप्रभूकवदोमिलिहैंकंसदा
रुदहनु॥१३॥

राग ॥ जमीछिकोएदगरवनवारि॥स्यामविनतीकरतुहैवा
रवार॥धर्म॥मधोसकहैंअतीधीतकहाईऔरसंगजाकरहे
नगवाई॥जवदेखोसौतीनकेहार॥१४॥

राग ॥ उधो हम के सेरु स्यामा वीर हव चन सुनोलीना ॥ धर्म ॥ उन
के सुरथ मे दोलन मुहाना प्रानन ही हे ठेगाना ॥ जाय उधो जो वात स
मुहाना उन के मन न ही माना ॥ १ ॥ समुह त समुह त प्राण जलीया
रेक से रबो जो यो मे रि ॥ तुम वी तु मे रि के लन पर तु है मी न त फ
जे से माती ॥ २ ॥ हम पर माया बडुत लगाई प्यारे को न अधम ने छुटा
ई ॥ सम ही हमारे जीया वैरागी को न उपाय मे पाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

राग ॥ वैरागी करम कथीन उधो मै न करुं ॥ धर्म ॥ जोग करत रो
ग मरत सुनी के जीया अधीक लाई ॥ हम से न वीष होई वीष वा
ई के मरुं ॥ १ ॥ अंग मरन धरव से समुग छा ला व छ मचीर मे ता ॥
धाई धाई जमुना जीये डवी के वरुं ॥ २ ॥ येक तो मोरि उ व रि जात
डुसर तीषत वीर हकी वात ॥ सुर के स्यामा वीर का पाई के चली ॥ ३ ॥

राग ॥ म्याम सुंदर दृज नैया मे वरि धारितु वीती गई ॥ धर्म ॥ जै ह
मा सजन तपन अमार वारि मी की हि मी की वर मे ॥ आवण गन ही दो
ल क है या कु वरि संगर ही ॥ १ ॥ भाद्रव गदार ही मे सि एक वर मत
मधुवा कुं कीर ही ॥ कार्तिक पछे ठरि जाई चंड से ता र सीत कीर ही
॥ २ ॥ अगहन अग्न स के रुप स मे वरन र ही हरि के माधम कनु हाये
क है या येक वी वी या ना भै जु ॥ ३ ॥ फागण भर था या मी न चै न
वन दे स फुल र ही ॥ सुर हा स वै सा व मोहन पर वै या करत रहे

॥ ४ ॥

राग ॥ बावामेतोवैरागीनीहरके ॥ धर्म ॥ पातपातबीडावनधुडे
 ॥ कृजगलोलगोकुलके ॥ आफुताजाईयेकवारिसंगवीलकेजोग
 करिवनवनके ॥ १ ॥ उधोजीतुमजावधारिकाववरकरेसभी
 यनको ॥ जैसोजलवीरमीनजोतलफेसोगतीभयेगोपीनके
 ॥ २ ॥ सयनमेकोदारसनदीजैपिरवठेवीरहनके ॥ केवलएग
 कोजानमे ॥ आसालगीगा ॥ धरकी ॥ ३ ॥ ३ ॥

राग ॥ नाएयनरमुनाथदयाकरकपासिंधुगोपालहरे ॥ गरुड
 आसनपरप्रभूवीराजीतसंवनकगजपथधरे ॥ मोरमकुततील
 कावनमालीपीताम्वरअतिलोभीतम् ॥ १ ॥ पालवृक्षपरमेस्वर
 स्वामिमछेकछेयहरूपधरे ॥ भक्तउद्यारण्डुस्त्रसंहारणनारा
 यणनामधरे ॥ २ ॥ मकरधोजश्रीगोवीन्दकेशवदामोदरणीरिधा
 रि ॥ कमलनेनवीसंभरमुनीश्रीवक्ष्यहृदयेचीनधरे ॥ ३ ॥ जोनर
 मुनीनामजयनुअंनकपद्मववारकरे ॥ सरनकरनमनोरथमे
 रिहासपदमयेहमानकरे ॥ ४ ॥

राग ॥ सबहुजनारिहरिविनुवीकलभये ॥ धर्म ॥ रवीवीनुजैसे
 कलकोमीलायेसोगतीभयगोपोयानाके ॥ १ ॥ भयवीरहवा
 कुलकोलाये ॥ सुधीनरहैजैसेसोतनके ॥ २ ॥ मनहीमनपहुताप
 सभीसव ॥ सुद्धिउद्धीमनकछुदेही ॥ ३ ॥ कबहुंछुडे ॥ कबहुंवेठे
 ॥ कबहुंथकीनरहीजाई ॥ ४ ॥ कहाजाउकेसेकरिल्याड ॥ कहा
 सेकरतपुकारि ॥ ५ ॥ सुरकहेमीलीहेमनमोहन ॥ धीरधरे

हुनारिहरिविनुविकलभये ॥ ५ ॥

राग ॥ मैदिलमेजादुराई सुवपालंगवीछाई ॥ सुतलक (जवाला
 ईः हायहाय उधोकवदिगई लेपोहावाचाहीरेकी ॥ १ ॥ पौतल
 मेकजगरि फल फलेवारिवारिवडुवीधीसमुकारि ॥ हाय २ उधो
 कज मईडलवीरह्याकलीहरेकी ॥ १ ॥ वीकलभइलेवालानहीदे
 धीनंदलाता ॥ काहासेकहवेहाताहायहाये उधोवतीयातोह
 तवानेनाथकलेरेकी ॥ २ ॥ सखीसवसंगसाथीचलेजमुनाप्यारे
 करियोनापरीवाले ॥ हायेहाये उधोसामरिसुरतीयाहृदयासा
 लेलेकी ॥ ३ ॥ हरिमोहतेजोभईलेकवरीसेप्रीतीभैलेकवरिवैरन
 भैले ॥ हाये २ उधोकवरीजोहतवाकोनअगारेकी ॥ ४ ॥ आफुन
 हीआयेपारीलेखीआताभेजोचीठीकदमकीउठलेछाती ॥ हाये २
 उधोमोरिलेसेजमुनाभयावनरेकी ॥ ५ ॥ मनयवीयापतीसुन
 कजसुवरि ॥ हाय २ उधोपुरुवजातीषलफलपावनरेकी ॥ ६ ॥

० राग ॥ छीमडयावीरहनहीहनेमफुतप्रभूवायमतेछिन ॥ १ ॥
 वसुरियासलतायाचितवीयमफुजीनमलाईथेहतासनफयाथें
 पीछाना ॥ ७ ॥ युनयारसवसज्जकाज्जकलुमनिवसपनाथेंनेन्योजी
 त ॥ १ ॥ गोखनवीवगुडववसवीतामेवमदुमेवयासरनवनावि
 ततिमतनप्रभू ॥ २ ॥ धनीनपानीयाकोससरगाडकाकीतसेवक
 सियावप्रभू ॥ ३ ॥ ससियालीवनेलुगुस्वगलीथुवहृछियाली
 यावरगगाहानानंदयाकप्रभू ॥ अवजाअपराधधेमाया
 यमालछिनअनाथसीयावप्रभू ॥ ४ ॥

राग ॥ कठुनउपायकरहुंगीमे आलीस्यामभयेक वरीविसजाये
 ॥ धर्म ॥ चैत्रमासरितुमदनसतावेसवीवैसाववहुतदुखवाये ॥
 जेकजयेवहुवीषलघामसेनीकलंकी अवतारहुनचाहे ॥ १ ॥
 आयेअसारमोरिवनबोलेआवरावीरहभयपुरवाई ॥ भाद्रवअ
 गमपंधनहीभावेभरिगयेजलसेमालतलाये ॥ २ ॥ आयेकवरर
 वनमंजुरबोले कर्तिकदीपजलेचहुधाये ॥ अगहनमेकोनीफे
 नभावेस्यामसोजायेकहनसमुझाये ॥ ३ ॥ पसमासरितुवीतज
 लावे माघमासजहुसहरनजाये ॥ फागणफणमेकाहसंगयेले
 नहीदृगपालनहिगहराई ॥ ४ ॥

राग ॥ बनीयाईकीयावतिया ५ धोवनीयाईकीवातरे ॥ धर्म ॥ जोक
 छुनीकोकछुनहीकातेजीगावलपासजातरे ॥ छोडेछेममावनदधी
 घाईरेगुईयादधीवातरे ॥ १ ॥ कालसुनीहरधोतीपहरेतीचरवारा
 वनजातरे ॥ अबदसुनीमाहाराजवनीचलोपहरकीयाजातरे ॥ २ ॥ माथ
 फोदकेमठकवनायाजिजोकेवलतेरेपासरे ॥ दादुरसहोवेठीये
 जलमेबोमानीरखतजातरे ॥ ३ ॥ वेवेकुंजावेकसुंताजीवेकसुं
 ताजीवेकपलषनजसाथरे ॥ हामसंगवेठेपीतकुबीजानाहाक
 आवतजातरे ॥ ४ ॥ कीतीनेवनाईमेरिकमलपतीरानीजीहामदे
 तोवेएगरे ॥ असमानीसेहाकीयाहुकराधरकुबीजापएलातरे
 ॥ ५ ॥ कुबीजाकेघरनोमतीवाजजीप्रेमसहीतवेएगरे ॥ सुरदा
 ससंतनकीयोमहीमोहरिकेवरणपएजातरे ॥ ६ ॥ ६ ॥

राग ॥ रामको आधार तेरि कृष्णको आधार ॥ १ ॥ भक्तन सुमेरन क
 रिजाई मया फोरि ॥ हरनाम कृष्णको मारि दिये प्रह्लाद उचारि ॥
 १ ॥ दज कोइ को पकीयो वर सै मुसल धाए ॥ वासुकि तेरे सा
 बन नवात परगो ॥ रवर धारि ॥ २ ॥ मथुरा मे जन्म लीये केस को पे
 छाज ॥ काली दमनाग नाचे मोर मकुट बाला ॥ ३ ॥ जसोदा घ
 र बीरे जीर हो लाला जीने हार ॥ दज मे सुकरो नैद के दुवार
 ॥ ४ ॥ तेरि ईह ध्यान ग्यान तेरि ईह धार ॥ सुर को स्या महर
 सन दीजे मोर मकुट बाला ॥ ५ ॥

राग ॥ हाम सो त्यागी मगन वनी जाई ॥ सावरिया गोध मे रि
 दीनत वा ॥ १ ॥ जीर की नाम सग सुजीया लीह मु सो लेवी लेवी ओ
 र मीलाई ॥ कपती चलनी बोध मधुकर कवी जा के मन माना
 सवे ॥ १ ॥ बोलत कृष्ण वचन उन लागत कुबीजा मगन करि दि
 ल मो ॥ हम सो ठोरा मगन ईश्वार ही चुगत बोचनी साक साव
 ॥ २ ॥ जीस्ने भक्ती की करि दील सो अकीपा पपुर्व दुख हरई ॥
 हम से बेलना वसता भुलना उन को बलीदान सावरो ॥ ३ ॥ क
 हत अनाथ चरण को महीमा अग र ही अपार ही अपार
 हो ॥ मीतन एधा कृष्ण मगन भई दुर्जन को बोज दयान सावरो
 ॥ ४ ॥

राग ॥ जोगीनी कुवन धनी चारे माउर ही बीज के सेर रुट हमे ॥ १ ॥
 अगहन आयन ही मोरे स्वामी आसन बाधु मधुवन मे ॥ अंगव भुनव
 रुत अभुवन ध्यान धरो अफने मन मे ॥ १ ॥ माघ वसंत फले दुर मारती
 ओर फले संग रिवन मे ॥ भवर उडवी चमरुया बोले हरि बीज के सेर

हुं गृहमे ॥ ३ ॥ पुसहीचमके आये जारो महीमा हरिवीनु कै सेर हुं गृ
हमे ॥ मृगछा लाये कसे जबीछा उ ध्यान धरो अफने मनमे ॥ ३ ॥ फा
गुगारंगवनाई प्रेमकी स्याम सोये ले चादनी भै ॥ कृपाये नाथ मीले
मेरे स्वामी चरण लगाउ अफने मनमे ॥ ४ ॥

राग ॥ प्रीतलगाकेदरदकेवानायेतनाछलसेमधुवनगैलेलाला
तोरेभैसेनाचाहीये ॥ १ ॥ उमेरिदसवारवरसवाकी ॥ चीठीलेना
यालीकम्बरकतारिसैनादुरलेनाहमनीकली ॥ १ ॥ हातमेलेना
वासुरियाभलाउससेकालाछेकदीये ॥ फुललेनाहोरकतमुरली
मोहीलेनारजकीनारि ॥ २ ॥ तुमतोकाहारांगरेंगमे ॥ नाचतगोपी
यानासंगवतमेलालातोरेभैसेनाचाहीये ॥ ३ ॥

राग ॥ हमसेनबोलनामाने ॥ ठाडैकवीजाईमनमाने ॥ ॥ हमारेक
हीयेसिंघाहउतारे ॥ दृघयजलहीसबधोईदारे ॥ माथेनीलकचछा
उंयेल्हे अचोलनामाहा राज हा ॥ १ ॥ जमुनाकेतीरतीरधेनुचछाये
पुरलीमैकछु अचलगवै ॥ मीलीतानसुनायेमनमेमोह माहा राज
॥ २ ॥ हमारेकहीयेकुंनहीमाने कवीजाकेप्रेमरसवाधी ॥ उनसो
हीलीमीलीरहनाहसनाबोलनामाहा राज ॥ ३ ॥ हमारीछतनुम
संगलागीलोकलाजसंबदेहमत्याधी ॥ भीरकेप्रभूगीरीधरनागर
वनवनदेलेदोलना माहा राज ॥ ४ ॥

राग ॥ उधो मन की मनो मरही ॥ क ॥ इत गो कल उत मधु एत गरि
वीच मे ज मुना वही ॥ आ फुत प्रभू नी पार उत रिग ये हम को क छुन क
ही ॥ १ ॥ ये क समये हरि मे मृग आय हमु दधी मठन रही ॥ मे पा पी
वीर ही नीची छुत ना हो कब सो भेटन भई ॥ २ ॥ आ फुत जाई दारिका

मेवैरेहमकोकछुनकही॥सुरदासप्रभुनमारिहरसकोआसातागीर
ही॥३॥

राग ॥ सैयामोरेनीदनआयेमुरलीहोरिलालआरेवाकेसाथ॥१॥
नीदनआयेभुवनलागे॥कलनापरेआरेनीदराजसैया॥१॥पूरेपह
रेसगीतुमारेघोतीनी॥कवनदीवसापुजेसैया॥२॥हातनरिवलपान
केबीराचललीवोगोर॥आरेपुजेसिवसैया॥३॥कवडकेसिवप्रसं
नभयोहैदेडना॥पुनराअरेधरजाईसैया॥४॥नदीयापारकेयोपीप
रारे॥छछनावीछाडनाआरेवाकेहारसैया॥५॥गौरिपुगेगंगापती
पुजे॥पुर्वेलीचनवासैया॥६॥६॥

राग ॥ लालमनवगलोपकरधर॥१॥स्यामसुंदरयेकचरित्रमनो
हर॥लपकीरूपकीकरिरहीयो॥१॥चैत्रचतुररितुभावणआयो॥
नदीनलासवभरिहीये॥कुबीजाकेपतीरापोस्यामरोयेकदीनआसा
करिरहीयो॥२॥

राग ॥ तनीहमारोवातभलारेडधो२डधोप्रभुजीसोकहीयोजा॥१॥
सोनीधीमैरगमहलमैसपनादेवीजाभलायेडधोस॥कपतकेवरिया
बोलताप्रभुचलोहमारिसाथभलारेडधोचलो॥१॥

राग ॥ अबकैसेधीरधरीरेडधोआरेडधोस्यामावेनुवजे॥१॥
जमुनाकेनीरतीरकदम्बकेगछैया॥काहातेरेवेसियावजाई॥१॥मो
रमुकुटपीताम्यरसोहै॥गलसोहैवेजंत्रीकेमाला॥२॥चहसषीभजो
वातकहलछवी॥हरिकेशरगचोतलाई॥३॥

राग ॥ मैवजवीसंरथनाहीरेडधो॥४॥जवमेछोडोगोकलनगरि
॥गोकलकेसुखनाहीरेडधो॥५॥सबदसुनीहैवनीहैधारिका॥गोक
लकेछवीनाहीरेडधो॥६॥गोकलकुडेकडावनकुडे॥कुडनराधापा
रि॥७॥सुरदासप्रभूतमारिदरसको॥हरिकेचरनवलीहोरि
॥८॥

राममह्वारसोरथ ॥ कहोपरदेसीकोवात२कहोसधी ॥ ॥ जोदी
 नगमनकीपोजेदुनदन ॥ कोहीनआवतजाते ॥ कहो ॥ १ ॥ मीडीरअ
 रधअवदनीपुवदीगयो हरीआहारोसमिजात ॥ अजयाभवनहं
 स्वारथनाहीकेसेदीवसधीएते ॥ कहो ॥ २ ॥ सधीरीपुवरसभानुरे
 पुयुगसम हरीपुकरिखोधात ॥ नक्षेत्रवेदग्रहेजोरीअर्धकरी
 सोईवनतअवधात ॥ कहो ॥ ३ ॥ मघापंचकलेगयेसावरोता
 तेजीये अकलात ॥ सुरस्यामप्रभूवीकराधीकाकरमीजेपहु
 तात ॥ कहो ॥ ४ ॥

स्ममह्वार ॥ दीनअफनाधामावीतो ॥ र्क ॥ कुवीजाचेलीकंसए
 जकीनंदनंदनजीकेछोतो ॥ १ ॥ जोदीनअफनेपुपवनीहैं ॥ कोने
 वडोकोनेछोटो ॥ २ ॥

राग ॥ उधोहरिधीनुकैसेजीयावोहेउधो ॥ उधोअवतवीतलयेकर
 तीयाहेउधो ॥ र्क ॥ उधोसुतलवरहलीभैयेकसंगसजीयाहे ॥ उधो
 कवकीउडलीमिरेचोलीयाहेउधो ॥ १ ॥ उधोउलनीचीवलहरिनंद
 देयेसो ॥ उधोकवकीगयेलमोरछतीयाहे ॥ २ ॥ उधोहमअसेना
 रिसखगुनगाहैं ॥ उधोपुहषभमरवानीरमोहीयाहैं ॥ ३ ॥ उधो
 माऊरकुलपरममरातोभेलोहैं ॥ उधोकवरिलोभैलाजकुपती
 याहैं ॥ ४ ॥ उधोमनवीमापतीसुनरुजसुंदरिहे ॥ उधोहरिजोग
 येलपरदेसिहेउधो ॥ ५ ॥

रागवीरहीनी ॥ चीत्रगुप्तसोकहीयेउधो अंतरगुप्तसोकहीयड
 पतनाउधारेरिकोसमहाड ॥ र्क ॥ आऊप्रभूजाहंवारिकामेवै

ठे ॥ हमको प्रीति छुटायेनी ॥ १ ॥ आफू प्रभू जाई के मासन चोरि
 धाई ॥ हमको दोस लगाने जी ॥ २ ॥ सुरदास प्रभु तुमारि दरसकी
 ॥ हरिकेश रराची तलाई हो ॥ ३ ॥

राग ॥ दामीनी दम के जरा मोह लंगी जरा दुंदुब दल स्याम
 घटा ॥ ध्रु ॥ तुम ताहा हम या हा को ने गती मे रिस पना मे देखत घ
 डी घडी ॥ काहामी ले प्रभु तुम को फेरि ॥ १ ॥ पिहायी हा कहते जन्म
 गई मेरि अब दीन चीत गई रोया ॥ दरगवन गैया को ने हवाला मे
 रे पीहा दामी ॥ २ ॥ लेखी पती या ना पीया भे जो सखी अवनुग
 वरिषारे मेती ॥ पीया विछुर मो सेई गी विरोगी नीओ लो जडा हा
 मिती ॥ ३ ॥

राग ॥ सामलीया को ने वन छुर न जाई सामलीया ॥ ध्रु ॥ धन सं
 पती मे सब को ही अफना ॥ वीपती मे को ही नही ॥ साम ॥ १ ॥ गोकु
 ल छुडो वी द्वावन छुरे ॥ धुरन को ही नही सामलीया ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

राग ॥ हेड धो जाई समुहाई कृष्ण जी से ॥ ध्रु ॥ तुम वी तु व्याकुल ल
 गत भयो सखी सो भयो सो तीह मारा ॥ हेड धो माधव जी से कहियो
 आवत आ फने ग्राम ॥ १ ॥ हमार ए अरु जी प्रभू जी से कहियो जाई क
 हा कर जोरि ॥ कोन मो चुक परे प्रभू मो सो पछिली मृत का हा तोरि
 ॥ २ ॥ वन वन व्याकुल फीरत राधी कात हर वीषय मत धेर ॥ हामु
 औसिनारि सर्व गुन गाई काहे प्रभू दीन वी से राई ॥ ३ ॥ कुर्वी जा कुं
 जर के सका दासी सो भई सो तीह मारि ॥ तुम स्यामा प्रभू कवई मीलो
 जी जन्म जन्म फल पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

राग ॥ उमडी घुमडी घनता गैवरसन ॥ जबसेगई दरसन को तरस
न ॥ ४६ ॥ उधोजी जाये कहोगी रिंदरसन हमको छाडी धारिकावर
सन ॥ हमको प्रान कठिन वीनु दरसन ॥ ११ ॥ कुबीजा केली करत नीत
हरन बाछवी कोलागे हम तरसन ॥ तापर मोहीनी अतीनी ॥ मोही
लीची लीची जोग पठाउन करसन ॥ १२ ॥ वीरहीनी जरत वीरही के रु
रसन घाये लभदन अधीक के सरसन यहावेन हीक से कटे दीन
वीनु लक्ष्मी पतिके पग परसन ॥ १३ ॥

राग वाहू मास ॥ असार मैम सखी रंग बदली बधने रिरितु आई ॥ मो
रे पीया परदेस सजनी छाडो पछिली प्रीती है ॥ ४७ ॥ घमैड बादल की
रत बरु दीस बुदन के रु रिलाग ही ॥ साबोन मै मैया छाडे मो रेजीव व
रुत उदास है ॥ ११ ॥ भाडो वपुरि जठ बोले बकटे लीरानी है ॥ मोरे पीया
परदेस सजनी नीत देखो खाव मै ॥ १२ ॥ कुवार मै सखी जोर जारा मोरुत
सही लोन जातु है ॥ मोरे पीया को रबी अमानत चोर नालेई जातु है ॥ १३ ॥
कार्तिक मै सखी रंज करती रंग रूप लगाई के ॥ जो कोई मोरे जीव हो
ते पीया को त्याग स मुहाई के ॥ १४ ॥ अगहन के दीन साज होती मो रेजीव
व रुत उदास है ॥ येक दीन प्रभु आये जाय कैसे कते गी दीत रात है ॥ १५ ॥
पुस मै तुम जाव पिय हर पीया के दुख सुनाव ॥ रोवती तरिका मिनी येक
दीन के ग्रह आवई ॥ १६ ॥ माघ मै सखी जोर जारा मै वडी छुकारि है ॥
पीया पीया रती लाग भजनी पीया वीत जाउन जात है ॥ १७ ॥ फागुण
मै सखी पायल पेदे धुग रुहन के रुन कार है ॥ मोती मै सोउ हर पै है
तिलक वरुन अघार है ॥ १८ ॥ नौम ह्रावीत ल सजनी दसन चैत्र जोला

गुह्ये ॥ येवीधाता कालेयोवरूपे रिदेड अवतार है ॥ ९५ ॥ वैसावमेसुधी
 र्थायाजो लोटे सखीनसेनवीछोवही ॥ पीयानता कहीमिरेवरियाको
 नवानीलेगई ॥ ९६ ॥ वाहूमासवीतलमजनीनिठ जोहतरहीगई ॥ गा
 वतीयेहनगनवाएरासुरकेप्रभूमीलीगई ॥ ९७ ॥

रागवीहाग पीयोवीनुकोनमनावतपीरा ॥ १०० ॥ चारमासवरधारितु
 होये ॥ धानमुषेवीतुतीर ॥ १०१ ॥ तोहरेवातमोराओसालगतुहै ॥ जैसा
 कलेजातीर ॥ १०२ ॥ सिवनारायेराकहोसमुहाये ॥ सोभामकलसरिह
 ॥ १०३ ॥

रागगजलभैरवी ॥ हवीसतबीजकीउधोजरातुमजाकेसमहाता ॥
 मनासवहैडमिलार्जामजरासुरथदेवाजाना ॥ १०४ ॥ लेखाकरपत
 गोआपुमेकहतगोपीयारोरो ॥ लीखाहैस्यामनेउधोईआफने
 हाथपरवाना ॥ १०५ ॥ बफाहोखोनेकलजातीतुमारोईतजारिमै ॥
 दुवसआतावीरजहमकोनवीडावनमेवरसाना ॥ १०६ ॥ लवोपरजानआ
 ईहैतुमारोईतजारिमै ॥ दुवसआतावीरजहमकोनवीडावनमेवर
 साना ॥ १०७ ॥

राग ॥ नीदआतीदिनहीधडकेकेवसवाजसै ॥ तंगआयाहमेईस
 उरसोदीलहैवकीमनाजसै ॥ १०८ ॥ सैकरोमुरडेजीलायेओमामि
 हानाजसै ॥ मोतसरमीडाहक्याक्यातेरेयजाजसै ॥ १०९ ॥ वागत्रा
 ऊंजोककसमैमततोसेहुआमिरा ॥ अबधुलेपरभोजोसेवाको
 फनहीपरवाजसै ॥ ११० ॥ कवनैराहतसैसोयेथेनथामहसरका
 ॥ धौकावाजआयेमलिसाहसुतेरेयजाजसै ॥ १११ ॥ वाटागफलन

भीनहीहोतीकदमपरवैलहे॥बौकपडताडसिक्सेहोसकी
यावाजसो॥५॥नाजेमासुकानासेघालीनहीहैकइवात॥भैरे
नासेकोठठायहैबेकीमअदानसे॥६॥कममेसोपहैपहस
रकानहीघनकारसा॥बौकनेवालेहैकवहमसुरकीआवाज
से॥७॥

रागबंगालीभैरव॥कोंकरकोंकरस्यामनठवरजाईसरनीजका
जे॥चपलनयनसरिवरियेनरिकरेसाकाजवाजे॥८॥हमारे
जोपकुसललललनारितुहीस्यामातुहीस्यामाजानेना॥कायेन
कायेनछुयानाछुयानाहरिसरिलाजे॥९॥

राग॥भैलेतोमोहनयेठधोमोहीवीसराई॥हातवामेपुर
लीयासोहैगलेरुडमाला॥जोगीयाकेभेसकाउधोधरेनंदलाल
॥१॥जीउमेशिजनीतोहेठधोपीहागेलेचोरि॥धीचीवाधीवनीतो
हेठधोरेसमकीडोरी॥२॥रेसमकीडोरीयाउधोदुटीफाटीगेले
॥प्रेमकीवधारेठधोरहेनीतोभाई॥३॥जोनेजोनेहरिगेलोकी
यालगाई॥अंतरअंतरेठधोनदीयालगार्ह॥४॥फलमध्येनरि
वरउधो॥पत्रावेमध्येपान॥त्रीयामध्येराधीकाजीपुतसमध्येका
ना॥५॥यकसवीधुरनलायेडुसरीपरिगारि॥भरिकुंवरीआ
येउधोसउतीहमारी॥६॥भनहिबीयापतीउधोसुतोदजनारि
धीरजधरोयेराधामीलीहैकहेजा॥७॥

राग ॥ मेघवाकेरतीयायउधोसुतलुवरुवा ॥ वंसीयानाकेसयमी
 त्येवदनमलीना ॥ १ ॥ आगनासुसुह्यसुतीडुवरसुरा ॥ कैसेकैसेघा
 वमैधावरुवाज्यनपुर ॥ २ ॥ वावाकेदोहलेपुरनोरीतीरीदाह ॥ सेनाके
 शलनेपुरकैसेनोरीदाह ॥ ३ ॥ तरकैलोसीलीलेलोहाडपरेकैसेनीधुर ॥
 तेमैतैसेउनेनपुरवीहरेकलेजा ॥ ४ ॥ भनहीवीघापतीउधोसुनोकज
 नारि ॥ मैलेकुवरीयायउधोसडतीहमारो ॥ ५ ॥

राग ॥ हरीकेकवरउदेसबारामाजोगीतीयाहोईकेना ॥ तेजभैरो
 रामासुरतीयादेवीकेना ॥ १ ॥ सोरहोसीगारकरिकैहाथतीयेसा
 रंगहुमकीकेचरीतोना ॥ हारकेडवीअनरीयारामहुमकीकेचरितोना
 ॥ २ ॥ चुबीचुनीकलीयाभैसेजियाविछाईतो रामाघुगरवाषोलीकेना
 ॥ हरिकासंगवामैसाह तोरामाघुगरवापुताकेना ॥ ३ ॥ गावकेरलो
 गवावेरनमैलेसाजनसबतीयादेवीकेना ॥ गोरीचातीडुकलीकलीजा
 ई ॥ ४ ॥ धनयविघापतीसुनयसुहागीनी ॥ धीर्जकहनातो कामीनीहैक
 हैयारामाधीर्जधरुना ॥ ५ ॥

राग ॥ मंडोलमैजादुराईसुमयलंगवीछाईसुतलकरजवाताई ॥ हा
 यहायउधोकवधोगईतपीहावाचोरीयारिकी ॥ १ ॥ बोजलेमैवज
 शारिफुलफुलवारीयारिवडवीधीमैपकारि ॥ हायहायउधोसावती
 सुरतीयाहृदमेसाललेहोकी ॥ २ ॥ वीकलभईरुवातानहीरेखोनंद
 लालाबाहासेकहवेलात ॥ हायहायउधोवजमदवीरहैथाऊली
 हारेकी ॥ ३ ॥ सभीसवसंगसाथीचलोरेजमुनाधाटेवईयोनपरे

बाटे ॥ हाय हाय उधो मोरे लेखे जमुना भयवने की ॥ ४ ॥ हरी मोली ज्ये
जी गेले कुवारी सो पृती भेले कुवारी केवन वन आ केर कि ॥ ५ ॥ आ फुल ही
आये पाती लेखीयो न भेलो पाती कर की ठठे ले छाती ॥ हाय हाय उ
धोवती हजो हर यठा कनरे की ॥ ६ ॥ भनही वीघा पटी सुनो बुज सुंदरी धी
रिज धरो ये राधे ॥ हाय हाय उधो पुरुव जो लीपल फुल पावले की

॥ ७ ॥

राग ॥ कैसै जी उवीनु कुवारी सावरो वीर ही नीघेर लीयत न मै ॥ १ ॥ आ
ये असार चहुदी ससजनी वीजु लीचम कट आगन मै ॥ पिंड पीडं करत
जीयारा प्रकारो मोरे लापु कारो ववन मै ॥ २ ॥ सावरा सवीरी गरत ही
दोना फुले पीया को संग मै ॥ ३ ॥ मधुनी फुला वन धरिया धरिया छिन
छिन मदन दहत न मै ॥ ४ ॥ भाडोर हेन भय उ सवीरी मोतीयान मान ग्री
हे पतीया ॥ कथीन कठोर पीहा तोरे छतीया लेखीयान मै आय हो प
तीया ॥ ५ ॥ रहल जाय स्या मबीनु सवीरी कै से कंडीर हीनी रतीया ॥ जो
गीती हुंगी पीहा को मना डमीली गड स्या म सवी पतीया ॥ ६ ॥

राग ॥ उधीतुम जाड जरा स्याम की समुझाने को ॥ १ ॥ मै बबीले पुं
आले पुपरवाने को ॥ पषपती नही दील चाहता है डर जाने को ॥ २ ॥ गोऊ
ल की छोर मधुवन सै मधु एको गये ॥ हाम भी व्रज तक चले जाय गा
वर साने को ॥ ३ ॥ मुझे मालु मन ही था कुवारी ने जाड कीया ॥ कुवारी को
राजे दीया हाम को मीतर सोन को ॥ ४ ॥ सुर के मला आवेगा की आ
वेगा ॥ मुझे बैठ रहो हेतु मेला लाने को ॥ ५ ॥

राग ॥ हरित्यजी गेले वैरागे नीराधा ॥ ६६ ॥ आफत जाये द्वारि कामे वै
ठे ॥ लेखिया न भेजो बीर हकी पतिया ॥ १ ॥ ये कुल गोकुल ब्रकुल मथुरा
॥ कुवरिन लेगे लोर थपर धरि के ॥ २ ॥ जमुना के नीर ती एधे नुच छाव का
हा ॥ मुरली बजावत वठ पर धरि के ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु नुमा रिहर सको ॥
हरि के चरण चीत हृदये पर धरि के ॥ ४ ॥

राग ॥ तकरही मधुवन की डगरिया को हीन ही देख परे सजनी ॥
॥ ६६ ॥ असग मास जव लागे सखीरी चौदी स भरि गये ताल नदीरे ॥ थारे
सोच करे बजवाला कुवरि सो ते सै अवताव नीरे ॥ १ ॥ भावण मै सखी कुल न
ही डोला चुनी चुनी मोती यान माग भरि रे ॥ तब तो कलो हरि आई बज मे
मास ही वस मे तकर हीडे ॥ २ ॥ भांडो सखी रि मे घही वर से उमरि चली
मथुरा की गली रे ॥ थोर सोच करत कुल न मै अज हुन आये श्री ए मधनी
रे ॥ ३ ॥ कुवर ही कुवर न आये सखीरी कुल न परत हीत ये को धरि रे ॥ आ
ली मोही मीलने की मोरे मो को मोरो अज करे सजनी रे ॥ ४ ॥ कार्तिक नी
र मल होत बहू मारे न लगी संसार भरि रे ॥ हीत की रे ही नी सुता ए गगन मे
बहु चकोर सै मै जो घडी ॥ ५ ॥ अगहन मे सखी चीर पहीरे अफने पीया के
सेज चली रे ॥ धरि वै जा संग सो वे बल म्व की डन के सुवन ही जान कहि रे ॥ ६ ॥
उस मे रे न ह मै न ही भावत पीया के ऐग वी योग भरि रे ॥ नीत ड थी कंठ को ने
मना वे अव मरि जाये प्राय कती रे ॥ ७ ॥ माघ व संत जव लागे सखि रिल बक
र क न रहे घर मही रे ॥ आली रे व संत के सेम ना ड जीत मो हे ड व दीयो रे
नई रे ॥ ८ ॥ फागण मे फरु के मोही अखिया पिया मिलने की वार सुनी रे
॥ सव सखी यन मी मी सग ए वी चारो पीया आवन की आज सुनी रे ॥ ९ ॥
चैत्र रे न ह मै न ही भावत चार सुरज लौ लागी एहे ते हे ॥ करि करि मैन न
देउ मना ड ची ए पनोर पहीरे नही रे ॥ १० ॥ वैसाख मंडीर हरि वी छाड

दिरकट रंग सुगंध भारिरे ॥ औहे तो सारि है कवरु रुज नाये कत न कीन प
न भुजाये रहरि ॥ ११ ॥ जेठ मास यकर थह मदे सा पवन के साथ जान
उरार्ह ॥ सुरस्य मद्य आय सावरे सब सबी से गल चार करे रे ॥
॥ १२ ॥

राग ॥ रुज को सदे सा कहत उधोने ॥ १ ॥ अरु करे डधो हरिजी के
आगे ॥ प्रभु वीन था कल भय रुज वासी ॥ १ ॥ ग्वाल बाल सब गोपी गावे
॥ त्याग करे प्रभु मन नोड ॥ २ ॥ स्याम लीला गाये फीत एधीका ॥ आपु
विनुज सो मति दुबीत भई है ॥ ३ ॥ रुज के वीहाल को न बधानै ॥ कहत वेर
वधन नुमारि सरन ॥ ४ ॥

राग ॥ कहत जातोगती रुज की माधो ॥ १ ॥ धारव छरु गोवा वील से
ग्वाल बाल भो कल के ॥ बीहावन धन सुकन लागे ऐवन पक्षी वन की
माधो ॥ १ ॥ मनी वीना जै से कीरत भुजंग बछरु छुटे गोवन की ॥ स्वाती
के बुंद पियार हा है स्वगती भय गोपियान की माधो ॥ २ ॥ जल वी
जमीन कमल जोतार के धन छुटे दीन के ॥ औसे नारागि गोकुल की
हरन पंठ चरण की माधो ॥ ३ ॥ लक्ष्मी पती करुण कर स्वामी साचो
गाठ धोके ॥ रूप करि के दरसन दीजे ना ही भोग सातन की माधो
॥ ४ ॥

राग ॥ उधो के आवत ये देवो राधा होई गई ले भाए ॥ कनक कस
लीया यउ धो कसल रुज एज ॥ १ ॥ आधी एती चहा डडई यो रे
॥ उगी गये मान मन के दर दीया रेड धो काड काडना जाने ॥ २ ॥ मैतल वसु
रवा यउ धो से हो सीए के सिडुरवा यउ धो से डं मैले मलीन ॥ ३ ॥
मासुत गलीया गेले उधो ॥ हरि गय हार सिर के सिडुरवा ये उधो ड

धोसिहोमयभार॥४॥भनहीबीयापतीयउधोरधासुतोह
जनारि॥धीरजधरहुँकयेराधातोहीनीहेमुएमी॥५॥५॥

राग॥लालकेसुधीकहेमतीकोई॥ध्रु॥उठनवीरहकठोरजीये
से॥मदनकीमदहरे॥१॥मेनपठिपठिकीयोहेतुनासकले
सुधीबुधीहरे॥लालहमाऐकनकओसोकरिकसेतीकारे
॥२॥अवतोउधोपरिहेवीछुरनयोहिजीवमेधरे॥लागेत्याम
सबैसनेहीयाकवहुँनातरे॥३॥

राग॥मोहीतेजीगैलेसखीरजरान॥ध्रु॥जोदीनसोमाकाछा
डीगयोहेलगतकजमोकोआग॥जरतहुँसखीमोहीअवलान
हीआवतनैदलाल॥१॥येतनीकहोउधोजायप्रभूसैआठ
नेअफनैभवन॥मोहीजानेअवलाआफनासीमकीगुगवन
॥२॥वीनतिकरतहेदासभजनसैदरसचहतदीनएत॥भजन
दासकेआसयेहिहैएषोचरनकीयास॥३॥

राग॥हुलनेतुमजावसवेसखीमैनहीजाईहुँ॥ध्रु॥पहोर
पासजवकार्तिकलागेमोहीछाडेकंठेलीनवनवास॥नाचनअ
हीरचराबलेगाईविनुसैयाकार्तिकमोहिनसुहाईकीमैनही
जाईहुँ॥१॥दोसरमासजवआगहनलागेमोरियाचलेनेहर
आफना॥पानफूलरसकोफलजिनेकंठवीछुरहेदेपडबदी
नकीमैन॥२॥पुसमासअतिपरतपहाएकायलअंगवुद
नभहएये॥कालेअलेयादोलेयाकेसैनवीजसैयाकाये

गोरिया कलेजा की मै न ॥ ३ ॥ माघ मास सरवी वरत तीहा र मै वरत पा
चे अतवार ॥ नहाई थोई त्रीया दीन असी सजीव सु अंता ला खरि
सखी मै न ॥ ४ ॥ फागण मास वै फागुनी वियारि नरि वल पान सवे
रि जाये ॥ जड मे जनी तो बही फागण वेयारि कंठ के धरितु मै मरि
अकवारि की मै न ॥ ५ ॥ चैत्र मास वन कुलत ते सो गोरि खावे धावे
पीया के सदे स ॥ हमारे सते सवा कहव स मुहाई वीर ह अगी ती
वन सह लोल जाये की मै न ॥ ६ ॥ वैसाख मास रितु मंगल वानी पुन्य
ल गोरि थाही लेवर ॥ छाडले मारी गाई लेगी ती वीठ से या गीत ल
गे अतरित कि मै न ॥ ७ ॥ जेठ मास जेठ वरि जोग व पुजने नीक
ले सव लोक ॥ कज एनी कुलीया से डरा करली न फीर फीर कंठ मो
र मुख हेरु की मै ॥ ८ ॥ आइल ये सखी मास अता एनख मै छावे संभार
॥ बीरिया चरुगी लावे होतुं डपु रुय कंठ भज रुंघर चेत कि मै न ही
॥ ९ ॥ श्रावण मास गुरा हरि नीर खो धनी कुसुमी पहे रंग चीर ॥
नगर रुं चंदन छारि कडु आग वीठ से आ मडर सो भरन ही मग
की मै न ॥ १० ॥ भादो मास कोनी सु अवी यारी तर फेल वी जुली हात ड
जीयारि ॥ डठेर गोरि या जोहे ले वाट मे नी जानो कंठ आवत वार
की मै न ॥ ११ ॥ कुवर मास वन बोलत मोर डठो डठो गोरि आईल
सिया जोर ॥ आयेल पीया वा पुज ले नेरि आस सुरदा सगावे
वा हो मास की मै न ही ॥ १२ ॥

राग ॥ अविरत आय श्रावन के सखीया ही डोला फुले ॥ अजहु
न आये हरि आवना जीय ए अधिक हीयहुये ॥ १ ॥ भादो घमन
घनग ए जे चहुवर दामीनी दम के ॥ दरसन के हीये एतर से
मुरली मधु ए गढ गम के ॥ २ ॥ आश्वीन आसल गावे अजहुन
स्याम नही आये ॥ चहुवर मोरिला बोले सुनी सुनी के हीय ए
डोले ॥ ३ ॥ कार्तिक का हानही आय कुवरि सोन विल माये ॥
अजहुन ओय हरि गाठे वीर ही अधिक तन लागे ॥ ४ ॥ अज
हुन बाडा उधो डठे दीला सादी गये ॥ सुधी आय के उधाप
नी ऐवे एधे का एनी ॥ ५ ॥ लेखी पोष आय पाती सुनो के ध
र की गये छाती ॥ मुद्रा लेष रि के माला सुनी जोग मोरे जीव
के माला ॥ ६ ॥ कौट माघ मन को भारि हृदी विष मा भजनी
जवहु धीना साजाने तव जोग की गती जाने ॥ ७ ॥ फाग ए मे
फल पावा जो कीन सु आगे आवा कुवरि सो जल बी मानी
कव काली हस्ती उदावा ॥ ८ ॥ सखी चैत्र वाहु च मेली चैत्र
फुलेवन वेली ॥ नौवीं पुष्य होवा ठे अजहुन आय हरि गाठे
॥ ९ ॥ बैसाख वीर हीनी बाव रि आये स्याम विनु होवरि
॥ नही ने नरीद नही आये जीये ए अधिक सजाये ॥ १० ॥ त
रिजा बेजे जवानी जो ही लागी मो जानी ॥ काहा से दर
द काहा से बोले जीय ए वल वंदोले ॥ ११ ॥ असार आसाते
नी के कवत यद हरि भजी के ॥ हरदम हृदय मे एज वडे आ
कने हरी ॥ १२ ॥ सखी पुजे वाहु मास आसा सो भये हो नि

राग ॥ हरिसेतुमकहियो जाई हो जाई उधो पारि हेतु
 मारो पाउ हो पाउ ॥ १ ॥ नंद प्रचंडा होये कहु दीन मे
 जसो दातरत भयन न छीन मे ॥ दुद पीलाये गोद की
 लावे सो के सेजीया वा के भाई हो भाई ॥ १ ॥ बहु शानी
 की सव त्यागे गो बावन छीन त्याग न लागे ॥ बीडावन मे
 गाल बाल हे सघ पोहे बील बाई होई बाई ॥ २ ॥ जमुना
 जल भए बाहन आय बज मंदल सब दे आई ॥ विशावन
 घन सुघन लागे कंजर हे हो मीलाये ॥ ३ ॥ कुवी ए एक
 सकी दासी सो सुनत मोही आई हासी ॥ सो य रा नीज
 जाइ की हा कुल की लाज गुमाई हो गुमाई ॥ ४ ॥ जोगी क
 संग भोग लगये हम को ले बीले बी जोग पठाये ॥ सुर
 त्याम प्रभु नुमारि दस को ये ह गती कही न जाई हो जाई
 ॥ ५ ॥

राग ॥ देओ देओ सखी रुसवाला का हाग ये ज सो हा
 के वरे नंद लाला को बा ॥ ६ ॥ मास असा ए प्रथम व ए सा
 नी घर घर सखी सब हुल न लगानी हुलेगाई ॥ हुलेगाई
 मंगल बानी भये ले मे आ बर मास देया नी ॥ १ ॥ भांडो
 रहे न भये डन ए ती पीया परदे सजडे मोटे छती के सेज
 ॥ के सेजी ड सुनो ड धो पी ए आ सिन आ सुनन यन नी ए
 ॥ २ ॥ कारी क मास पुनीत महीना सखी सब क ए सी घा ए

नवीना वील सोपीया ॥ वील योपीया बुंदरी टंगा वीर
 सेना अगहन मोहनी भावे ॥ ३ ॥ पुस मे यवण सर
 दरितु वेया अडिड धी प्रभूजी सो मो से अयना लोक
 हीयो फुले त्याड ॥ फुले त्याड माता माधमै गी हर सु
 मद न गोपाला ॥ ४ ॥ फागुण सवी सव खेत न लागे
 होरु वीरु से याजीया ए बाकुल यले मोहि मोती माला
 ॥ मोहि मोती माला गले वीच त्याग चंदन चैत्र अगरील
 कला गी ॥ ५ ॥ रितु वेला ध पुपु के ग एमी अफगापी
 या बिठ भयला वे स एमी ॥ जै हो जा हा स्याम क हा
 ई जेव मास पीया न दुगी बोलाई ॥ ६ ॥ जम भये एम
 जो न दु ए ये तीर के के स एनील क सु हा ये ॥ छवी लो मे
 लो च ए ए न ए ना ए रा धा के म न व से प्रान पी या ए
 ॥ ७ ॥

एगरीगनः॥ ॥ जगतकी व्यापितकी होः माया केवल वल
समागोः॥ ॥ येक वृक्षों में डों पंक्षी वे छे येक गुह येक
वेलाः॥ गुह वरसावे जगतकी धारा वेला पुनी पुनी वावे
माया केवल वल समागोः॥ १॥ येक वृक्षों में पंचलि माया
सात पाचई न आईः॥ इन पाचोरे जगत वनों हे केवल
वल अकेलाः गाः॥ २॥ गगन मंदी लवी चः अमृत के वा
रा ताहा गीर जन को नाताः॥ गुह हरहे सो गीर गीर पीवेनी
गुह मरुत पीयाताः गाः॥ ३॥ कहत भक्त जन गुहो भर्तुता
पुः येह पद है अल वेलाः॥ जो येह पद को पुने पी चाहे तो
पुरे गो गी ह माराः माया केवलः॥ ४॥

एगरीगनः॥ ॥ आसने जग कीयो देवानाः॥ ५॥ चार दिन
की सो जगो जगो सहे जे जन मग माया॥ गुह के स वृक्ष येन
ही आई जग की हात पर जाना॥ ६॥ परतीत वी वास नहि दुनी
यामे वीरु का मीन ले मीलन जाना॥ चेतने जाला चेत गया
हे अगम पन्थ को जानाः॥ ७॥ मगुही गुही के देवो चरम
तह जाये आप भुला नाः॥ अभयानन्द कहे सुन ला पुन
रुप वी लव जानाः॥ ८॥

एगमल्लारः॥ ॥ इसी वृक्ष डी चनला गीर वरुनः जवमें गरि दरसन को
नारुनः॥ ९॥ उधो गी जाये कहो गीर दरसन हम को छाडी दारिद्र्य वरुन
॥ हम को शान कधी न वीरु वरुनः इसी वृक्ष डी ॥ १०॥

रागभजनः॥ ॥ कोहेगुमारकहनां यरायकडीनमातीमेंमीलीजाना॥
 ॥ १ ॥ प्रभुजीरि मातीवरनामातीवीछाडिनामातीकरलेसीराना॥ मा
 तीसे मातीमेंमीलीजानाईसाठरिचलीजाना॥ १॥ प्रभुजीरिनदीकी
 नारमेंधुवाडिरुहेदेखठहेसनीसार॥ चंदनसारिकात्व करिजला
 आरुनासारिकाकाया॥ २॥ प्रभुजीरिमनामकीलुटपरिहैजोचाहे
 सोहलता॥ अंतकालमेंपरिपहुतांगाप्रानजांगाछुता॥ ३॥ प्रभु
 जीरि मातीवरीवरीमहलवनायाः लोककहेद्वारमेरा॥ प्रानपुतसग
 वनीकलीगयोहेः योचरतेनमेरा॥ ४॥ प्रभुजीरिहुठिमायाहुठिका
 याहुठाहेः सनसार॥ मायासेसबजगतवनायाहुठामनमेलायाः
 ॥ ५॥ प्रभुजीरियोभनगोभनगरिकेपागीभीजीगयोगमार॥ कोहे
 कवीरसुनोभाईसाधुनीअयेमरनाहोगा॥ ६॥

रागनीगुनः॥ ॥ जीनपीवेरामासखालो हरिजनमतबालोमतवा
 लो॥ १ ॥ मुत्तचक्रमेंवन्दे लगावेहुलतापवनचहाये॥ आसान
 मारेगगनवीचवेठेहरदमदरसनपावे॥ १॥ इगलापीगुलायु
 ससननारिइनमुत्तकेद्वारमेला॥ अष्टदलकमलनवीचआ
 पुवीराजेः सोसाहेकअलवेलाः हरिजः॥ २॥ वीनाधरतीअकमईल
 देखाः वीनासरवलजलपानी॥ विनादीपसेमन्डीलहुजीया
 रीकोलतअमृतवानी॥ ३॥ ब्रह्ममीलेअभिनासीगुमकेचर
 राः कमलचीतलारि॥ कोहेकवीरसुनोभाईसाधुः आन
 दकेद्वारभेलाः हरिजनमतबालो॥ ४॥

रागः ॥ ॥ हरिनामलोमनाप्रवेष्टन फुलधोजनमः ॥ १ ॥ त्व
 योरातिहालागुवेलेः अतीकस्तित्तथोजीवनः ॥ २ ॥ गुजनम
 स चोमेमयाः लखरातिहालेमातीः ॥ ३ ॥ गर्भवासचोनागु
 वेलेः हरियाभजनया यधकारे ॥ ४ ॥ गर्भवासपीहाजीवया नाम
 यागुलेभूलेगुलः ॥ ५ ॥ बालवसंज्ञान जीमदयाः मामवुवाया
 मुलेभूलेगुलः ॥ ६ ॥ जीभनया अवस्थाजीगुलः तीरियाजात्ये
 भूलेगुलः ॥ ७ ॥ धनडोत्वथपयेकेधका अनेगुजतनयानागी
 नरे ॥ ८ ॥ छगुजतनया यजीमफया वनाह कनरुकरं भूलेगुल
 ॥ ९ ॥ साधुसनीपीरतीमयानाः हरियाभजनतचीततयम
 फुरः ॥ अभयानन्दन धालन्योसाधुपी आवकुनु चेतया
 नाकावः ॥ १० ॥

रागगीर्गः ॥ ॥ एमरदुबरसाचाहे मरपरमात्मा हरिसाचाः दि
 अतभूलीरहनाहे मरः ॥ १ ॥ भवसागरमेजन्मलीयोहे ॥ आ
 र्थमदीपरमोत्तनाहे ॥ २ ॥ कायावनीहे घट २ आडोः ॥ य
 हजीवाफेरिनिहिपावेः गाः हे ॥ ३ ॥ यहकलीगुगमेजन्म
 लीयोहे ॥ भ्रमतेरभूलीरहेः मरः ॥ ४ ॥ धर्मसाठपठयेहे
 मरः परमात्मा हरिसाचा ॥ ५ ॥ कहुतजित जनसून
 भाइः साधु ॥ ६ ॥

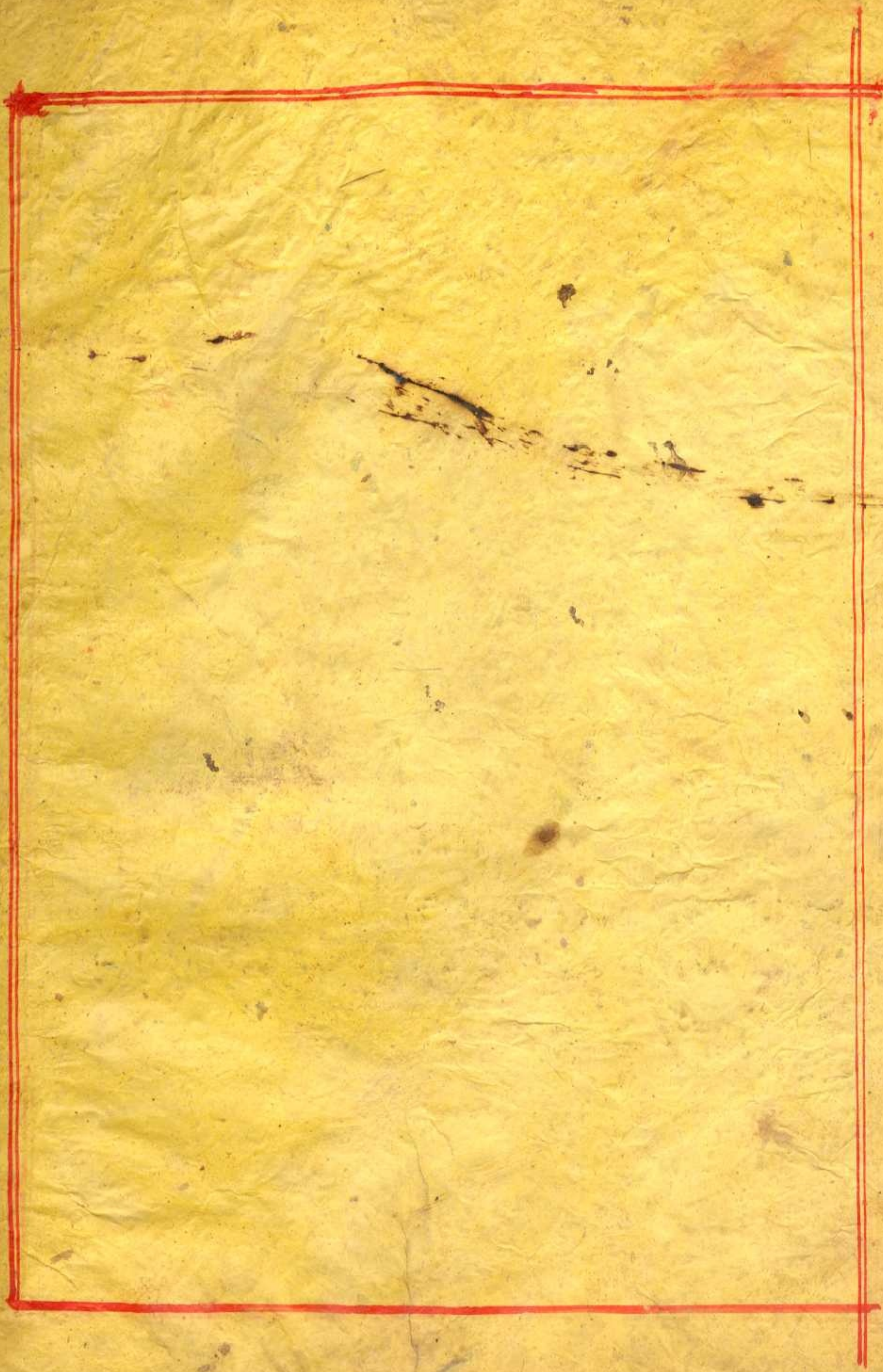
रागनीगुनु॥ ॥ श्रीलामवनकरि हमको नोकर राखो जी॥ १॥
 नोकर रह्ये वागस्तगा तेनीले उद्योदर जनक रूखे॥ वींझा
 वनकी कुज कलीलामे॥ गोपीलीला करी हमको॥ १॥
 नोकर मेहम चाकर रहती सुमर नपाती अर्चि॥ राम नाम
 की वीर करती यहि हमारी॥ अजि हमको॥ २॥ तैताने स
 वभावन वनीहे॥ बापर मेहम गोपी॥ यह कलीगुग मेह
 नची जदेवा॥ चन्दन माला तोपी॥ ३॥ एक ठमकट मकराकी
 त कुंदन॥ मरली कधरो धरती॥ सुरस्या मप्रभु गुमारे दर
 सको मोहनगुली बाला हमको॥ ४॥

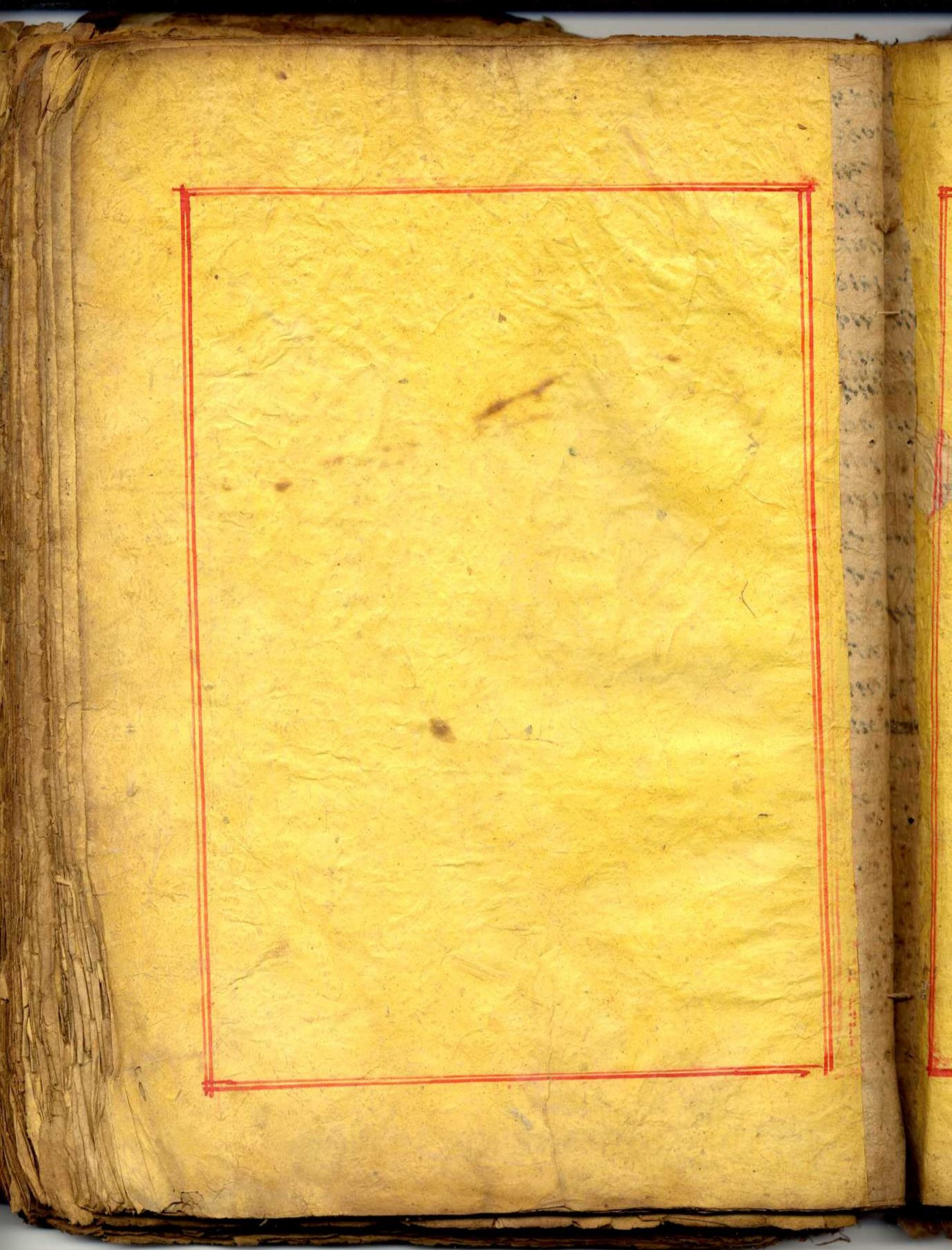
रागनीगुनु॥ ॥ गुंनुल्लार पीरे जगत मेह कोसा हेनाता॥ ५॥
 मातक हतपुत्रलगतुहे॥ बापर कहे सुत मेरा॥ बहिन क
 हेगा वीर शाभैया॥ स्त्रीया कहे जो दाभेरा॥ ६॥ जबतक जी
 वे मातारे वे बहिन रेवे छमासा॥ स्त्रीया रेवे तीदीनगी
 दे॥ जेदक हेचर वासा॥ ७॥ हाउ जले जो लक डी जेला के
 सजले जो चासा॥ गुंवर देह जलने लाये कोहीन आये
 मासा॥ ८॥ वेठे तीरिया सोच कर गुंहे जो डावी छुरिगई
 मेरा॥ काहे कबीर सुनो भाई साधु॥ जीन जो दासीन तो
 रा॥ जगत मेह कोसा हेनाता॥ ९॥

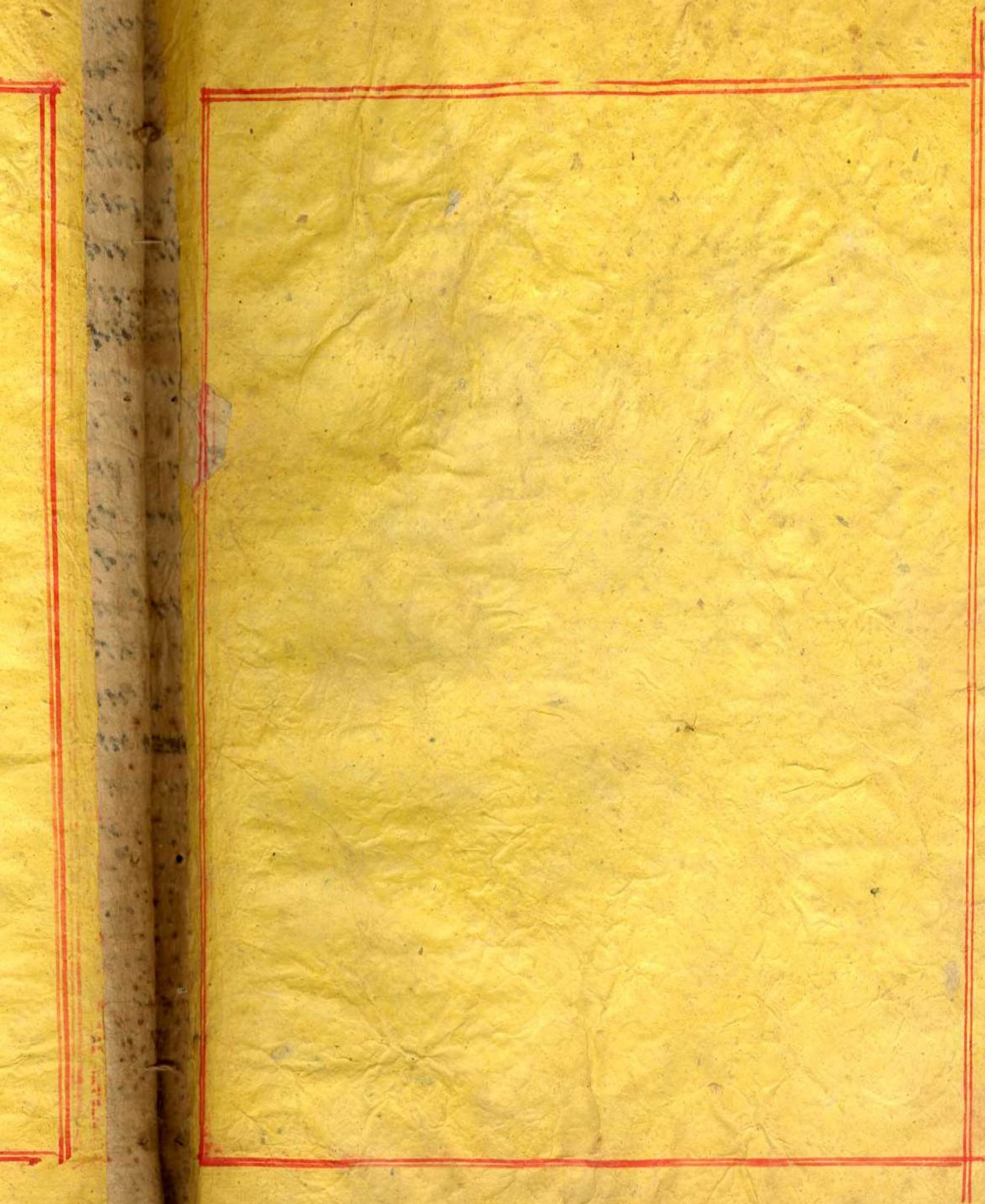
रागनिष्ठन ॥ ॥ मनेददानजमिकोरराजावलि ॥ १ ॥
 याहिनेहोनामूकसमाचाराजा ॥ चरीकरूपन
 रसिहकोरराजावलि ॥ १ ॥ ॥ दुरदसमेआयोम
 राजानुन ॥ सुनिकेनामवलिकोरराजा ॥ २ ॥
 जोवास्मरणआलिचलीजावेनेयुक्त ॥ वीगरना
 मवलिकोरराजावलिः मन ॥ ३ ॥ याहिनेम
 स्मासुरदुत्पाराजा ॥ चरिकरूपजननिका
 रराजावलि ॥ ४ ॥ याहिनेविडाकोदुलि
 तिनाराजा ॥ चरिकरूपमुनिकोरराजावलि

॥ १ ॥ ॥ रागभजनलीगतिः ॥ ॥ सवजगभूमिमेकीरको समुद्राडः ॥ १ ॥ गहि
 रिनीदीया भगमहे चार ॥ वेवने हार श्री परिगयो फु ठामे ॥ १ ॥ जे
 चार होतो मे समुद्राडः ॥ सवहिगुले येही पैतकीध ॥ २ ॥ सु
 चर वडनदेवी मतभुलो ॥ उगादि पगडी जेसे वसको वृत्तामे ॥
 ३ ॥

क॥
 न
 म
 ॥
 न
 म
 न
 न
 लि
 ॥ गहि
 ॥ १॥ जे
 ॥ २॥ सु
 ॥ मे॥







रुचि मा

एग वीर ही नीति ॥ ॥ अवतार नागत तोरे भगवन् ॥ १ ॥ एवं वा
कोरे हरे नाम कस मोरे ॥ लोय नर सींह अवतार भग
॥ २ ॥ राम रूप प्रभु राधण नारे एजे बीबि लेन पायः भगव
॥ ३ ॥ श्री हर रूप प्रभु कै सन धारे ॥ कोरव की यो नीर
वारः भगवन् ॥ ४ ॥ दुरपी चौर दुहास नमस के ॥ लाजे
रखे माहा भारि भगवन् ॥ ५ ॥ सेकरी के फल सो दीप्र की
तंडु ॥ रुबिर पी भोग लगायें भगवन् ॥ ६ ॥ दुर्जोधन
घर मेवा लाग्ये ॥ साक दोदूर घर पाये भगवन् ॥ ७ ॥ एक
हताशत जन सुतो भाई साथ ॥ जस रको डासः भगव
न अवतार नागत तोरे ॥ ८ ॥

एग अलुनी ॥ ॥ कछपानी कालीक कालीकामु
 गछावासीसपामा ॥ काल कुरुकेला सवालनीच
 द्रकलादास्पामा ॥ १॥ कंचमुषीकमलासुवदाना
 कमनेन देवाद्याजे ॥ जोवामागे स्ववादीजे
 जगमंदलहेभाए ॥ १॥ वागपुनीरपुर्वदके
 सारेवाहीननीलखवीएजे ॥ यपकृधाएनीम
 सकवीयववापुस्वधामा ॥ २॥ गंगागीनागो
 गिनपनीगोननीगुएअनीकाए ॥ गासेक
 गीगुजकनारीनोमगिनभाए ॥ ३॥ धीहाधो
 वनधोएसएजनिधुनीचलोचनहाए ॥ धन
 नधननकुद्रावनीवाजेपोधमनडुनीधाना
 ॥ ४॥ चंद्रवदनसेचकोचमकेचीनामनही
 नकाए ॥ चंचलचालचलेहीगचंचलचंच
 जमनहीनकाए ॥ ५॥ दामादनेदवाद्यापाद
 नकेदनीहैदवीहानी ॥ दनाकपाकचोव
 दोलेगुमहीगीगाधाए ॥ ६॥

रामभजन ॥ ॥ सत्येनारायणभक्तकोतारे अधमभक्तमदुनतारे
जये ॥ १ ॥ हिरन्ये होरन्याधोशोधसेतारे भक्तनामसे प्रह्लाद
तारे ॥ २ ॥ गोगनामसे ध्रुवजीकोतारे गये ॥ येहपदविदेकसेधा
नधरो ॥ ३ ॥ अधमराहसे रावनतारे दवीसे कृष्णकर्णतारे
ग्याननामसे बीभीसे नतारे कृष्णनामसे व्याधातारे ॥
॥ ४ ॥ हत्थानामसे कंसकोतारे नीन्हाकरसीमुपालतारे ॥
साका नामसे रुद्रनामकोतारे रामनामसे गनीकातारे ॥ ५ ॥
वीरहनामसे लखीसवतारे छलसे छपनकोटीतारे ॥ ६ ॥
तीनामसे भक्तकोतारे तीलकभक्तसे कुजुजातारे ॥ ७ ॥
येकयेपाये भक्तवानीये कनेपायाकुडुववनार
धुनाथकीरचनाभपादिखतवरदतमे मूलनारहि ॥
॥ ८ ॥

रामभजन ॥ ॥ नारायणनारदलो कहियो सत्यनायनध्यानधरो ॥ १ ॥
मेरेचरमे जोवल्लरहाहे सोहीसत्येनारायणध्यानधरो ॥ २ ॥ येहपद
गोगगुगतलो जाने लोजनवे कृष्णवातको ॥ ३ ॥ शंखचक्रगडाप
द्वीवीतीतगलमे मोतीके मालभो ॥ पावपेजनीछमरवाजीतवी
सात्वनेत्रको दयाको ॥ ४ ॥ मोरमकुतपिताम्बर सोहे जानमेकु
न्दनजोतिभो ॥ श्वेतहृपअतीसुन्दर लोभानखजोतीससलभा
रगरे ॥ ५ ॥ कदलीधतगो धूमपंचामृतसपादजादकीजेवी
देचिह ॥ ६ ॥ जोमहाप्रसादजोभोगलगावै गनीमुनीको रहचहि ॥ ७ ॥
जीवात्मनकुन्दा मुखीरजाः साधुवनीजादयासेतरे ॥ ८ ॥ गजवीरसीधोत
नामलोतीगये ॥ वखतभक्तपलकीपाको ॥ ९ ॥

राग भोजनतीति ॥ जेय जग डीवः कीगु हने कात्तीः तार
 नी न भवरा केः नाहुराती ॥ १ ॥ आडी पीछ ज
 ग डी शरि डी शरिः जगत ज नतीः परमे श्वरि
 जानी ॥ मोथ पम्प पतीः सँ वरु र्वा मी करत
 नी लप अस्तु तीः नाँ म बखानी ॥ १ ॥ तत वाग
 मतीः कानरां के ल्लासाः आस पासः गरा
 जेरी यो गी नीति ॥ डी प मनी स मः मी डी के
 धुवीः सकतः को न कविः करत वयानी ॥
 २ ॥ भरथ खराड ये पात्तः दे सहिमः पर वतराज
 की यो नृ पधानी ॥ मय प्रगत नी जः म क म सुखा
 रगारु धो ही कार रा आडी म वानी ॥ ३ ॥ तत्रि मंत्र
 गरा यंत्र श्वरु पीनी प्र हन की ज सवत लो श्वरु पीनी ॥ प्रग
 त गपुतः लघु ज धुलः श्वरु पीनीः शक्ती श्वरु पीनी चतुर सया
 नी ॥ ४ ॥ व्याप करी च वरा के घत प्रांती प्ररु नाडी कपर कर
 ही ध्यानी ॥ मधु हने सा मी भा मूर हनी भक्ती चरुण की व
 हु जु अजानी ॥ ५ ॥ देही ये ही भवने धरि ये वे सडावी
 नतीति मः पद जग डी वी ॥ नान तात्त मागत पद ध्यानी भ
 की चरुण की वहु कं ट्यानी ॥ ६ ॥

रग भक्तुतिः ॥ ॥ गृहे श्रीर सरादि पाली जग माताः ॥ १ ॥ रा
 नमन धरमनं हि पाली या वास फेना ॥ दया दय मात
 प्रभु अवला सना प्रमाताः ॥ १ ॥ दुष्ट दको नास या से भक्त ज
 नर धाया से ॥ वीवेक वी चालतया जगत पालन या से ॥ २ ॥
 मनमती का ये वना दास भालन वही न ॥ सुदिष्टि न श्रवयेते
 ल क र ना क पात से माताः ॥ ३ ॥

रग भक्तुतिः ॥ ॥ जग डं वे भवानी होः मो पद माया
 को रा कर तीरिः ॥ १ ॥ पद्म के ड पर सि भवारा ज्येः व
 डं ही श्री शूल वी धारिः ॥ रक्त वर रा की जो तीस मानी
 धं दे श्री मा हा कालीः ॥ १ ॥ नील ही रू पी जग म ग
 जो ती व दे भये कर मुरतीः ॥ नर भू रड मा ला ग ल ने प
 हीरे धं दे श्री भै रवी ॥ २ ॥ गंगा रानी वृद्धा ये नी वे व
 वी वर दानी ॥ इन्द्रा ये नी प्रगत भयो हः वाराही मिय रा मो ॥ ३ ॥ जल नूत
 मुराही मुराहि वी ल वी न सीर पात्र धारे ॥ भुमती श्री भः सी गीनी
 री या गीनी वर कला देवी ॥ ४ ॥ सती हर की सत भवानी मित हि भै रव
 वा नी ॥ सत्रे दू दन को न व दुर्गा हे मा को ला व रानी ॥ ५ ॥ ने मने पा ला अधी
 पती माता ती हे श्री गृहे काली ॥ जगत को र आ कर हो गी डा स न ल को
 जानी ॥ ६ ॥ का हि क वीर मुनी भाई सा धु मन की भक्तुति गा ना
 ॥ मन री धा सो पुर रा हो गा ॥ धार वा मु वि सी व रानी ॥ जग र व
 भवानी रे मो पद मा या की र न म हि ॥ ७ ॥

को न कर नेरि

॥ ॐ ॥ श
य मा ल
ने भ त्त
से: मा ॥ २ ॥
न श्व ये ते

पद माया
रा ज्ये: व
स मा नी
ग म ग
ग ल मे प
ये नी वे
॥ ३ ॥ ग र
सी गी नी
वे ती हे भै र
पा ल भ धी
स न ल क
लु ती आ ग
ग र द वे

राग अलुती: ॥ ॥ माया देवी दुर्गे २ म वांति कर शी: ॥ ॐ ॥ गं व
दि नी: ॥ १ ॥ नीर्म ल क र ती: नी गुरा ताम व क्ता नी: ॥ २ ॥ म
मु हा सि नी: म ग ल क र ती: को ती: चं र म ल क र ती: ॥ ३ ॥ मु द म
ली नी: म क त वी र जी त: नाम सार द र ती: ॥ वा ग वा दि नी प र व
ल्ल नी: व र ड नी: मा या नी: ॥ ४ ॥ ना ग रा ज की: मा ल्वा पहि रे व
व वी र जे: ॥ आ फे ना चे ड म लु ग र वे: श्री गी री सं वा दे: ॥ ५ ॥ ग
ज द म्वा तु म स र ड प र: सम ल हे स र मा री: ॥ गी री ग र नी र द्वा क र
नी: मा ध व ड म र्द द सी: ॥ ६ ॥

राग अलुती: ॥ ॥ दुर्गे दुर्गे तारे रे: मा स न्त न को प्र ती पा ल्ता को मा
॥ १ ॥ ॐ ॥ अ डु: अ प र हा त ध रे मा: ति ह के ड प पा व ध रे मा: ॥ २ ॥ भू त
वै ता ल को सा ध को मा ज्वा ल्वा मु खी त्व हे ना म ध रे मा: ॥ ३ ॥ भ व
ता ग र को: चि त्त ध रे मा: त्री भू व न को प्र ती पा ल्ता को मा: ॥ ४ ॥ तो गी नी ग
रा को वा त को मा: भो त क धे त क धे ना च को मा: ॥ ५ ॥ ही न्दु रा ग
की भा व को मा: का म रू पी तो हि ध्या न ध रे मा: ॥ ६ ॥ मु क्ति क्षेत्र मे वा
स को मा: गा ध त से व क: को पा प ह रे मा: ॥ ७ ॥

राग अलुती: ॥ ॥ नी ल्यं २ म ग ल सर्व सि धि दा य क: हर त का ल त पा प द
प रो ग स व ना श न: ॥ १ ॥ ॐ ॥ ह म व ड न रू पी न चार भू जा धारि न: ॥ प र म र्द व र धा
रि न: तो हे ग ग त पा ल्नी न: ॥ २ ॥ ॐ ॥ ग्रे ते ग मी ही न: ह ड य ज्ञा न धारि न: स त्र तो
रू पी न: ॥ त्व हे ग ग त पा ल्नी न: ॥ ३ ॥ अ त्र ह तो हे ना स न: स त्र तो हे व द न: ॥ ४ ॥ म
ॐ ॥ नी आ दि स क ल स क ल त्व हे ड ये क: ॥ ५ ॥ अ र ज क र त ल क्ष्मी
ता स न ये ज्ञा न हार न: ॥ लो भ पा प दु ख क ष: स क ल तो हे ना स न
॥ ६ ॥

राग असुरती ॥ ॥ जये मा जगत जननी अमर खरिड नो दक्षे नदी
नी हे ॥ १ ॥ सकल घट चठितानरुपा वालनट उ जवानो सुभा
॥ वी वीध वीधु कलाय रुपानी लभ्य है ॥ २ ॥ गावत मुनी ज
न प्रह्लाद पाती हरि जीवन को लेत आनी ॥ कृपा करो हो महे
शरणी दास जानी हे जय ॥ ३ ॥ तो हो ब्रह्मा ईश्वरानी रमानदी
हे भवानी ॥ जाती में कोहि जती वखानी वेद बानी हे ॥ जये ॥ ४ ॥
तोहा जग बोधार तारनी सु र अमर तन दो संहारीनी ॥ लक्ष्मी
बोरा सीव होरिनी ॥ अधम तारनी हे ॥ जये ॥ ५ ॥ आदीस तीम
हे सर जन दुर्वया करदुर्व भजन ॥ शिवाजन बहु भीर भजन
प्रभ भजन हे ॥ ६ ॥ श्रीराम अचला भक्त कीजे सकल प्रेम
पी योग लीजे ॥ मोही दुर्मती दुर्कोजे तारलीजे हे ॥ जये ॥ ७ ॥
राग असुरती ॥ ॥ जये जती देवी रुद्राणी वृक्षानी जेयर त्याना ॥ १ ॥ को
च मुवीक मल्ल सुवशाता कमल तेन दू वीराने ॥ बाहर से सु मल्ल
ल्लपा दु अमय सक्ति दुती भामा ॥ २ ॥ जागु मरन मन भजन होतु हे
तारि छिनीज काना ॥ अमर दुर्जन सीर मर्दिनी अमये नान वृक्ष
नी ॥ ३ ॥ कोती आनन्द कला दू वीराने अमये सक्ति दुती भामा
श्रीनृप नाथ महि पती गावे अपत नान नी ज भामा ॥ ४ ॥
राग असुरती ॥ ॥ धन्ये जननी काली का नम हो से लावाही का ॥ १ ॥ सकल
लोक पाली का पाप हरनी माली का ॥ सकल अफ मारी का अमने सार
लीनी का ॥ २ ॥ सीहि परस वारिका काली सहित गुणगका ॥ श्रीमती
रनी का वन्दे चरण कोली का ॥ ३ ॥ सीस मुकुत धारिका कुरसी सुन्दर
का ॥ रत्न खचित गाली का नीखिल देवपुत्री का ॥ ४ ॥ राम वारा धारि

का कवद का नी पुरका ॥ शुद्ध पद्धे कार्तिक का गुरी मा सडीन का ॥ ४ ॥
क हत मछे ध्वज का ध्यान तेरो चरण का ॥ स्वरूप पर ध्वज का ह
उये शान धारिका ॥ ५ ॥ ^{ध्यान लीले}

राग भजन ॥ ॥ श्री ध्वजानी कु धारनी ये पर मे ध्वज गगन धामा
॥ ॥ मा ध मा हा त म मा हि मा ते रो ध्या न धरो सी व रां मा ॥ आदि भु न
को ही न हो पा ये स व च ट मे वी स रां मा ॥ १ ॥ जो ती नी रं ग न रूप ती हो
हे भक्त न मन र मां ना ॥ फुल सुगंध सुगंध वास के लाव त्त पनु व
नामा ॥ २ ॥ स डा प्र ग र हो तु म दे ना भक्त बछ ल तु व ना मा ॥ ३ ॥ पदी
प नै वी दे ई त्या दि स व प क वा न ब ला ना ॥ ४ ॥ अर ध दे ही द या
से न का के स व र्णि हा र वा ना ॥ मन की म न र ध पुर न कर नु हे
स व सु ख को नु म दे ना ॥ ५ ॥ अ र्ध धर्म सु ख संपत्ती दे ना ॥ सदा
हो क ध्या ना ॥ स न क म न द न म न त क मा रो ॥ ज प त र हो तु व ना मा
॥ ६ ॥ म ही मा नी ते ॥ तु म ग ग त मै गा व त ह र ह र ज प तु व ना मा ॥
गंगा जल पर प्र ग त भ यो हे हे मा रूप तु म ना मा ॥ ७ ॥ का र न
म ये के स त तो भा व ॥ च र ण स र न गु न धा मा ॥ अ र्ध धर्म सी व
म गा व त स न न म न वी ख रा मा ॥ ८ ॥ भ क्त जन स व च र ण मे गा
त ह र ह र प द सु ख दे ना ॥ मा त स हा ये प ती त गु ण गा व त
र ण क रो म न का मा ॥ ९ ॥

राग मल्ला ॥ ॥ गरुत वरुत ता भिजत आहुली तुमारे पीतन को भुज
पीरुका गरुका लागाये ॥ १ ॥ जो लोह म तुम ॥ य क तं ग री हे ख लो र म
र ही ये स ग त ॥ आ न र ण का रि ॥ ला न र उ द र या ॥ दे हो रं गा दे ॥

राग वा हमासः ॥ सुने सखि गोवीन्द नाम गुं धारो ॥ १ ॥ अवगत अ
 गहन मासे आयेः मुनीजन गरा सब ध्यान धराये ॥ बन्दे हं पुन सो
 तम को लक्ष्मी नारायेन ॥ २ ॥ आपत आये पोछे मासे नारायण को ना
 म धरायेः माघ मासे माधव आये माधव नाम गुं धारोः सुने ॥ ३ ॥
 देओ फागु मासे आय गोवीन्द जी को नाम धराये ॥ चैत्र मासे रा
 धी का वीसु कुकु मनी चवडो लाय ॥ ४ ॥ वैशाख मासे मद्
 सुदन केः वायु देवता सरन को आये ॥ जेष्ठ त्रीवी क्रम रूप ध
 राये सिंघी नी नाद वजाये ॥ ५ ॥ आषाढ मासे चडिडी स भजे
 एा कुवाम नरूप धराये ॥ श्रावण श्रीधर नाम जपतु हैः रक्षा
 करने को आये ॥ ६ ॥ भाद्र मासे के सब रूपी माया रूपी रघु न
 रन को ॥ आश्वीन मासे पद्मनाभ केः सुन्दर स्थापन वात
 देवता ॥ ७ ॥ कार्तिक मासे डामोडर के गोपीनी गरा सब जनु
 ने आये ॥ तुलसी पुजत हरि गरा गावत कृष्ण चरण नीह पा
 गा ॥ ८ ॥ जोनर तुलसी पुजे भजतु है सो नरवे कृष्ण मीलन
 मे ॥ कहे अनाथ की नाथ तुलसीः भवता गर सो तर ना ॥ ९ ॥
 गोसखी गोवीन्द नाम गुं धारो ॥ ॥

गभजन ॥ ॥ कसे को पनी हने है न गरीज गुमान भाई ह्यो
 गो गुमान मर्थ ॥ श्री डी हानुं दुर्ग कटारी बाधो हानुं धान ॥ दि
 दिखे दे पको दैलाने कलौ पनी पोषा न भइ हो ॥ १ ॥ दासुभा
 दासन मने मारी वनवास ॥ भूधनोई एगद डी समवनवास

सभा
 कमा
 राग
 दुष्टेन
 आसु
 वीचम
 लोपन
 मोन्या
 चवेर
 रासव
 सागा
 भुपा
 ह्योव
 ॥ १ ॥
 नथोप
 गरी ॥ १
 कीवीध
 मजई
 रीवा

समाईको ॥२॥ कोही प्राणी एजाकाजी कोही प्राणी प्रजा ॥ पुनसको
कमाई हेरेनेवी दीयो दर्जा आईको ॥३॥

रागणीहीनी ॥ ॥ होये मेरो स्वामी प्राण पोचारा बिर्सि सक
नुहेन गुननेए ॥ ॥ ओं फले समेत नाम प्रभु को समरोवही मेरो
आसुको धारा ॥ १ ॥ ॥ सीक सी गेम रोग मुखको रुज्याना दरवार
वीचमा सब को सितारो ॥ प्रभु होई वक्त्यो काल को प्यारने नुमे
लोपना रुमनेनी सारा ॥ २ ॥ ॥ लपना भेन कुन दोन होला वीपना
मान्दागी गयो प्रभु मेरो ॥ सबही वीपनी पदवाल चलन वीचा
रा बखरी मेरो भल सगुजारा ॥ ३ ॥ ॥ कुन जनम प्रभु संग भेटजो हो
ला स्वकाकी अग्नी ने न्यायोनी होरा ॥ वेध भयो अवधान ज
नसा रा जो गरीनी भेजे जु अवधा वाप ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
एग भुयाला ॥ ५ ॥ ॥ हो धुनी थ अनियगार ॥ नल्लेगी रीत का साथ माए चाई डेउम
सीह चावस मा गार ॥ नल्लेगी राथ का साथ माए चाई डेउम
चाई ॥ ६ ॥ ॥ पत्नी बाछे रुने स्या अधीन सजाई ॥ डीला रुत
देन थो वीचा रु गार ॥ ७ ॥ ॥ आफु लेगे को सीधु आफु ले
वीगरी ॥ दुवै डीन को एम को द्या पावे पी पोनी सजाई ॥ ८ ॥ ॥ न
विकी वीधाने द्या के नारा ॥ पाडे सवाटे रुतियो वा
वनाथ जाई ॥ ९ ॥ ॥ मसि कुमारी डेव रुद्धी न केही मत धारनी ॥
थानी चाहे केही लपो येक दम प्रात जाई ॥ १० ॥

॥ आजकी नीने गुने माऊ पावार्हे ॥ ३॥ यों में जा जा
माई ॥ जोई मईल माऊ को धो ॥ ४॥ पनेथे कमने पाई के धो ॥ ५॥
धालेल की नीने ॥ ॥ आज जो मरिंहें ईस मंद को नीने को
नेही छी ॥ कमने नीने न पाई की नीने गुने ॥ ॥

[illegible]

रागः ॥ ॥ गुरुतीतकसातः बोयेमेनाः इतः दूरशुनविष
गीतकरुनातयावः ॥ ॥ ॥ वैवसगुत्वाः हायाचोन
वनसः वेसाय पुवासा नगुत्वाक वचवत्वाः ॥ ॥ ग्रासे
वृत्तः सीमायाः वसंतगोभनः गंधेसहयाये प्रभसिगु
वीरहनरे ॥ ॥ ॥ जेयसवमेलीः चराननजीतस्वाः आवा
उमिहो ज्वासाः होयाचोन वंपास्वाः गुः मनयातापन
सहयाय मणया प्रभुद्विगु वीरहनरे ॥ ॥ ॥ वावराणा
उकीं डरिगु मा इवपत्नीत्या नकु कोलस्तान वचवत्वाः
॥ ॥ ॥ नावत्तसमुंदमीयान को वीहात्तद्विगु वीरह
नरे ॥ ॥ ॥ ॥ भासीन गुत्वासीत्तवर्षी गोफोस्वानः कार्ति
क जानीतक गोवीरस्वानः ॥ सरडरिगुया चंद्र कु
नामकु इरिनीय कुन प्रभुद्विगु वीरहनरे ॥ ॥ ॥ ॥
मीसोर के वल्लहा याचोन जफो स्वायैय तम दुत्वातः ॥
हमंतलि सस हयाय मफया योताप्रभुद्विगु वीरहनरे ॥ ॥ ॥
नाद्य सानि कीर्त्या फागुन सभनुत्वाः होया वीर मगुमी
मन वोल्लरे ॥ ॥ ॥ रंग लीते मन अधीक गुत्वाते गुत्वा
माधीक द्विगु सरनरे ॥ ॥ ॥ ॥

राग ॥ ॥ सोवरपासावहल्लस्यगुयाहरेः ॥ १ ॥ सुगुयागुम
 रसिकयावानरेः ॥ २ ॥ सीत्तसमकटलोकद्राससकंदलरेः ॥
 मोहनीवागुरिपुयाकदमसदीलरेः ॥ ३ ॥ बालकुनजाकासया
 मीकापलेहलरेः ॥ ४ ॥ गुरुयाससगसेगुसुहुनहीलरेः ॥ ५ ॥ जी
 गुधनगीगुजनचितभरपनरेः ॥ ६ ॥ अवलायामनरधगुरेयाना
 वीवररेः ॥ ७ ॥

राग ॥ ॥ देवनवीलजीतजधीनकरनरेः ॥ १ ॥ वमागुयाचुकली
 नवालयमवातरेः ॥ २ ॥ वनवासद्योतप्रभुदिवनापवदारेः ॥ ३ ॥ रा
 मप्रभुधातजीतभयो रंगलसरेः ॥ ४ ॥ रासराजनवयाजीतहरेयात
 ॥ ५ ॥ जगुमदुकीजामदुरक्षेतयाद्येराः ॥ ६ ॥ राक्षसप्यालनजीतली
 कलानानयरेः ॥ ७ ॥ चान्दीनगीमीयासोवीनमडीत ॥ ८ ॥ हनुमान
 वयाजीतभरोसावीलरेः ॥ ९ ॥ गुग्गुननापलानारुमल्लकाजालरेः ॥
 दलगीवरावरायातवार्नकेकास्यातरेः ॥ १० ॥ लकासचोनाबेलोराम
 प्रभुनालरेः ॥ ११ ॥ जीतनापकोनाहलभगुयावयारेः ॥ १२ ॥ हाकी
 अज्ञानिनीवीनतीगायातरेः ॥ १३ ॥ रामयाकपादतसातरेयानावीव
 रेः ॥ १४ ॥

राग ॥ ॥ काररागुलप्रभुगतनयायमालरेः ॥ १ ॥ चननसपतीतवा
 थारसोवीरेः ॥ २ ॥ जोनाबयाथोसरिरुनाथकेमागीरेः ॥ ३ ॥ मचायावाप
 रियारजातयाजातरेः ॥ ४ ॥ गालसकेकेमतेहीरयानामकावीरेः ॥ ५ ॥ ल
 क्ष्मिणीवतीजीतीलीकपसुपतीचतुवीहुगारावनसरनयायरेः ॥ ६ ॥
 उगादकीमुनामागछिगुभकीयागरेथुलिमहीभकीयाग
 तरेयायमालरेः ॥ ७ ॥

राम आरती॥ ॥ आरती लागीरे. लात्त जी के. आरती लागी
रे॥ १॥ ओरे. लात्त का. हे. कोडिया. ला. करो. काहे. कर वा
तीरे॥ काहे. के तेल. पुहा. के. लात्त. वार्म. सी. एतीरे॥ २॥ यह
तन. कोडिया. ला. के. राम. नसा. पुर. वातीरे॥ प्रेम. के. तेल. पुहा.
के. ला. वार्म. सी. एतीरे॥ ३॥ आ. नसा. भा. जो. जल. हु. नये. वार. वार.
पु. आ. रे॥ मो. बा. य. ता. घन. धीरे. के. ला. मे. य. बा. सी. एतीरे॥ ४॥
सं. ज. म. ए. रे. स्वाम. की. पु. त. वा. बी. त. ला. रे॥ पं. ध. म. हे. रु. स्वाम. की. अ.
ज. हु. न. ही. आ. रे॥ ५॥ पं. ध. म. हे. रु. स्वाम. की. मो. ती. मा. य. स. पा. रे.
रे॥ सा. हि. ती. रे. कर. ने. ला. घन. जो. मन. हा. रे॥ ६॥ उ. नी. २. क. ली. या.
सं. ग. दी. ध. पा. पु. ल. वा. बी. त. ला. रे॥ मे. रु. बा. र. ही. नी. की. क. ली. ला.
ला. अ. फ. ने. कर. हो. रि. रे. ला. ला. जो. के. आ. र. ती. ला. गी. रे॥ ७॥

तीस्तागी
कार वा
॥ १ ॥ यह
मं चहा
कर वा
तोरे ॥ ३ ॥
मको अ
यस पारि
२ कलीया
कलीया
तीस्ता
तीरे ॥ ६ ॥

एग आरती ॥ ॥ जयगुरु ज्ञान को लीला: आरती डान को
॥ ॐ ॥ पुन्यपाप करवाती: श्रीगुरु श्रीमल हो: ॥ मनव
चक्रम श्वजाना चत कर पुरा हो: ॥ ब्रह्म जोती क
रवाती: मरिती हो जीवन हो ॥ १ ॥

राग आरती धना श्री ॥ ॥ आरती करिय गणेश कुमारी
: सकल भुवन में मंगल की जे: ॥ ॐ ॥ हसी वदन सी
र: चंद्र की रंगे हीर ॥ लंबो डायक दत्त मुखाये: ॥
॥ १ ॥ सकल भक्त मीली: आरती गाये: ॥ राज राजेंद्र की
मंगल की जे: ॥ २ ॥

एग आरती ॥ ॥ सीतल करके आरती कहे जा: ॥ ॐ ॥
रतन तिहातन: आपु: वीर जे: ॥ तापर बैठे: स्वाम कहै या ॥
॥ १ ॥ समलक्ष्मन: भरत तनु धन: दसरथ: कुंवर कहै
या: ॥ २ ॥ मोरम कुतमक: एकत कुंदल: ॥ कलीयध
नुक चहे जा: ॥ ३ ॥ चंद्रसखि हित वाल जल छवी: ॥
हरि के चरन चीत ले जा: ॥ ४ ॥

राग मल्लार ॥ ॥ रोम मुकुंद दिवा बरसे: दानी विदम के पवन बने लगे
नापी तो पपौ लाप्प २ करे ॥ ॐ ॥ मोम दुला पीया लड़ा री गोले: पुन की
जीयात मोरे: ॥ नाडी २ पुन मोहा परलि गये: भीजी गोतन सीर से
॥ १ ॥

राम आरतीः॥ ॥ इन नये मे नारथः न्यारि राम सो न्य
रि चले रामः॥ ॐ॥ सीतल गल कचन को ठारे दीप
करे को हो बारीः॥ मलीर गाडु को सीतल माता
उमर लहेर जन्म की सो हो राम सो न्यारि चलेः॥ १॥
बुवा थावा चीरि जीमेवा मधुने बाप क जानाः॥ ल्यो
गुग सुपारि अलेची बीरुवाः भरि मुख हे राम रज
नम की पान राम सो न्यारि चलेः॥ २॥ कची प्रल्ल
द का छनी का छे बछे नील पछेरिः॥ मागुस कल
भुवन को ठारे रघु बर हे राम रजन्म की सो रि राम
॥ ३॥ हंस की लोस की लोस की लोस कर प्रेम सजर
धुवीरः॥ तुलसी दास प्रभु जो रघु बर की हरि नृप हे
राम रः हरि नृप का लो गुग पीन राम सो न्यारि चलेः॥
॥ ४॥

राम आरती धन श्रीः॥ ॥ देवो माईवन तु सैं आई गो वालः आ
रती साधु चले वृज वालाः॥ ॐ॥ धनी के धनी सब अंग
न पठये हरि ॥ गो लोचन के तील क बनायेः॥ १॥ मोर
म भुज सीर मुरली सो हैः॥ नव कर अप को जग मो है
॥ २॥ नन्द गधडा देवन आवे हरि ॥ कान पर सपर
म गल गायेः॥ ३॥

✓ 6

3

राग आरती चिता श्रीः॥ ॥ आरती या यजी नथ वस्तुन व्या के
ना वृम कीम दुध चीन कुचायः॥ १॥ म्यावा चया चीप
लखं ह्या ननीया येः॥ मुसलया चीप गाकी पुजानं कु
चा वः॥ १॥ हावा चया चीप कली ह्य सधया वः॥ वाका
चया चीप दुर्ग सील सलु ना वः॥ २॥ लोह पुनं चंद
नन मोल सती ना वः॥ भमराया चीप ध्यानः सील सलु
ना वः॥ ३॥ जपतप या यसानम दुजी के डामः॥ जे जपतप
या यजीनः कुवी प्रीया ना वः॥ ४॥ हारे २ पीर तीन मान
सी डामः॥ जपतप ह्य ह्य गुन मो ह्ये बी या वः॥ ५॥
राग आरतीः॥ ॥ तुलसि नारायण रूप भगो भाईः तुलसि
ना एये न रूपः दाद सहे हरि २ नाम धर रहे आरतीः॥ १॥
आगे अस्तान पंचांग त मूल कीः॥ भालती त क श्री वराड की
आरतीः॥ १॥ नाना फल मुल धुप सुवास कीः॥ च हृदी गध
पडो प की आरतीः॥ २॥ अर्चिता त नु डं गजु मरिः॥
वागात हे हरिः॥ वागत सख धुनी कर आरतीः॥ ३॥ चरा
क मल की डाम गुनारिः॥ सेव कहे हरिः सेव क ही गु
रा गायेः आर तीः तुलसि नारायण रूप भगो भाईः॥
॥ ४॥

रग आरतीः॥ ॥ वीरंची केसवनाथने पाल्नाथलवासी हो
॥ ॐ ॥ सरवचक्रगडापद्म विराजेः पिताम्बर वरा माला
सिसः मनुकः आति सुन्दर सो है ॥ श्रीवक्षे हे रामः श्रीवक्षे
तिनः सो हाथेः नेपाल थल ॥ १ ॥ विचव जार मे मंडिल
वनी हैः सन मुख गह दुस हाथेः ॥ मंडिल दरिदन भेरे सो
केः नर सब पुज करायेः नेपाल ॥ २ ॥ नर सब आये भजन
कराय आरती चक्र डोलायेः ॥ भक्त हूनि नुवा गुण गा
ये नर सब हे रामः नर सब पुज करायेः नेपाल थलवासी हो
॥ ३ ॥

रग आरतीः॥ ॥ मोमतीवाही २ हो डीनरातीः ॥ ॐ ॥ जनमलीय
वसुदेव की गीहः ॥ जसो मती नाम धरायेः हो ॥ १ ॥ गाई के गो
बरः अंगानली पाईः ॥ गज मोती चोक पुरायेः ॥ २ ॥ गुन के कलस
लीयेः गज राजा नेः ॥ सबत बिदेवन आईः ॥ ३ ॥ मूर दस प्रभू क
ह्य जनम भईः ॥ अवध पुरि गुण रासिः होः डीनरातीः ॥ ४ ॥

रग आरतीः॥ ॥ दीव्ये आरती राम रे हृदि भक्ती भाव करत जो गीत प
साधनारः ॥ ॐ ॥ ये चलाधपल्ला कोतीः सचिन्ताः नरविभाव नारा
देव देव हे हरि २ धनुस आदी सीव भावनारः ॥ १ ॥ अमला कमला
पद्म वीरा जेः येत वीवासीः तिरि वासीः ॥ जये प्रकास हे राम २ सूर्य वंसी
जोग भावनारः ॥ २ ॥

लो
ला
ह
ह
हो
न
गा
हो
व
गो
स
ह
मं
ए
ला
सी

॥ गगनात्त श्रो ॥ ॥ जगत माता वी श्वरानोः सरन सर श्वर
देवी ये ॥ ॥ ॥ वे पन्न लो चनीः दुरव नो चनीः वों ना गुण क
धारिनी ॥ ॥ ॥ वी श्वर व्यापीनी वी श्वर जननी वी श्वर प्रसाधार
नी ॥ वी श्वर रूपीनी मंत्र कारिनी वागे श्वरि देवी तां स्तो ॥ २ ॥
तो हे माहे श्वरि सरन गुमारि तुमहि मा श्रीका जी गानी
तुमही कांतीनी जगत पाती तुमहा त्त वनी स्वयं प्रसा
॥ ३ ॥ सो दो नर तुमी देवी गरा सब तुमहि भये निज कारु
॥ तुमहा सर न देवी माता जल के धार धारिनी ॥ ४ ॥

राजमालतीः॥ ॥ देविमातास्तोकजननीः भगवतीनुमकालीका
॥ १ ॥ तिहवाहीनीवज्रधारणीहातखपरुओरजति॥ मदिखमड
नीरुधिरधीनीआफुहेदेवीकालीका॥ १ ॥ बालभैरवीरूपति
हारेओपरुमुन्दारिनामका॥ तत्रहेवलनत्रदेखोभक्तपालीनीका
लीका॥ २ ॥ भक्तजनकोपालीनीनुमः उग्रताररातारनी॥ रत्नीसि
हामनआफुवीराज्येः आफुहेदेवीकालीका॥ ३ ॥

॥ हाहा देविकन काकुण्डलसितलवहुदेवीवा वीरि ॥ १ ॥
 ॥ मसी धुरनेतिले काधर कित्त तदतनेहासरे ॥ अङ्ग अपरुत्रीसुत्त
 ॥ काधर देव नयलत रासये ॥ ५ ॥ दसाहेजो जनधरत सनीभय
 ॥ रत्नदेवीपाईये ॥ मसा नगोतो वीराज माल नामयित्तरे आयीरो ॥
 ॥ २ ॥ दम्बहडिमोडामोस वदजुनोकेः ले आसुरभये रासये ॥ सीहि
 ॥ यहीनीस वट्टजयनीये वरणासेवका पाईये ॥ हाहा देवीकन
 ॥ काकुण्डलसितलवहुदेवीतारनो ॥ ३ ॥

ॐ ॥ २ ॥
[...]
॥ जये रव्यरिहृदयोः स कष्टतारनी ॥
[...]

जैः ॥ २ ॥
[पुनर्लिखितः] ॥ अथैव वयस्मिन् स्थानीः स कश्चिन्तारनीति ॥
[पुनर्लिखितः] ॥ अथैव वयस्मिन् स्थानीः स कश्चिन्तारनीति ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ लान मेली कलियाः वरुण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ लान मेली कलियाः वरुण

है गुं तो मा. हास के रस लामो तीया को चया

हाल नाले तर क्षेत्रलीन नेम्य गलत समन्द माता

को वासे ॥ २॥ देवरुडोमी २ सवद कुतु प्रन ताचा

१० दे लोभः शाक शि॥ होत्वायाः सवदनं थो

दात्रः शम्भुवर्माः तायान देवपीताया कः हर्षि

नायासं वृद्धं नृथोयावः अंभुवः मतिं द्यावः देवो नृत्त
आकुरुः ॥३॥ अगता जनया गतीः नाम श्रीभगव

तीः रणसजये जीतवीहुवी ॥ जीपि नो वा न खटा

गामदी राग अथाः द्विजात्मी भजलप्येवोदुगी

11 4 11

ASHA ARCHIVES

2761

ASHA ARCHIVES





2761